ग्रहण की और सयम पालन करते हुए स० १९५० में स्वर्गवासी हुए। दूसरी पत्नी से भी एक पुत्री उत्पन्न हुई जिसका परिणय जयपुर निवासी सुजानमलजी नवलखा के साथ हुवा था।

प्राय ऐसा देखा जाता है कि भोग विलास में लिप्त व्यक्तियों की धार्मिकता की ओर प्रवृति कम रहती है, किन्तु आपका जीवन इस नियम का अपवाद था। आप भोग में अभिरुची रखते हुए धर्म में भी गहरी श्रद्धा और भक्ति रखने वाले एक विलक्षण व्यक्ति थे। जब वि० स० १९५१ में पूज्यश्री विनयचन्दजी म० का चातुर्मास जयपुर नगर में हुवा, उस समय आप भी अपने इष्ट मित्रों के साथ आचार्य श्री की सेवा में पहुचते थे। आचार्य श्री उस समय के श्रमणवर्ग में एक महान मेधावी और श्रुतधर महापुरुष समझे जाते थे। सेठ सुजानमलजी आचार्य श्री के प्रवचन सुनते और सत्सगति का लाभ उठाते। स्तवन, भजन, चौपाई आदि गाकर सुनाना उनका दैनिक कार्यक्रम था। आपकी सगीत रूचि प्रारभ से अच्छी थी और आप आचार्यश्री कजोडी-मलजी म० वादीभ केसरी कनीरामजी महाराज, तपस्वी मुनि श्री बालचन्द्रजी महाराज तथा मुनि श्री चन्दनमलजी महाराज आदि सत महापुरुषों के सम्पर्क में आते रहे और उनकी सेवा का लाभ लेते रहते थे। इस स्वर्ण सुयोग को पाकर आपकी संगीत रुचि और भी अधिक विकसित हो गई। पूज्य श्री के प्रवचनों से आपके हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा जिससे आपके जीवन ने एक नया मोड लिया, जो अत में भोग से त्याग-मार्ग की ओर अग्रसर हुवे।

आपके जीवन के ५० वे वर्ष में एक व्याधि उत्पन्न हुई। जिसके निवारणार्थ बड़े २ डाक्टर वैद्यों का उपचार किया गया पर रोग मिटने के बजाय बढ़ता ही गया। कहावत भी है—

"मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों २ दवा की"

आखिर आप सर्वथा पंगु और परावलम्बी बन गये। अंत में आपने अनाथीमुनि की तरह मन ही मन दृढ़ संकल्प कर लिया कि यदि मैं नीरोग हो जाऊँ तो पूज्य श्री विनयचन्द्रजी महाराज के सानिध्य में प्रव्रज्या धारण करूँ। इस संकल्प के थोड़े ही दिनों बाद आपकी व्याधि हवा की जैसे काफूर हो गई और आप स्वस्थ्य एवं निरोग हो गये।

आपकी इस स्वस्थता से परिवार में हर्ष का पारावार न रहा। जब आपने संयम ग्रहण के दृढ़ निश्चय को प्रकट किया तब सारा परिवार किंकर्तव्यमूढ़ हो गया। ढलती अवस्था उसपर भी रोग से क्षीण शरीर, इस तरह आपकी यह भावना पक्ष आश्चर्य पैदा करने वाली थी। कस्तूरचन्दजी पटवी आपके बड़े साथी थे और सांसारिक क्षेत्र में पथप्रदर्शन करने वाले थे। आयु लगभग १५ वर्ष की थी पर सेठजी के विचार सुन कर स्वयं भी संसार छोड़ने को उद्यत हो गये। आश्विन शुक्ला १३ स० १९५१ में पूज्य श्री विनयचन्द्रजी महाराज के कर कमलों द्वारा जयपुर शहर के बाहर बड़ों के बाग में आप दोनों की दीक्षाविधि सानन्द सम्पन्न हुई। विशेषता यह थी कि दीक्षा-जुलूस में शिरकत करने वाले नगर के चार प्रमुख सेठ थे जिनके नाम-सौभाग्यमलजी ढढ्ढा अजमेर

चादमलजी मुणोत अजमेर, उम्मेदमलजी लोढा अजमेर, तथा नथमलजी गोलेछा (भूतपूर्व दीवान जयपुर) ।

कविकुलभूषण मुनि श्री सुजानमलजी म० बहुकुटम्बी और सम्पत्तिशाली थे। अत सर्व साधारण के लिए उनका दीक्षित होना एक आश्चर्य जनक घटना थी आप स्वभाव से बडे भद्र और भावुक थे सेवा का गुण भी आप मे अनुपम था। अवस्था विशेष और अभीजात कुल में जन्म लेकर भी आप दूसरे सतों के कार्य को पूरा करने में हमेशा तत्पर रहते थे। आप प्रतिवर्ष पर्यूपण-पर्व में अष्टाह्निका तप करते थे। श्रमण बनकर योग साधना में पूर्ण रूप से तत्पर और तल्लीन बन गये।

काव्यनिर्माण की प्रतिभा और रूचि आपमें आरभ से ही थी, जो कि जीवन में दुर्लभ वस्तु मानी जाती है। जैसे कि —

नरत्व दुर्लभ लोके, विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्व दुर्लभ तत्र, शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा॥

दीक्षा ग्रहण के पश्चात् प्रतिदिन शास्त्रवाचन और नव-पद्य निर्माण आपके जीवन का ध्येय बन गया। यही कारण है कि आपके रचे हुए लगभग चारसौ पद्यों का एक अच्छा सग्रह आज उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त चौवीसी, बीसी कवित्त और अन्य कितने ही फुटकर रचनाए आपके भावुक हृदय और काव्य निर्माण कला की परिचायिका है।

आपकी पद्यावली सगीतज्ञों के लिए बहुत ही उपयोगी और काम की वस्तु है। यह आध्यात्मिकता से परिपूर्ण और जीवन को उन्नत बनाने म सहायक है। काव्य की भाषा सस्कृत प्रधान

मारवाड़ी है। भाव बहुत सुन्दर और सरस हैं। आपने अपने पद्यों में प्रायः आत्महितैषी सभी भावों का चित्रण किया है तथा आत्मा का पतन की ओर लेजाने वाले भावों से भी सावधान और सचेत किया है। आपके प्रत्येक पद्य में आत्मकल्याण और जीवन सुधार का अनुपम संदेश भरा पड़ा है। वो मधुर भावों और सरस शब्दों से ओत प्रोत है। जैसे संसार में रहते हुवे कंकरों में से हीरे निकालने में निपुण बन गये थे वैसे ही साधु जीवन में आकर भी सांसारिक कूड़ा करकट में से काम की वस्तु निकालने में भी सफल हो गये। यद्यपि आपके द्वारा किसी महा-काव्य का प्रणयन नहीं हुआ किन्तु फुटकर रूप में आपने जिन पद्यों का निर्माण किया है वे वस्तुतः बड़े काम और उपकार के हैं।

ऐसी अवस्था में रक्त प्रवाह ठंडा पड़ जाता है, उत्साह उमंग फीके पड़ जाते हैं, एवं कार्य शक्ति धीमी पड़ जाती है। इस परिणत या ढलते वय में विवेक के साथ साधुता के कंटीले पथ पर आरूढ़ होकर शूलों से फूलों का सजन करना एवं गुण सुरभि से जन जीवन को चिरकाल के लिये सुरभित बना देना, कोई साधारण आश्चर्य की बात नहीं है।

विक्रम संवत् १६६८ के फाल्गुन शुक्ला में १० वर्ष पर्यन्त निर्मल संयम पालते हुवे स्व-आत्म धारा से तृषित—मुमुक्षुओं को शीतलता प्रदान करते हुवे आप जयपुर में ही स्वर्गवासी बने।

सं० १६५८ से आचार्य श्री विनयचन्द्रजी महाराज सम्प्रदाय

जयपुर नगर में विराजमान हो गये तो आप भी उनकी सेवा में रह कर प्रमोद के साथ सेवा सुश्रूषा का लाभ लेते रहे। इससे पहिले आपने गुरुवर्य की सेवा में जोधपुर, नागोर, पीपाड़, अजमेर आदि क्षेत्रों में वर्षावास किये थे।

आचार्य श्री विनयचन्द्रजी महाराज जब जयपुर में स्थिर-वास विराजमान थे उस समय यहां पर एक श्रावकों की भजनमण्डली थी, जो नित्य सायंकाल यहाँ भजन बोला करते थे, जिनमें प्रमुख श्रावक केसरीमलजी मूसल व उनके सुपुत्र भँवरलालजी मूसल, रतनलालजी दफतरी, मिसरीमलजी छाजेड, कपूरचन्दजी बाठीया, मगनमलजी कोठारी आदि संगीत के विशेष रसिक थे। कवि श्री सुजानमलजी म० नई नई चालों में नये २ स्तवन बनाकर भजन मण्डली को दिया करते थे। कइ भजन मगनमलजी कोठारी के साथ भी बनाये हुवे पाये जाते हैं जहां अन्त मे "मगन सुजान" ऐसा मिलता है। संगीत में एक बहुत बड़ा आकर्षण होता है मनुष्य तो क्या? पशु व पक्षी भी आकर्षित हो जाते हैं। भगवान के गुणानुवाद करते भक्त भक्तिरस में तन्मय होकर भगवान के गुण ग्राम करते हुवे भक्त, भक्त नहीं रहता, किन्तु भजनीयस्वरुप बनजाता है।

लाल भवन
जयपुर
पार्श्वनाथ जयति २०१६

लक्ष्मीचन्द
मुनि

विरक्त रूप म श्री किस्तूरचन्दजी पटनी   विरक्त रूप म श्री सुजानमलजी सेठ (सेठीया)
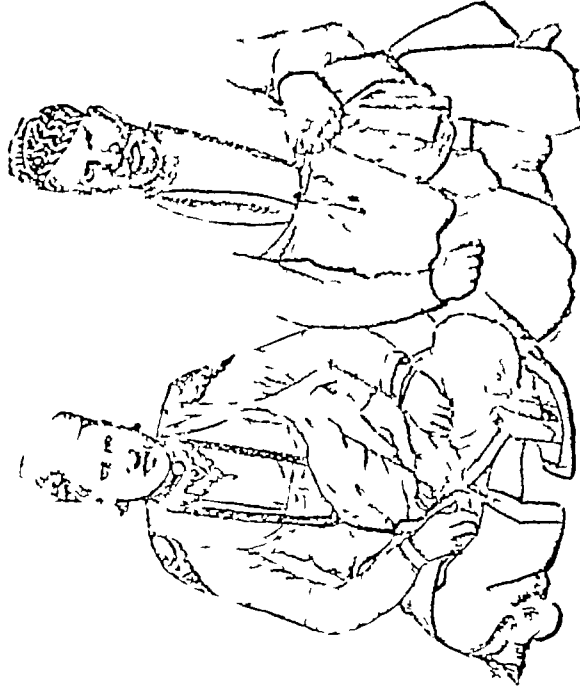
प्रकाशकीय

सुजान-पद-सुमन-वाटिका स्वर्गीय कविकुलभूषण मुनि श्री सुजानमलजी महाराज द्वारा रचित पदों का संग्रह है।

सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से इसका प्रकाशन करते हुए अति हर्ष हो रहा है। पदों की पाण्डुलिपि लगभग १५ वर्ष पूर्व ही तैय्यार करवाली गई थी जिसमें से जिनेन्द्र गुण स्तवनावली नाम से सं० २००७ में चांदमलजी हरकचन्द जी कोठारी पीपाड़ वालों की ओर से प्रकाशित होचुकी है। तथा चौबीसी व बीसी को भी अलग से श्री जिनेन्द्र स्तवन सुमन माला के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है। जिसके प्रकाशन में द्रव्य सहायता मोहनलालजी अमरचन्दजी सेठ से प्राप्त हुई है। श्री मोहनलालजी सेठ संसार पक्ष में मुनिश्री के भाई थे। पाठक इसको अब सुगमतासे पठन पाठन कर सकेंगे।

प्रकाशन का कार्य सं० २०१५ के आसोज से चालू कर दिया गया था। परन्तु कई प्रकार की अड़चनों के आने से प्रकाशन की गति धीमी रही। पुस्तक में शुद्धता का खास ध्यान रखते हुए भी कई अशुद्धियां रह गई हैं जिसका शुद्धि पत्र अलग से दिया जा रहा है।

पुस्तक की पाण्डुलिपि बनाने में श्री दुर्गामोलचन्दजी म०, श्री चांदमलजी करणावट (भूतपूर्व प्रधानाध्यापक श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ़) श्री मुनिन्द्र कुमारजी जैन आदि का सह

योग प्राप्त हुआ है। प्रूफ संशोधन में श्री प्रकाशचन्द्र जी बोथरा आदि का सहयोग प्राप्त हुआ है।

पुस्तक के प्रकाशन में श्रीमान **पूनमचन्दजी हरीश्चन्द्रजी** वड़ेर जयपुर निवासी द्वारा द्रव्य सहायता प्राप्त हुई है। आप एक उदार मना सहृदय सज्जन हैं। गत वर्ष जून ५६ में मुनि श्री श्री चन्दजी म० की दीक्षा प्रसंग पर भी आपकी ओर से ही लगभग ५०० ०) रुपया व्यय हुआ था।

अन्त में जिन ७ महानुभावों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग प्राप्त हुवा है, मण्डल सबका आभार प्रगट करते हुए धन्यवाद देता है।

जिनवाणी कार्यालय
जयपुर ११६०

मन्त्री की ओरसे—
भवरलाल बोथरा
व्यवस्थापक जिनवाणी

सुज्ञान-पद सुमन वाटिका

अनुक्रमणिका

औपदेशिक विभाग

शुद्धि पत्र

पृ स	स्तवन स	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१	११	अरह	अर
२	२	८	शाति	शाति शाति
३	३	३	वदन	वदत
६	६	१	राम	राय
६	१२	५	जनस	जन
१०	१२	६	मुख	सुख
१०	१३	६	इन्द्रभुइ	इन्द्रभुइ पै
११	१३	३	अगे	आगे
११	१३	२६	अदभुद	अद्भुत
१३	१४	२	में	मैं
१४	१६	१५	सापा बधाया	साया बधाया
१६	१६	१२	दध	दग्ध
१८	२०	७	सहुकारा	सहकारा
१८	२०	१२	भया	मया
१८	२०	१३	सैन	सैज
१६	२०	३	जब	जग
१६	२०	१८	मधुर उन्चारा	मधुर सुरगीत उच्चारा

१०	२०	६	वक्र	वक्त
२०	२०	११	सू करे	सू नेह करे
२	१०	१६	विनयचन्द	विनयचन्दजी
२५	२४	३	भाखो	माखो
२५	२४	४	अष्टाधिक	अष्टांदश
२५	२५	६	तारे	तोरे
२६	२५	५	मम	मन
२६	२५	६	जगवान्द	जगदानन्द
२७	२७	८	वामानन्द	वामानन्दन
२८	२	६	साचो मेम	सांचो प्रेम
२८	३०	४	समकित भाख्यो	समकित रस भाख्यो
३१	३२	१२	करे	करो
३५	३८	६	करण	करम
३०	४०	१७	मांह	मांही
३८	४१	अंतिम	अराइये	अराइये
३६	४२	१	अरम्भ	आरम्भ
४१	४३	११	किलोल	किलोल
४२	४४	१	चारित्रधारी	चारित्र धारी
४२	४४	१३	सजन	सज्जन
४६	५२	८	पद	पद
५०	५४	२	भवत्	भवत्
५१	५४	२	धर	धर
५१	५५	५	तरची	तरची

५१	५५	६	वहित	रहित
५२	५५	७	जनु	जन
५४	५६	१	पैछाण	पैछरण
५४	५६	४	ताने	ताणे
५४	५६	अंतिम	अवधाना	अवघाना
५५	५७	६	पयं ?	पयंपे
५५	५८	१	सयोशरण	समोसरण
५५	५८	३	वहुत	वहतु
५६	५९	५	पचेढ्रिय	पचेन्द्रिय
५६	५९	८	जिनपद्द	जिनपद
५६	६०	४	होगर	होकर
५६	६०	७	छाड घन	छाड गये घन
५८	६२	२	घरो	धारो
६०	६५	अतिम	भय	भव
६०	६६	२	जण	जाण
६०	६६	६	दया	दयो
६०	६६	१४	सिखाई	सखाई
६०	६६	१६	भयंकर	भग कर
६१	६६	३	अवधाई	अवघाई
६१	६७	१४	कैसो	कैसे
६२	६८	२	अनुभाय	अनुप्रास
६५	७०	७	छिनकाव	छिटकाव
६५	७०	१३	चादरेढा के	[illegible]र ढाके

८५	८८	४	वह्ना	वह्न
८५	८८	१६	लब्धे	लुब्धे
८५	८८	अन्तिम	"सुजाण" मन	सुजाण कहै मन
८७	९०	११	कलक	कलक
८८	९१	७	नैणा।	नैणा २
८८	९१	६	मचि	मची
८९	९२	१४	अवघाई	अवघाई
८९	९२	१९	धीरा तजे	धीरा न तजे
९०	९२	८	ह्वन	ह्वै न
९०	९२	२८	शुद्धात मलिव	शुद्धातम लिव
९०	९२	३२	दिढताई	दृढताई
९१	९३	११	निजूरया	निज्रया
९२	९३	२१	वहोश	वेहोश
९२	९३	७	नहीं तो	नहीं तर तो
९२	९३	८	मूढ विसवास	मूढ धुरे विसवास
९२	९३	१४	वेगुने	वेगुन्हे
९२	९३	३६	मार	मारे
९३	९३	४	गवा	गया
९३	९४	६	सुता	सूता
९५	९४	७	लिपाते	निपाते
९५	९५	४	पारावार नर्नी	जिनका पारावार नहीं
९५	९५	५	साडन	ताड़न

१०४	१०५	२	तो	ते
१०४	१०५	३	घिसरी	विसरी
१०५	१०७	६	सुमणा	सुगणा
१०६	१०७	८	जीवरा	जियरा
१०७	१०७	६	जिय जोय	जिय रा जोय
१०७	१०८	४	अमल	अनल
१०८	१०६	५	समझई	समझ
१०८	१०६	अन्तिम	ज्योही	जो ही
११०	१११	६	अवधान	अवघान
११०	१११	१८	नर ढ	नर मूढ़
११२	११३	१४	घेर	घेर
११५	११६	७	समझ्यो	समझो
११५	११६	११	समकित	शुद्ध समकित
११७	११८	१४	यह	एह
११६	१२१	२	जानोरे	जानो
१२०	१२१	अंतिम	चूको	चूके
१२०	१२२	४	बूढा	वूढा
१२०	१२२	६	जाता	जात
१२२	१२५	४	गछ	गल
१२३	१२५	१३	सुगणनर	सुगणनरा
१२४	१२६	१८	ऐमी	ऐसी
१२५	१२६	७	लग्गो	लागो
१२५	१२६	६	सठार	मठार

१२५	१२६	अन्तिम	मेल्यो	मेल्यो
१२७	१२८	१४	भर	भरा
१२७	१२८	१८	गोड	गोडे
१२८	१२६	११	रयारो	म्यारी
१३०	१३१	२	मेवा	मेवा
१३२	१३२	७	विशामम	वैसामर
१३२	१३२	६	इसास काते हैं	इसामस काते हैं रे
१३२	१३३	११	सत	सम्त
१३४	१३३	४	पिट्टी मस	पिट्टी मंस
१३४	१३३	२२	बिसारिबे	बिसरबे
१३५	१३४	८	पावडुमी	पावमी
१३५	१३४	१	बारा	पारो
१३६	१३४	१	बावस	सावना
१३७	१३४	१६	अमितस्तर	अमिस्तर
१३८	१३४	१०	मब	मत
१३६	१३५	११	मिलाभो रे	मिलाभा
१४१	१३०	०	धर्म	अधर्म
१४३	१३६	४	मम मक	मम लक
१४४	१४१	८	भयापाह रे	भयापाह
१४१	१४४	१	मम्हां०	म्हां०
१४१	१४४	१५	रावस	रावि
१४२	१४५	५	न तप सु भृकुटि	तपत सु भृकुटि

१५३	१४९	७	कोच्यो	कोप्यो
१५५	१४९	१२	"सुजाण कहे"	सुजाण
१५५	१४९	१२	पर	पर भव
१५६	१५०	११	तीड़े	तोड़े
१५७	१५१	१	ट	दो
१५९	१५२	४	छोढ	छोड़
१६१	१५३	५	सयरा	सखरा
१६२	१५४	६	तिर्यञ्ध	तिर्यञ्च
१६३	१५५	३	द्वारिजी	द्वारीजी
१६३	१५५	४	धर्न	धर्म
१६३	१५५	६	मारी	मारी जी
१६४	१५६	१	सुगग	सुभग
१६४	१५६	१६	मनोरना	मनोरमा
१६६	१५६	१	उमेंगायो	उमगायो
१६६	१५६	१०	उत्तरी	उतरी
१६७	१५६	८	कर घरी	करी घर
१७०	१५६	५	नफार	नफर
१७०	१५६	८	ला	ना
१७०	१५६	१५	भपत	भूपत
१७०	१५६	१८	झु उ	झू ठ
१७२	१५७	८	लोका	लोक
१७२	१५७	१	चित्र	चित्त

१६०	१६४	१५	प्रभावादि	प्रभवादि
१६६	१६५	२	नियल	निलय
१६१	१६५	६	परम्यो	परएयो
१६१	१६५	१८	सरध	माध
१६१	१६५	२२	ज्योत	ज्योत्

नोट—पुस्तक में काना, मात्रा, ह्रस्व, दीर्घ, अनुस्वार छपने से अथवा प्रुफ संशोधन में रह गया हो तो सुज्ञ पाठक उन्हें ठीक करके पढ़े। —श्री भवरलाल बोथरा

———

१

चौबीसी स्तवन

तर्ज—"सिद्ध चक्र पद वन्दो रे भविजन सिद्ध चक्र पद वन्दो।"

चतुर्वीस जिन गाओ रे सुगणा, चतुर्वीस जिन गाओ ।।आंकड़ी।।
नाम जप्यां थी निशदिन तेहमो सुकृत-फल प्रकटाओ ।। रे सुगणा
चतु ।।१।।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन सुमति सुमत बरताओ।
पद्म सुपारस चन्द्र प्रभु के, चरण कमल चित लाओ ।। रे सुगणा
चतु० ।।२।।

सुविधि शीतल श्रेयांस, वासुपूज्य विमल अनन्त धर्म ध्याओ।
शांतिनाथ नामिथ बरताओ मंगल रूप मनाओ ।। रे सुगणा
चतु० ।।३।।

कुन्थु अरह मल्ली, मुनिसुव्रत नमि जिन शीश नमाओ।
रिष्ट नेमि पार्श्व महावीर श्री शासन रंग बधाओ ।। रे सुगणा
चतु० ।।४।।

अनन्त चौबीसी, वर्तमान जिन सह गणधर शिर नाओ।
शासन पे भे साधु साध्वी वन्दो त्रिभेद रचाओ ।। रे सुगणा
चतु० ।।५।।

श्री जिन सेवा शुभ मन सारो, जो तुम विरद बधाओ।
बार बार ना मिलन दुर्लभ नर भव केरो दाओ ।। रे सुगणा
चतु ।।६।।

जोधपुर सम सपत चुम्मालन शांति-सुधा बरसाओ।
ज्ञान-शील-तप भाव मान पद चार मनोरथ पाओ ।। रे सुगणा
चतु० ।।७।।

मगनानन्द-'सुजान' तिहारो, शरण गह्यो धर चाव्रो ।
शिव वर कमला, अविचल मपत, महर करी वगमाओ ।। रे सुगणा
चतु० ।।८।।

२

चौवीसी स्तवन

चाल—जिला जी, देखो थारा डेरा री ।

प्रभुजी ऋषभ जिनेश्वर, जग-परमेश्वर, ध्यावा हो सुखकारी जिनराज
अजित, संभव, अभिनन्दन रा, गुण गावा हो, दयाल ।।१।।
प्रभुजी सुमति सुमत, मतिसागर, ज्ञान उजागर हो, सुख० जिन० ।
पद्म, सुपारस, गुणमणि, गुणरत्नाकर हो, दयाल ।।२।।
प्रभुजी चन्द, सुविधि, शीतल, शशि आनन मोहे हो, सुख० जिन० ।
श्री श्रेयास, वासुपूज्य मन मोहे हो, दयाल ।।३।।
प्रभुजी विमल, अनन्त, धर्म, शाति अरताई हो, सुख० जिन० ।
कुन्थु, अरह, मल्लि, मुनिसुव्रत, शिव पाई हो, दयाल ।।४।।
प्रभुजी नमी जिनन्द, अरिष्ट नेमि वदामि हो, सुखकारी जिन० ।
श्री पारस, महावीरजी शासन स्वामी हो, दयाल ।।५।।
प्रभुजी तीन भुवन मे रूप, अनुपम पाया हो, सुखकारी जिनराज ।
इन्द्र, नरेन्द्र वृन्द पद-सेव उमाया हो, दयाल ।।६।।
प्रभुजी चतुरवीस तीर्थंकर, जगपतिराया हो, सुखकारी जिनराज ।
भव-भव 'मगन-सुजाण' शरण तव आया हो, दयाल ।।७।।

३

चौबीसी स्तवन

राग—आसावरी

चतुरवीस जिन वन्दो रे भविजन ! चतुरवीस जिन वन्दो ।
प्रभु-वंदन पाप निकन्दो रे भविजन ! चतुरवीस जिन वन्दो ॥ टेर ॥
ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन सुमति शरण सुखकन्दो ।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु के चरण नमे सुर इन्दो ॥१॥ रे भवि०
सुविधि शीतल, श्रेयांस वासुपूज्यजी काटो भव दुख फन्दो ।
विमल अनन्त धर्मनाथ शान्तिजी रो नाम लियां आनन्दो ॥२॥
रे भविजन
कुन्थु, अरह मल्ली, मुनिसुव्रत नमी जिन देव जिनन्दो ।
रिष्ट नेमि पारस, महावीरजी, शासन-नाथ नमन्दो ॥३॥ रे भवि०
चौबीसों जिनवर जयकारी, प्रथम् पद अरविन्दो ।
'सुभाग' शिव-सुखदायक प्रभुनो, निशदिन जाप जपन्दो ॥४॥ रे भ०

४

चौबीसी स्तवन

चाल—ठाकुर थारे मिलने की छोटी सी जगनाथ पुरी में ।
म्हाने प्यारा लागोजी, म्हाने प्यारा लागोजी ।

ये चतुरवीस जिनराज प्रभो, जगदानन्द कारी जी ॥ म्हांकाजी ॥
ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति सुमत दो देव ।
पद्म सुपारस, चन्द प्रभुजी, करां सुरंगी सेव ॥ १ ॥ म्हाने

सुविधि, शीतल, श्रेयास, वासुपूज्य, निजगुण नवनिधि दाता।
विमल, अनन्त, धर्मनाथ शातिजी, वरताई सुखसाता ॥२॥ म्हाने०
कुन्थु अरह, मल्ली, मुनिसुव्रतजी, मोक्ष पदारथ पाया।
नमिय, नेमि, पार्श्व, महावीरजी, शासननाथ सुहाया ॥३॥ म्हाने०
गणधर गण सहु सत शिरोमणि, वर्तमान जिनराया।
चरण 'सुजाण' नमे निशिवासर, हरख २ गुण गाया ॥४॥ म्हाने०

५

अथ पच परमेष्ठी स्तवन

चाल—गाल की—"रगमहला की कू ची लाव"

सत्पुरुषा को शरणो झाल, अघमोचन तारक रिछपाल ॥ टेर ॥
अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व सन्त रत्नों की माल ॥१॥
केवल वरनाणी परमातम, अरिहन्तादिक दीन दयाल ॥२॥ सत०
सिद्ध सकल गुण, कारज सिद्धा, जन्म मरण दुख दीना टाल ॥३॥
श्री आचारज गणधर नायक, उपाध्याय पाठक सुविशाल ॥४॥ सत०
श्रमण श्रमणी, श्रमणोपासक, दृढ समदृष्टि नयन निहाल॥५॥सत०
पच परमेष्ठी मत्र अमोलक, जपते तन मन होय खुशाल ॥६॥सत०
आतमरामी जगदानन्द के, चरण सुजाण"नमै रग लाल ॥७॥सत०

६

श्री नवपद महिमा

दोहा—नवपद मंगलकर गुणो, भवदुख निवारण नाम ।
भक्ति भाव साथ सू, प्रकटे सुख अभिराम ॥

चाल—आवजो श्री—"एकबार सुन मन्त के साथा एकबार सुन मन्त क साथा । आगे की आगे गई अब लोभ मेरा जाता ।।

श्री नवकार जपो भाई रे श्री नवकार जपो भाई ।
पंच परमेष्ठी नाम मंत्र यह भव भव सुखदाई ।। श्री०नवकारजी॥
सार पंचपरम मंगलिक माला चित्त को अघजाई ।
संकट-चूरण वांछित-पूरण चीज मिले चाई ।।१।। श्री नवकार
चौदह पूरव ना सार शिरोमणि आगम बरणाई ।
नव-निधान सम नवपद ध्याना कमी न रहे कांई ।।२।। श्री नवकार
अड़सठ वर्ण अधिक आनन्दकारी शुभ चित सुमराई ।
निरुपम सू नवकार जपंता, प्रकटे प्रभुताई ।।३।। श्री नवकार
जलत युगल अहि अघ पारस प्रभु कमठ मान हाई ।
नवकार सुनाय कियो धरणीधर पदमावती पाई ।।४।। श्री नवकार
तेज तमस जोगी मृत मूक्यो, शिव कुंवर मंत्र सहाई ।
पड़्यो न भार जोगी ने गेरयो सोवन पोरसो सिधगाई ।।५।। श्री०
श्री पाल कुष्ठ हर कर तन कीनो कनक बरण मांई ।
राज ऋद्धि, सुख-संपद लीना, नवपद प्रकटाई ।।६।। श्री नवकार
भरत सेठ घर किंकर सुनिये नवकार टेक ठाई ।
सफल पाठ शुभ सेठ सिखायो वधु सुत जन्म्यो भाई ।।७।। श्री

राम महाबल लुब्ध खिनोरे, नागम मरयादे ।
नवकार प्रभावे, देव दुग्ग टलियो जिन दत्त यश छाई ॥८॥ श्री०
कृष्ण भुजगम घट में घाल्यो, श्रीमति के तांई ।
नवकार सुमर कर गेरयो घट में, पुष्पमाल पाई ॥६॥ श्री नवकार०
शूली चोर लख सेठ मत्र पद, दीनो मतलाई ।
ताणु ताणु न जानू, वचन प्रीत धर, देव थयो ध्याई ॥१०॥ श्री०
"सुजाण" महिमा मत्र तणी कछु, पारावार नाई ।
पूज्य विनयचन्द्रजी परसादे, यतकिंचित् गाई ॥११॥ श्री नवकार०

७

राग—वरवो

आदि नमु श्री आदि जिनदा, काटो भव दुःख फंदा ॥
नाभिराय मोरादेवी के नदा, ऋषभदेव जिन चदा ॥१॥ आ०
वनिता नगरी में अवतरिया, कुल इक्ष्वाक दिनदा ।
धनुष पाच से ऊँची काया, कंचन वरण दिपदा ॥२॥ आ०
चौरासी लाख पूरव थित आयु, वृषभ लछन सुखकंदा ।
आदि धर्म दातार तीर्थंकर, केवल नाण धरंदा ॥३॥ आ०
प्रथम सुगति मेली निज जननी, भरतादिक फरजंदा ।
ब्राह्मी सु दरी वे पुत्री तारी, तारया सहु कुल वृ दा ॥४॥ आ०
भव दुख विपत विडारण कारण, आदमबाबा को सुजस थुणंदा ।
'सुजाण' प्रभु पद सेवन करता, वरते परम आनदा ॥५॥ आ०

८

चाल—तन का तनिक भरोसा नाहीं किस पर करत गुमाना रे।

पद्म प्रभु पद ध्यावन में, तन मन वच लगन लगाना रे।
हो लगाना, लगाना, लगाना रे ॥ पद्म० ॥ आंकणी ॥
ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यादिक शुद्धातम सरूप समाना रे ॥१॥ पद्म
श्रीधर तात सुसीमा रानी के, अंगजात जिन ध्याना रे।
नगर कोसंबी में अवतरिया, लांछन पद्म कमल कहाना रे।२॥ पद्म०
तीस लाख पूरब थिति जानो ढाई सौ धनुष देह प्रमाना रे।
रक्त वरण सोहे मन मोहे, महिमा मेरु समाना रे।३॥ पद्म
झूठी काया अरु झूठी माया, झूठा जग जंजाला रे।
अन्तक ऐसा नाश करे कबू आखिर एक दिन जाना रे।४। पद्म०
प्रभु ध्याने शिव प्रभुता प्रगटे आतम प्रबोध जगाना रे।
'सुजान'शिव पददायकनायक,जानक यहां जिनवर ध्याना रे॥५॥पद्म०

९

राग—धमाली

सुविधि जिन शुभ मति दो दातार, शुभ मति दो दातार।
अनादिकाल से कुबुद्धि फैली है, इसको हर करतार। सु ॥१॥
सुग्रीव राय रानी रमा के नन्द सुगुण सिणगार।
काकंदी नगरी में जनमे वरत्या मंगलाचार ॥ सु० ॥२॥

दोय लाख पूरब थिति पाई, सेत वरण सुखकार ।
सौ धनुष तनमान मनोगम, लंछन मगर उदार ॥ सु० ॥३॥
यत धरम सेवन करवे को, अवसर पायो सार ।
रंग में भंग करै या दुरमत, जमे न माचो तार ॥ सु० ॥४॥
इनकुं घेर दूर आतम गुण, अध्यातम अधिकार ।
'सुजाण' दुरमत दूर करण कूं, पुष्पदन्त आधार ॥ सु० ॥५॥

—

१०

राग—केदारा

धर मन धरम जिन को ध्यान ॥ टेर ॥
धरम जिन पद सेवो मन वच, सुध समकित पहिचान ॥ धर० ॥१॥
सुव्रतादे जननी जायो, भानु नृप कुल भान ।
रत्नपुरी रलियायत जनमे, गुण मणि सिंधु समान ॥ धर० ॥२॥
धनुष पैंतालीस उर्ध्व अनुपम काया कचनवान ।
दस लाख वत्सर थित ताकी, वज्र लंछन भगवान ॥ धर० ॥३॥
आतमगुण पर्याय ओलख, ज्ञान जतन बुध आन ।
सत दत ब्रह्म अकिंचन व्रत कर, पचाश्रव पचखान ॥ धर० ॥४॥
इंद्रिय वशकर विषय निवारो, जोग चपल थिर ठान ।
या विध ध्यान 'सुजान' लगे तो, निश्चय हो कल्यान ॥ धर० ॥५॥

—

११

राग—प०

चाल—चन्द्र छैल छबीले मथुरा पर घर गमन न कीजे रे।

कुंथुनाथ जिनराज लाज रख मैं तुम सरण गही सो गही रे ॥टेर॥
और ठोर मम मूल न लागे,तुम पद भीत ठही सो ठही रे ॥कुं० ॥१॥
सूर राय श्री देवी नंदन पाप निकंदन हो तुम ही रे।
गजपुर जनम लियो जगदीश्वर,कनक वरण जिन पाव रही रेकुं०॥२॥
सहस पिचाणु बरस थयी थित वंश इक्ष्वाक विख्यात सही रे।
कर्म मान पैंतीस धनुष तन चिन्ह छाग पद रेख सही रे ॥कुं० ॥३॥
मैं अति कुर कपट को कूवो, कवे मुह बोल सकूं म सही रे।
तुम जो विरद विचारो जोवो तो हम काज सरे सब ही र ॥कुं०॥४॥
चाकर चरण गुलाम गिणी ने पातक पूर हरो अब ही रे।
साहिब सफल मिल्यो प्रभु तुम सो 'सुगन' आशा सफल भई रे ॥
कुं० ॥५॥

१२

चाल—जिन गज साहे मोतियन की माल।

वीर प्रभु शरण मैं तोरी आयो ॥ वीर० ॥ टेर ॥
सिद्धारथ सुत मात त्रिशला नन्दन त्रिशलाके गयी जायो ॥ वीर ॥१॥
क्षत्रिय कुण्ड नगर के माँहि, सुजस सुरंगो छायो।
इन्द्रादिक जनम महोच्छव आये गोरयां मंगल गायो ॥ वीर० ॥२॥

सात हाथ तन उर्ध्व अनूपम, बहोत्तर वर्ष आयु पायो ।
कनक वरण तन सुन्दर सोहि, हरि लंछन मन भायो ॥ वीर० ॥३॥
भव दुख भ्रमण सदा भय भीनो, तुम पद जीव छिपायो ।
शरणागत की सब कुल राखे, तू प्रभु त्रिभुवन रायो ॥ वीर० ॥४॥
शासननाथ सहाय कर मेरी, मैं तुम शरण उमायो ।
समण नाण 'सुजाण' चरण गुण, दो शिव सुख फल पायो ॥ वीर० ॥५॥

१३

श्री गौतम स्वामी का रास

दोहा—वीर नमूं शासन धणी, तास चरण चित लाय ।
श्री गोतम गुण गावसूं, तन मन ध्यान लगाय ॥

छन्द भुजङ्गी

चाल—सेवो पास शंखेश्वरो मन शुद्धे ।

मगध सुदेश गुब्बर ग्राम जाणो, तात वसुभुति मा मही* बखाणो ।
तनो कुक्षि जात गोतम विख्यात, श्री इन्द्रभुइ प्रणम प्रभात ॥१॥
सकल वेद विद्या म पारगामी, तेहने पंडित नमें सीसनामी ।
एकदा गोतम यज्ञ होम रचात ॥ श्री० ॥२॥
तिहां प्रभू वीर विचरत आया, भवि जना देख बहु हर्ष पाया ।
सुरेन्द्रादि समवसरण मंडात ॥ श्री० ॥३।

---

* पृथ्वी माता ।

देवना विमान रयाकंव आवे गोतम मन देख अति ही पोमावे ।
देखो ये यज्ञ सोभा अमर आवे ॥ श्री ॥४॥
यज्ञ सुर संघ समवसरण पैठा इन्द्रभुइ भयो अमरष बैठा ।
यज्ञ तज देव मूढ़ किहां आवे । श्री ॥५॥
एतले देव दुन्दुभी नाद बाजे आने ए इन्द्रजालियो कोन गाजे ।
अब ही आज कर आई हटावे ॥ श्री ॥६॥
मान गजारूढ आई गोतम आव्या पांच से शिष्य सहु संग लाव्या ।
शिष्य विरुदावली सम्मुख गावे ॥ श्री ॥७॥
सिंहासन रत्न जिनराज राजे समोसरण रूप आडम्बर छाजे ।
भानु तेज देखे गोतम मुरझावे ॥ श्री ॥८॥
मद गल मे अनु दिव्य इन्दु होवे केम जिनन्द समोसरण सोहे ।
छत्र त्रय चामर हरिके करत छावे ॥ श्री ॥९॥
समोसरण सोपान आय चढ़िया सुर नर सभा सोहे चित्र मंडित ।
गोतम प्रभू पेख आश्चर्य पावे ॥ श्री० ॥१०॥
मधन क्षणमात्र प्रभू रूप भागे इन्द्र पिया साथ राग सर्व भागे ।
अहो अचरज रंग रूप अपावे ॥ श्री ॥११॥
ब्रह्मा न विष्णु न महेश माया एतो कोई होय जिन देव राया ।
गोतम इसे नाम बोले भगवान ॥ श्री ॥१२॥
प्रभुने संदेह जो सहुउत्तर दीनो, गोतम स्वशिष्य संग चारित्र× लीनो ।
अग्निभुति आदि सहु समझाव ॥ श्री ॥१३॥
प्रभु त्रिपद गोतम ने सुणाया, तामते चउदे पूरव रचाया ।

---

* छत्र ।   × चारित्र ।

गोतम स्वामी तणो जग जस छाय ॥ श्री० ॥१४॥
सुन्दराकार सप्त हस्त देह दीपे, जाणे सुर नरा तणा रूप जीपे।
प्रश्न पूछ ज्ञान रा कोप भराय ॥ श्री० ॥१५॥
चउनाण चउदे पूर्व धार धीरा, लब्धि भंडार गहन गुण गभीरा।
छट्ठ तप गोतम श्रमण विख्यात ॥ श्री० ॥१६॥
देव श्रमण बोधन गोतम पधात, पाछे वीर पहुँचा मोक्ष थान।
वीर निर्वाण गोतम सुणात ॥ श्री० ॥१७।
गोतम मोह वश विलापान कीधा, हे प्रभू! मो भणी दगा पेम दीधा।
स्याराम इण विरिया दूर कमात। श्री० ॥१८॥
वे तो वीतराग तू मोह परिया, मोह छाडी केवल ले निचरिया।
घणा जीव तारी सिद्धा मे समात। श्री० ॥१९॥
घोर तप घोर व्रत सत वाचा, सुख सागर अध्यात्म रग राचा।
गोतम नामे ऋध सिद्ध वृद्धि थात ॥ श्री० ॥२०॥
उगणीसे आठ सन कार्तिक मास, सक्षेप से कीनो श्री गोतम रास।
'सुनाण' ये पूज्य सुपसाय गात ॥ श्री० ॥२१॥

१४

चाल— मनवा नाहीं विचारी रे,
थारी म्हारी करता ऊमर बीती सारी रे।

नेमी नाथ जी सू प्रीत प्यारी खूब लागी रे। खूब लागी ३ रे।
साहिब सावरा से प्रीत प्यारी खूब लागी रे ॥ आकड़ी ॥
जान जबर सभ तोरण आया, पीउ वैरागी रे।
पशु पेख रथ फेर चल्या, मेरी दया न जागी रे ॥नेमी०॥१॥

भव भव केरी प्रीत पुरातन थई अनुरागी रे।
वे छोरी पिऊ में नहीं छोरु जग ममता त्यागी रे।।नेमी ॥२॥
सजम नहीं केवल लही ज्योत में ज्योत समागी रे।
'सुगन' साची प्रीत करी राजुल गुण रागी रे।।नेमी०॥३॥

१५

चाल—आज नगरी में हर्ष बधाई समोसरण की शोभा रचाई।

पोष वदें दिन आसंवकारी पारस जिन जनमें अवतारी।।पोष ।।टेर०
अश्वसेन कुल कीरतधारी, वामा सुत आयो सवकारी।
दीप्त दिगम्बर दिशम्बर सुखारी, मंगल गावत छपन कुमारी।।पोष०॥१॥
सज श्रृंगार सकल सुर नारी दिश दिश आई रास दुलारी।
गावे बजावे ताल बजावें रिमझिम नाचत प्रेम पियारी।।पोष ।।२॥
सहपरिवार सुरेन्द्र आये जिन जननी पद नमत मिहारी।
मेरु सिखर प्रभुको नवरावे कलशा चौंसठ हरि करि त्यारी।।पोष ।।३॥
दुंदुभि नाद गगन गंभीरव चपला चमकत रतन पिटारी।
जिन जस जोर घटा घन बरसत प्यारा वृष्टि थई वाणी जगजन हदारी
।।पोष ।।४॥
घर-घर रंग बधावा भारी, केवा 'सुगन' करे चमकारी।
प्रभु प्रसन्ना प्रमुता से सारी पदकज ध्येय त्रिशला दुलारी।।पोष०॥५॥

१६

चाल—पणघट घाट घाट रग भीनो,
अब मासु रणो न जाय घालाजो।

सासणपति श्री वीर नमत नित, सफल फले मन आसारे ॥सासण०॥
सिद्धारथ नृप कुल मे कीनों, प्रगट दिनन्द प्रकासारे।
क्षत्रिय कु ड नगर के माहो, सुख सपत का वासारे ॥सासण०॥१॥
चैत्र शुक्ल तेरस की रजनी वरत्या मगल ग्वासारे।
त्रिशला उर अवतरिया प्रभूजी, पूरण ब्रह्म सवासारे ॥सासण०॥२॥
छपन कुमारी आय सुचिकर्म करने, मडप केल रचासारे।
तान मान वाजित्र ताल सू, गावत प्रभु जस वासारे ॥सासण०॥३॥
इन्द्रादिक जनमोछ्व आये, सुमेरू गिर सुविलासारे।
जै जै कार भयो त्रिभुवन मे, कलसाक्षेप करासारे ॥सासण०॥४॥
पच द्रव्य पुष्पन की वृष्टि कर खुस भगत खुलासारे।
आन ठान जननी घर ऊपर, सुर गये स्वर्ग निवासारे ॥सासण०॥५॥
सखिया आवे कलस वधावे, मोतीयन चोक पुरासारे।
सापा बधाया वटत विविध पर, मगल तूर तमासारे ॥सासण०॥६॥
देवे दान सिद्धारथ राजा, ज्यू जलधर वरसासारे।
धन कचन मणि गइन्द अश्वरथ, पाटम्बर पतरासारे ॥सासण० ॥७॥
वर्धमान जिन जाप जप्या सू, विघ्न रहे नहीं मासारे।
निश दिन निज सेवा मे राखो, 'सुजाण' ये अरदासारे ॥सासण०॥८॥

— —

१७

चाल—धन का तनिक भरोसा नाहीं किस पर करत गुमानारे ।

पद्म प्रभु पद पंकज में मन मधुकर ध्यान लुभानारे ।
हो लुभानारे रे । पद्म०।।टेर।।

गुण मकरन्द तणो रस माना भवि र भंवर लिपटानारे ।।पद्म०।।१।।
अवर कमल कुमलाना तरपण ये निश दिन बढ़तानारे ।।पद्म ।२।।
अवर कुसुम तो मोक्ष विखना इसका मोक्ष न पाना रे ।।पद्म ।३।
ऐसे पदम कमल प्रभु पदकज तासे प्रीत लगाना रे ।।पद्म०।।४।।
आगम अर्चित अनूपम महिमा ध्याम अचल वर स्थानारे ।।पद्म ।।५।।
जिन पद ध्यान 'सुजान' करन का सफल करो चोलानारे।।पद्म०।।६।।

१८

चाल—हिलमिल पाणिडे रे आम रे नव दिया ।

तूं ही तूं ही प्रभू मेरा मन मांही वसियो ।
मन मांहि वसियो, दिल मांहि वसियो ।। तूं ही ।।टेर।।
उठत बैठत सोवत जागत
नाम विहारो वर चित ऊसियो ।। तूं ही ।।१।।
तुम सम दूजा देव न दीसे
केवल ग्यान कला गुण रसियो ।। तूं ही ।।२।।
ध्यान दियो हीं भक्ति भाव सू
तुम पद सेवत पातक नसियो ।। तूं ही ।।३।।

---

* मीम ।

पदम कमल सम गुण मकर द रस,
मेरो मन मधु पीवण वसियो ।। तू ही०।।४।।
सुविधि नाथ जिन सुध बुध वगसो,
'सुजाण' तुम गुण प्रे म हुलसियो ।।तू ही०।।५।।

१९

चाल---आज नगरवा में हरष बधाई समोसरण की शोभा रचाई ।

शान्ती जिनेश्वर मोकू तारो, हूँ सेवक छू साहिब थारो ।।आकड़ी।।
शान्ती २ सुख होत जपत मुख, शान्ती नाम आनन्द अपारो ।
समता रूप शान्ती सुख वगसो, तो होवे हमचो सुरभारो❀ ।।
शान्ती०।।१।।
जगदाधार कृपानिध स्वामी, ससार भव दुःख भ्रमण करारो ।
तासे अति उद्वेग भयो चित, लागत मोय कटुक सम खारो ।
शान्ती०।।२।।
दान न दत्त सील न रत्त, तप तप्त नहीं भाव उदारो ।
दरसण ग्यान चरण गुण सेवन, मैन कियो कुछ मूढ गिवारो ।।
शान्ती०।।३।।
क्रोधानल मोय दध करतु है, अजगर मान लग्यो मुझ लारो ।
माया जालरू लोभ उरग डस, या दुखकू प्रभु दूर निवारो ।।
शान्ती०।।४।।
अगना चग न गुण गण काहू, कला न को कमला भडारो ।
तो पिण करे कदर्थ न मेरी, ऐसो मान मया कर टारो ।।
शान्ती०।।५।।

❀ निपटारा

२०

नेम राजुल बारामास्या

दोहा—तोरण से फिरिया प्रभू, राजुल अति फिद्धतान।
जुगल अपेक्षा ले करी, द्वादस मास रचान ॥१॥

चाल—दरखतवा तोरी डार गौरी पूज आई रे।

नेम पिया सुन अरज मास निगमों किम बारा रे॥
नेम० ॥२॥ आकड़ी ॥

चैत वसन्त फूली वनराई,
देत टहुका कोकिल मंजरी खात सहुकारा रे।
उतर—लख यति धर्म खिली वनराई,
संवेग आम्र पिक जीव सिद्धन, गुण रटत अपारा रे ॥नेम०॥१॥

वैशाख महल खसखान पोढ पिव,
सुरभि कुसुम सज सेज सख्यामिल पखा ढारा रे।
उ०—प्रगन्या (प्रज्ञा) महल भया खस खाने,
सुमन * सैन सत पखा खींचत सुमतादि नारा रे ॥नेम०॥२॥

जेष्ठ श्रेष्ठ अम्बर पुष्पमाला,
चन्द्र चद्रिका चनण लेप हेली होद फव्वारा रे।
उ०—लज्या पट लख शान्ती सुमाता,
ज्ञान चन्द्र क्षमा चन्दन धरम दुह विरती सदारा रे। नेम०॥३॥

---

* सद्‌विचार।

आषाढ़ मास मत छोड़ पियाजी
अष्ट भवन की प्रीत नवमें किम दीजिये टारा रे ।
दु०—अब समातम कीना सांइयन ने यह संसार असार,
विषय सुख विष सम धारा रे ।।नेम०।।४।।

श्रावण तीज सम्म भू मोहे
सखी हिंडोले झूलत जब पिय चढ़सी चौरा रे ।
दु० —आतम हित हरियाली हमारे,
ज्ञान अनन्त मोह छीजे मूरख्या, अब हम छूटा रे ।।नेम०।।५।।

भादव गाज बीज मयूर घन
केतकी सोरम सेज सखियां बरसे जल धारा रे ।
दु०—बरसत धन क्रिया मदन मोहानल
इनकू शरण संयम में रागद्वेष हमारा रे ।।नेम०।।६।।

आसोज मास गावत कवि सुन्दर करत
पवन विकास खिले सखी जल भर भरता रे ।
दु०—नेगम ज्ञान कवि कथा सुभाषित
समता मधु उज्ज्वल शील संतोष भरता रे ।।नेम ।।७।।

कार्तिक मास धाम सिणगारत,
शशि सुसी सुखम बात, मधुर रूपचारा रे ।
दु०—निज गुण महल सजु सुख स्वामी,
नूतन नार सम शिवरमणी से लग्या प्रेम करारा रे ।।नेम०।।८।।

मृगसिर सर इन्द्रियन रस भोगी,
चित्र साली के बीच दंपति रमे पासा जु सारा रे ।
उ०—अहू धीरज जित इन्द्री सुखोचित,
भोग रामत प्रिये, क्षीण होय जैसे ओस तिणारा रे ॥नेम०॥६॥

पोस अगन पट प्रिय लगे प्यारी,
नही छाडे नर कोय, पड़े पिउ अत ही ठारा रे ।
उ०—तप तेनाग्नी संवर पट सुवुधी,
ये हमकू सुखकार और जग दुख भडारा रे ॥नेम०॥१०॥

माघ मास शशि वक्र मृगाक्षि,
सिंह कटी जाघ गज राज सूढ पीन स्थान सोहे भारा रे ।
उ०—अशुचि देह सू करे कुण,
ऊपर चिमकत चाम भीतर भरिया सिंगारा रे ।.नेम०॥११॥

फागण फाग रमे पति पतनी,
गुलाल रंग पिचकारण भीना मोतीयन हारा रे ।
उ०—सम्यक गुलाल में लाल रह्या नित,
श्रुत पिचकारन खेल रचा हम सुध मति लारा रे ॥नेम०॥१२॥

उगणीसे ठावन शुभ वरसै,
वैसाख शुक्ल पक्ष तीज, शहर अजमेर मजारा रे ।
उ०—पूज्य विनय चन्द परसादे,
'सुजाण' कहे प्रभु आप तिरया और परकू तारा रे ॥नेम०॥१३॥

२२

राग ठुमरी

चाल—गिरनारी की बता दीज्यो डगरिया ।

अहो मन मोहन नेम पिया । तरसात कहा हो मोय जियारे ।
अहो०।।टेर।।

जान जवर सज कर तोरण पे, आय करके क्यों पीछा फिरिया ।
पसुवन के सिर दोष देय कोउ, रोप पुराणा दिखाय दियारे।।अ०।।१।।

बिन तकसीर छोर मत चालो, ऐसा गुनाह मैं कहा किया ।
लाजिम है तोय विपता गिरदावी, जालम कठोर है आप हियारे ।।
अ०।।२।।

रूप रग चातुरता चित की, दुल्हा ने मेरी छीन लिया ।
चन्द्र चन्द्रिका चनण विलेपण सखी लागत ज्यू ततिया वतियारे ।।
अ०।।३।।

खान पान सुख शयन न निन्द्रा, तलफत ज्यू जल विन मछिया ।
पीछा फिर आवो जद जाणू, दुख हरण विरुद साचा रचिया ।।
अ०।।४।।

सत महोषत दीचा ले राखी, मुक्ति गई उग्रसेण धिया ।
'सुजाण' कहे दंपति गुण कोहू, अलि कुसुम का ज्यू रसिया रे ।।
-अ०।।५।।

२१

चाल—हमें छांड पिव गयो नेम गिरनारी गये गये ।

श्री जिन ध्यान प्रधान मगन मन, ध्यावे सो अविख्यात रे ।
पे श्री प्रभु ध्यावे सो अविख्यात रे ॥ श्री० ॥ आंकडी ॥
और निखम काम सहु जग के मरम रूप अब भ्रान्त रे ।
विनाशिक पुद्गल की रचना, पल पल में पलटात । मेरे भाई पल०
श्री ॥१॥
परम प्रतापी पुरुषोत्तमकी पातम नाम विख्यात रे ।
परब्रह्म पत रामरण परमातम तू प्रभू मुक्यो बात रे ॥ श्री ॥२॥
नाम निरन्तर घटपट रट घट, तब घटपट अकुलात रे ।
सहज भाव सटपद में सुगणा पे जिम जिम उफलात रे ॥श्री०॥३॥
मरमत नीको मस्तक टीको देवो दुर्लभ बात रे ।
कूटकपट सब छिद्र होइ तब समज जिनागम बात रे ॥
मेरे भाई समक० श्री० ॥४॥
जिनमत करणी मव जरणी हरणी मोह मिथ्यात रे ।
श्रीमुख बरणी मोक्ष निसरणी, सत्य मई साक्षात रे ॥ मेरे भाई
सत्य० ॥श्री०॥५॥
सत्य समो नहीं सेवा सगीतो सत्य साहिब जग तात रे ।
सत्य धर्म को बीज बतायो, सो जिम तमो बुझात रे ॥
मेरे भाई सो ॥श्री०॥६॥
तेरो मेरो करत घनेरो कुम फेरो कुन थात रे ।
मतलब फेरो घेरो फेरो दुनियां बीच बजात रे ॥ मेरे भाई दुनियां०
श्री ॥७॥

भोर उठ भगवत भजो नित सुबुध श्री उर आत रे ।
एकाग्र चित ज्ञान ध्यान में, धन्य वे लगन लगात रे ॥
मेरे भाई धन्य० ॥श्री०॥८॥
धींग धणी तू मुकुट मणी सम, शरण सुजान लिरात रे ।
बाह् बेलो बालेसर बछित, सुख सपत वरदात रे ॥ मेरे०॥श्री०॥६॥

२४

दोहा—दीनानाथ दयाल मोय, निज लख दास गुलाम ।
लख चोरासी भ्रमण, हर, राखो नाथ कलाम ॥

चाल—जिनन्द थारी नोकरी मैं करस्या ।

जिनन्द थारो आसरो हम लीनोजी । कोई लीनो सुधारस पीनोजी ।
जिनन्द० ॥
कोई भव भावट भय भीनो । जिनन्द थारो आसरो हम लीनोजी ॥
श्री चिन्तामणि सुण स्वामीजी, तू पूरण अन्तरजामी जी ।
भवि आसानो विसरामी जी, मैं तो प्रणमूनित सिरनामी ॥जि०॥१॥
मैं पुण्य उदय प्रभु पायोजी, जाणें म्हारे आगण सुर तरू छायोजी ।
मुख जिन गुण मगल गायो जी, कोई तन मन हर्ष सवायो ॥
जि०॥२॥
मैं पातक कीना भारी जी, सेव्या अनाचार अविचारी जी ।
अनरथ भाख्या महा दुखकारी जी, सो थे देख रह्या अवतारी जी ॥

मैं कूड़ कपट बहु कायो जी सू स से हो शोप लगायो जी ।
फिर पिछतायो नाहीं आयो जी ऐसो महत्व कर्म कमायो ॥जि ॥४॥
पंचमाश्रव में रंग रयो जी क्रोध मान माया लोभ भरयो जी ।
रागादिक सू मोह खायो जी थारो मध्यादिक सू नायो ॥
जि०॥५॥
अब मंजन तू अविकारी जी तुमने सहू सरम हमारी जी ।
गौर कीजे गुण मंजरी जी जाऊं वार २ बलिहारी ॥जि०॥६॥
तू त्रिभुवन के सिर छाजे जी जगमग ज्योति मही जस गाजे जी ।
भव २ रसो 'सुभाग्य' की लाज जी वंछित सफल करण महाराज ॥
जि ॥७॥

२५

चाल—सुमरो वार मुझा का नाम मेरी लज्जा तेरे हाथ ।

सेवो श्री पारस जिन चन्द जिनसे पावे चित आनन्द ॥सेवो०॥टेर॥
अश्व सेन कुल दिनकर प्रगट्यो, वामाजी को नन्द ।
सब दुख विघ्न निवारण कारण सेवे सुर नर इन्द ॥सेवो०॥१॥
ध्यान स्थित होकर जिन पीवे प्रभु पदपद्म मकरन्द ।
तिन ने तत्क्षण मोही तारे, अष्ट कर्म के फन्द ॥सेवो०॥२॥
मोह माया मदिरा मदमातो सुख संपत परमानन्द ।
इण आलम वाण्यां सूं मिथ्या जिम होय कर्म को बन्ध ॥सेवो०॥३॥

जो तुम पाया चाहत हो जी, सगन मुक्ति फल कन्द ।
तो तप जप व्रत धर कर, करदो राग द्वेष को मन्द ॥सेत्रो०॥४॥
आतम राम रमे रंग भीना, मिलो परम सुख मद ।
रतन त्रय निज रूप खजाना, भरो विविध गुण वृन्द ॥सेत्रो०॥५॥
सुद्ध मन भाव विभो उर आणी, प्रणमो पास जिनन्द ।
सरण 'सुजाण' जाण जगदानन्द, दूर करो दुख द्वंद ॥सेत्रो०॥६॥

२६

चाल —हमें छाड़ कित गये नेम गिरनारी ।

श्री वामानन्द दयाल लाल, मोय तारोगे रिछपाल ।
लाल मोय तारोगे रिछपाल ॥श्री०॥टेर॥
नारक, तिर्यंग जोन अनन्ती, वेदन सही असराल ।
शुभाशुभ कर्म प्रयोग बहुविध, देव मनुज गत काल ॥ला०॥१॥
या विध भ्रमन चतुर गत केरों, साले अन्तर साल ।
छिन भर छानो नहीं प्रभू तोसू, मेरो हाल हवाल ॥ला०॥२॥
यो मन मेरे हाथ न आवे, मृग जिउ मारे फाल ।
ज्ञान, ध्यान, सुकृन के टाने*, विच विच करत कुचाल ॥ला०॥३॥
इण कलि काल कराल जाल में, मैं भोरो-सो बाल ।
तुम बिन कौन करे प्रभु मेरी मायत ज्यू प्रतिपाल ॥ला०॥४॥
महर नजर ते यो भवसागर, तिरत न लागे ताल ।
याते शरण 'सुजाण' लियो प्रभु, पूरो वाछित माल ॥ला०॥५॥

---

* सुकृत के समय ।

२७

चाल—चाणो मेरा करता न जाय, मये श्रिन गारी ससीना रे ।

वामा नन्दन भज मतिमान अवि नाम मूं मोर कल्याण ।
पै मोर्यो क जरत सु सफलमिमान* वामानन्द भज मतिमान ॥
॥आंकड़ी॥
अश्वसेन कुल चन्दला जी पारस जनम बनारस सुथान ।
नील बरण मन हरन अनोपम वंश इक्ष्वाक प्रधान ॥वा०॥१॥
अहिलंछन रेखा पर राजे आयुष सौ वच्छर परमाण ।
इन्द्र चन्द्र धरणीन्द्र पोमावई सेवत नित धर ध्यान ॥वा०॥२॥
कमठ अनन्त तू भमत भवंतर पायो दुख असमान ।
तारक मान शरण तुम आये दो शिव सुख वरदान ॥वा०॥३॥
निसि दिन मन प्रभु मीति मू है प्यारा पारस नाम निधान ।
जपतो जग गुरु प्रभ प्रबोधो 'मगनमलन्द सुमाणा' ॥वा ॥४॥

२८

चाल—कुनखा है गानू वारा, बिन मोह खिवा श्याम हमारा रे ।

मेरे प्रभु पार्श्वनाथ पद पायो मन वंछित मायो पायो ॥मे०॥टेर॥
सुख दुख भव तून भव-भव के अतर दोष बमायो ॥मे०॥१॥
तू प्रभु दीन दयाल जगत में त्रिभुवन पति सिर नायो ।
अनादिकाल भटकत मोह सायो चरण कमल लिपटायो ॥मे०॥२॥

---

*फलाभिमान

नाम तिहारो उर बिच बसियो, पल पल रंग सवायो ।
'सुजाण' प्रभु समरण रस पीता, काज सरे चित चायो ॥मे०॥३॥

२६

राग ललित

राग-ललित—चाल-जय गणेश ३ देवा

मेरे प्रभु पार्श्वनाथ, दूसरो न कोई ॥मे०॥आकडी॥
अश्व सेन तात, वामा सुत सोई ॥मे०॥१॥
केवल वरनाण जाके प्रगट भान होई ।
निरजन निर्विकार ध्यान, लग्यो एक ओई ॥मे०॥२॥
हरिहर ब्रह्मा गणेश, देख्या जग टोई ।
राग द्वेष वशीभूत, ममता नहीं खोई ॥मे०॥३।
तारन अरु तिरन विरुद, नामे टक जोई ।
सुजाण' सोचो प्रेम जाण, प्रीत माल पोई ॥मे०॥४॥

३०

चाल—समरो चार भुजा का नाथ, मेरी लज्जा तेरे हाथ ।

मै तो आयो प्रभु तुम तीर, मो पर महर करो महावीर ॥मैं०॥टेर॥
भव दु ख वेदन छेदन भेदन, बहु विध सहि शरीर ।
अब समकित आयो तासे, कटे करम दु ख पीर ॥मैं०॥१॥
खनी खून घणा मैं कीना, माफ करो तकसीर ।

अवगुण ऊपर गुण कर लेखे मो साहिब गंभीर ॥मैं०॥२॥
अनाचार पातक ममता तन बंध रह्यो अकड़ जंजीर ।
बंदी मोचन करिये स्वामी मैं पकड़ी तुम भीर ॥मैं०॥३॥
खान पान रस भोग राग रंग छोड्या चंगा चीर ।
चरम जनक महि तज कर लेवे विपत सुख काय कथीर ॥मैं०॥४॥
मूढ़ बन्ध फन्द दुनियां का काते विरह वितगीर ।
शरण 'सुजाण' आय कर बगसो खम खम खम गुण धीर ॥मैं०॥५॥

३१

दोहा—मोर सोर सुण अहि डरे, भागत भाजे चोर ।
त्यों प्रभु भजन विनोद निनाद सू भाजे करम कठोर ॥

चाल—भाज नगरया में हुए बधाई समोसरण की शोभा रचाई ।

दीनानाथ विरुद कहलायो था ते शरण वीर प्रभु आयो ॥दी०आं०॥
परम ज्योत परमातम तुम गुण रूम २ अति रग से रमायो ।
मैं मतिमन्द कहा गुण बरणु सुरपति भी गुण पार न पायो॥दी०॥१॥
तारक तार सार कर मेरी तुम देखत भव जल में डुबायो ।
करुणानिध बहुता नर तारे, मुझ बिरियां हठ कहा पकड़ायो॥ दी ॥२॥
अभागी गोसाला मेघकु, गोतम ने गणी पद बगसायो ।
केता ही चमत्कार तारया, मो मैं कहो कहा +मेख रखायो॥दी०॥३॥
भमराई चतुरवीस दंडक में भ्रमत २ मैं हो गयो अमोल ।
अब शिवमंदिर राह बतावो, मम मधुप× तुम पदकंज विलगावो॥दी०॥४॥

+मेख—चूक   कंज—कमल   ×मधुप—भौंरा

वदन मदन क्रोधादिक तरलित, ऐसे कुदेव से दिल उचटायो।
अठारे दोपण रहित सुहकर, तू हीर है प्रभु मो मन भायो ॥दी०॥५॥
तुम तो सिद्ध स्थान गये प्रभु, मैं भवसागर में उलझायो ।
पूरब प्रीत की रीत रखाओ, तो हम काज सरे चित चायो॥दी०॥६॥
महामुक्ति वरदायक नायक, तू न तारे तो मैं किण पे जायो ।
सरणागत की सब रूख राखे, थे छो त्रिभुवनपत सिर रायो ॥दी०॥७॥
भव भव खून करत मैं आयो, पातक पूर भरियो अवधायो ।
मन विकल्प कर खून करया फुन,ताते तो मन अधिक तणायो॥दी० ।८॥
महिधर जाच्या गामदेव को, तुम तूठा चित चिंत निठायो ।
चन्दन तरु अन्य तरु सम करदे,जिन भक्ति ते जिनपद थायो॥दी०६॥
लटले विटप भवन घर साधी, भू भू शब्द वारणे छायो ।
लट मर भृंगी होय उडत है, या करने मो मन ने दृढायो॥दी०॥१०॥
अजर अमर अविनाशी विनवू, सासण पत तुम से हम दायो ।
दसण नाण 'सुजाण' सुनायो, तो उपजे अति सुख सवायो ॥दी०॥११॥

३२

चाल—सखि पनिया भरन कैसे जाना, पनघट पे खड़ा है काना ।

महावीर भरोसो थारो, करुणा कर पार उतारो जी ।
ये जी भगवत भरोसो थारो ॥ करुणा० ॥आकड़ी०॥
जिन शासन बाग तिहारो, मो मिल गयो भाग उदारो जी ।
मन सुवटो रमत हमारो ।।करुणा०॥१॥

सत समता रास बनारो, बैठ्यो शील भव तरु बारो जी।
मन कीर स्वाद स सारो ॥करुणा० ॥१॥
मैं चाकर हूं चरणा रो मो पर दुक नजर गुजारो जी। ।
मत देखो अवगुण म्हारो ॥करुणा ॥३॥
देखे मीन चखे निरधारो तम मन घन बीज पियारो जी।
पर मन प्रभु बात विचारो ॥करुणा० ॥४॥
सोहीसेय कष्ट आवे भारो तम सहायक हस्त संभारो जी।
वैसे मो दुःख आप मिवारो जी ॥करुणा ॥५॥
पियो जिन वचनन रस प्यारो अन्यमत मिठास लगे खारो जी।
लाग्यो भक्ति सुरंग प्यारो ॥करुणा० ॥६॥
दिल पर विश्वास अपारो आयो शरण 'सुजान' थारो जी।
भव भ्रमण को दुःख टारो प्रभु करते जय जय कारो ॥करुणा ॥७॥

२१

राग—कल्याण

प्रभू नित विहरमान जिन बीस ॥ विहर ॥टेर॥
चरण कमल में मो मन अटक्यो, रटन करूं निसदीस ॥प्रभू० ॥१॥
सीमंधर, युगमंधर स्वामी, त्रिभुवन मोटा ईश।
बाहु, सुबाहु, सुजात स्वयं प्रभु, कठिन करम दलपीस ॥प्रभू० ॥२॥
श्री ऋषभानन अनन्त वीर्य जिन सूर प्रभु सूर्य सरीस।
विशाल वज्रधर, चन्द्रानन श्री चन्द्र प्रभा जगदीस ॥प्रभू० ॥३॥

चन्द्र बाहु, भुजग जिनेश्वर, ईश्वर नेम नमीश ।
वीरसेन, महाभद्र, देवजस, अजितवीर्य नाउ सीस ॥चन्दू०॥४॥
पैंतिस विध वाणी घन गाजे, जिन अतिशय चोंतीस ।
अष्ट महा प्रतिहार्य करीने, सोहे जगदाधीश ॥चन्दू०।५॥
महाविदेह में आप विराजे, झिग मिग ज्योत जगीस ।
'सुजाण' नन तर्सन दरसन की, आशा सफल करीस ॥चन्दू० ।६॥

३८

राग–सिन्धू

चाल–कडखा की—राग–सिन्धू

अहो जिनराज, रख लाज तू माहरी,
सार निज काज में शरण थारी ॥अहो०॥टेर॥
और अन्य देव नी सेवना न रिगसे,
एक तुझ नाम इक तार धारी ॥अ०॥१
तू ही परमात्मा परम परमेश्वरू,
तू ही केवल नाण वर गुण भण्डारी ।
तू ही जग ज्योत जोते सरू जिन वरू,
जग गुरु अचिंत्य महिमा तिहारी ॥अ०॥२॥
कर्म नी भ्रमना माहे भ्रम्यो बहु,
सुरत आपा परतणी सहु विसारी ।
ताहे ते दुर्दीसा कर जग भूल्यो,
अब लगी लगन तुमसे करारी ॥अ०॥३॥

माह माया तणी फास परबस थयी,
जाइ गई सीख दे दुक्ख भारी ।
फास हर आपको काट सताप जी
दुक्ख सुखी करउ तुम बिन हमारी ॥प्र०॥४॥
नर भव सुचि में सुगत्य सुख साधले
करम रिज तोड जयकार कारी ।
'सुजाण' जिम भक्ति में रक्त मन राखिये
शक्ति निज फोर सही मुक्त प्यारी पद ॥५॥

३५

राग–धनाश्री

प्रभु बिन कौन सुने अब मेरी, कौन सुने अब मेरी ॥प्रभु०॥कौं०॥
दीनानाथ जगतपति साहिब मैं शरणागत तेरी ॥प्र०॥१॥
मात पिता ने पाकर दीनी, हाड मांस की ढेरी ।
तप संजम बिन नरभव निरफल भूमी भारै भरे मेरी ॥प्र०॥२॥
काम क्रोध मद लोभ कपट ने ध्यान लगाई घेरी ।
छिनक छिनक आयु घट छीजे आवे अधिक अंधेरी ॥प्र०॥३॥
आगम शक्ति मध्यस्त बिरियते कटे करम दुःख बैरी ।
सो सुख सार 'सुजाण' समाये शिवपुर आवे नेरी ॥प्र०॥४॥

३६

राग–धनाश्री

जिनन्द तोय विसरू न एकही मास,
विसरू न एक ही मास ।।जि०।।आकड़ी।।

रूम रूम मे तुम गुण रमिया, ज्यू फूलन में वास ।।जि०।।१।।

स्वाति बूंद चातक चित चाहे, जल विन मीन निराश ।
तिम तुम दर्शन की उत्कंठा, लग रही अधिक पियास ।।जि०।।२।।

निन्दा विकथा छिद्र छेतरू, करू विरानी हास ।
अपना पाप छिपा कर राखू, पर ना करू प्रकाश ।।जि०।।३।।

इत्यादिक अवगुण से भरियो, कहि न परै मुख भास ।
अवगुण ऊपर गुण कर देखो, सम दम ज्ञान विलास ।।जि०।।४।।

कूडो मैलो जाण जगत को सरणे आयो तास ।
जिम जाणो तिम पार लगाओ, 'सुजाण' चरण को दास ।।जि०।।५।।

३७

चाल--किण तोड्यो गुलाबी फूल हो हे ज्यानी,
श्री जी म्हाका बेडा लगा दीज्यो पार, हो जिनवरजी म्हाका ।

थारा चरणा में म्हारो चित लाग्यो जी,
म्हारा बेड़ा लगा दीज्यो पार ।।टेर।।

अन्य देव मिथ्या भ्रम तज कर, आयो तुम दरबार ।
भलानी मै तो आयो तुम दरबार ।। हो जिनवरजी म्हाका०।।१।।

अन्तरजामी गुण अभिरामी सुख करतार पुकार ।
महाजी म्हारी सुण करतार पुकार ॥ हो जिनवरजी म्हारा ॥२॥
भव दुःख दरियो अथवल भरियो मैं परियो मँझधार ।
महाजी मैं परियो मँझधार ॥ हो जिनवरजी म्हारा ॥३॥
तुम गुण समरण प्रवहण पायो दीज्यो पार उतार ।
महाजी मनै दीजो पार उतार ॥ हो जिनवरजी म्हारा०॥४॥
मो गुण अवगुण पर मत दीजो अपनो विरुद सम्भार ।
महाजी प्रभु अपनो विरुद संभार ॥ हो जिनवरजी म्हारा०॥५॥
चाहत सेव 'सुजाण' चरण की आवागमन निवार ।
महाजी प्रभु आवागमन निवार ॥ हो जिनवरजी म्हारा ॥६॥

३८

चाल—पीले रे प्याला, हो मतवाला प्याला प्रेम सुधारस का रे ।

सखी सखी का सब कोई सीरी
तोरी चकत दीनानाथ सखी तू ।ध्रु ।टेर।
निश दिन नाम रटू प्रभु तेरो सेवू सदा चित रंग सखी तू ।
जग नाता सह स्वारथ केरा परमारथ पथ ग्यान सखी तू ।ध्रु ॥१॥
गरीब निवाज को विरुद निवाजे तो मो गरीब को पूर सखी तू ।
संकटविकट महुरण शरण तुम राखो लाज मरणांत तरवीतू ।ध्रु ॥२॥
परमातम आधार आप रो तारया बहु विध करम चखी तू ।
'सुजाण'की प्रभु थासी विनती विसम करम गत काट सखीतू ।ध्रु ॥३॥

३९

चाल—नाथ भव बाधा हर मेरी, गही मैं शरण जिनन्द तेरी ।

कृपानिध टुक किरपा कीजे,
हेज धर अरजी सुण लीजे ॥कृपानिध०॥टेर॥

प्रभु मेरे मन माही वसियो, ओसीता उर में जिमरसियो ।
नेम हूं दरसण को तसियो, दरस तें दुःख जावे नसियो ।
अन्तरजामी आप हो, और न को समार ।
कलुकाल में आप नाम पर, मैं कीनी इकतार ।
नाव मेरी पार लगा दीजे ॥कृपानिध०॥१॥

सिंहासन फिटक मई राजै, वाणी धन पैंतिस विध गाजै ।
अतिसय चौंतिस कर छाजै, पाखंडी देख देख लाजै ।
द्वादस प्रखदा मायने, वैर न व्यापे कोय ।
अद्भुत महिमा समोसरण की, देखत तृप्त न होय ।
वाणी सुण सुर नर सहु रीझे ॥कृपानिध०॥२॥

दरस विन मो मन अति तरसे, तादिन धन मिलूं अरस परसे ।
मेरे दिल आणन्द रंग वरसै, हृदय ये सफल करो सरसै ।
पायक वायक साभली, नायक त्रिभुवन नाथ ।
दुखदायक सुखदायक तुम हो मायक राखो साथ ।
महर मो ऊपर राखीजे ॥कृपानिध०॥३।

जिनन्द सूं प्रीत मेरी लागी, अन्य से प्रीत रीत भागी ।
मैं हूं तुम गुण को अनुरागी, मेरे पुण्य जोग दसा जागी ।

तेल बिन्दु जल में पड़े रश्मि करे विस्तार ।
प्रभु सुजान मत ज्ञान कृपा गुण प्रगटावो सुखकार
चरण की सेवा बगसीजे ।कृपानिध ।।३।।

४०

चाल—सखि पनियों भरन कैसे जाना पनघट पे खड़ा है कान्हा।

प्रभु सुणिये अरज हमारी मोय तारो बिरुद बिचारी ।
ये जी प्रभु सु ।।टेर।।

सुणो मुगति के अधिकारी, अजी हां सुणो मुगति के अधिकारी ।
सप्त राजु उर्ध्व शिव× भारी जी मांड्यो वेवस्य होस व्यापारी ।।मोय०।।१।।
आप बड़े नाथ उपगारी ।
भव संचित तारया भारी जी अब मुझ को पार उतारी ।।मोय०।।२।।
भव दुःख से हो वे दुखारी ।
मेरी राखो लाज करारी जी मैं चाह सेव चरणा री ।।मोय०।।३।।
प्रभु अधम उद्धारण भारी ।
तुम तारे बहु नर नारी जी गही मैं भी शरण तिहारी ।।मोय०।।४।।
त्रिलवाणी जगत पियारी ।
चाह तुम चरणन पर वारी जी सेवे भवका करै सो मझारी+।।मोय०।।५।।
थारे पुद्गल मूरत्त री ।
लगी विषय सुख जेम कटारी जी अब समझे काम पटारी ।।मोय ।।६।।
तुम करुणा रस भण्डारो ।
सेवक 'सुजान' रस लारी जी, कोरे मोहा समझ्या सारी ।।मोय०।।७।।

×शिव नाम—सिद्ध शिला । +मानभवाक ।

४१

चाल —ब्रजराज आज सावरो, वसी वजा गयो ।

आणद अग रग सू, जिणद गुण गाइये ॥
जिनन्द गुण गाइये ॥टेर॥
प्रभु के अपार गुण मेरे मन भाइये ।
उमग वर गावे जाके, पाप झर जाइये २ ॥आ०॥१॥
अनग कु विडार, एकाग्र चित ठाइये ।
कसाय की कसायता ने, दूर हू नसाइये २ ॥आ०॥२॥
ऐसी विध भक्ति भाव, प्रेम सू रचाइये ।
समता की सहेली सग, मोज खूब पाइये २ ॥आ०॥३॥
प्रभु को सुजस जग, केतु फरकाइये ।
आगम सुध लही हम, प्रमुदित थाइये २ ॥आ०॥४॥
प्रभु गुण गात, गोत तीर्थ कर वधाइये ।
देखो दसकधर राय, तैसे भाव ल्याइये २ ॥आ०॥५॥
प्रभु के समोसरण वादी, चल आइये ।
देखत दीदार, सिर तुरत नमाइये २ ॥आ०॥६॥
दरस सरस सुख मोकु भी वताइये ।
'सुजाण' की ये आस प्रभु पूरण कराइये २ ॥आ०॥७॥

४२

चाल—लावणी की।

[धन धन मम धन बच्चू बरखी योवन में समता कीनी।
परणी घरणी तजी प्रभाते संयम लीनो दृढ़ कीनी॥]

करज मुखीसे सेवक न कीजे भाग्य योवन सम हो प्यारा।
महर करी सेवा में रखिये, हूं सेवक जिन चरणा रा॥म०॥र्मा॥
मो पे आज्ञ गज़ब किया तारु अहो अहो श्रमण गारा।
तेरे मुखा मुखा वच सेवी जीवन हूं मैं निरधारा॥म॥१॥
तुम गुण में लवलीन रहूं नित जैसे अलिया मतवारा।
वेग मिलो महाराज जिनन्दा तुम बिन लागे जग खारा॥म०॥२॥
निपट कठोर होय अब स्वामी क्या देते मुझ कू टारा।
अधम से अधम उद्धारण वाला तिया बापू है अभिधारा॥म॥३॥
मुक्ता तज गुंजा मह लिवनी अमू विवेक विकल मैं जिन धारा।
अब हमरा पूरो कर्म चूरो सुख पाई चपम धारा॥म॥४॥
बिगड़ी ही जगदीश सुधारे, जैसे जमाली गोमारा।
चन्दकौशिका चन्दनबाला का धीर धीर किया निस्तारा॥म०॥५॥
पूरी होंस सौंस बिन श्रेणिक, हूं किम सेवक नहीं थारा।
तार तार करतार तार अब अपना बिरुद को संभारा॥म॥६॥
साधु साधवी रूप श्रेणिक वश किया मिथ्याणा तिरधारा।
आराम सब काज प्रभूजी करज सार दिया क्यों रा॥म॥७॥
गौतम ने गणधर पद सासो समसचिर मेघज कुमारा।
इसका इसका नाम उघारया, मो वेर पर्या क्या बिचारा॥म॥८॥

कुबेरी।

विन सेवक स्वामी नहीं सोहे, हूँ सेवक स्वामी लारा ।
ऐसी जाण आण मो किरपा, मत राखो मोकूं न्यारा ॥अ०॥९॥
सरिता वेग गहन तरु तट से, मूल उखाल देत डारा ।
तैसे करम कदम्ब उखालण, जपूं जिनन्द होय हुसियारा ॥अ०॥१०॥
सूर वीर वल शस्त्र तैसे, मैं प्रभु पद वल निहारा ।
रख आबाद कदम विच साहिब, 'सुजाण' तुम तावेदारा ॥अ०॥११॥

४२

दोहा—धर्म मूल साखा सुजम, सत्य वचन मुख पान ।
ग्यान क्रिया फल कर मुनि, सोहे कल्प समान ॥

चाल—भेप धर यों ही जनम गुमायो ।

सुगुरु की महिमा वरणी न जाई ।
महिमा वरणी न जाई । सुगुरु की महिमा वरणी न जाई ॥टेर॥
जग सुख विप फल तज कर चाखी, सजम सरस मिठाई ॥सु०॥१॥
कर आतम ये कात भ्रात हर, सुध समता प्रगटाई ।
इन्द्रिया पाच प्रवल जोरावर तिनकूं वस वरताई ॥सु०॥२॥
पच महाव्रत सेना सज कर, सुमति निसाण घुराई ।
सप्तवीस गुण विविधायुध धर, मोह की फौज हटाई ॥सु०॥३॥
वाइस परीसह सहे आकरा, जति धरम दस ध्याई ।
वाड सहित ब्रह्म व्रत सुध पाले, धन धन ते रीखराई ॥सु०॥४॥

साठी सुरत लगी शिवपुर से निज पर वस्तु सजाई ।
परतु छोड़ निज गुण धारावे भावना द्वादस भाई ॥सु०॥ ५ ॥
काम क्लेश लेस नहीं जाके अक्रोही[1] अमाई[2] ।
मान मत्सर नहीं लोभ लालसा उपशम रस कमाई ॥सु०॥ ६ ॥
कपट न करे कठिन नहीं बोले, वचन अमी बरसाई ।
सागर सम गिरुवे नहीं कबहू, नहीं गरव गुमराई ॥सु०॥ ७ ॥
निरदोषण शुध आहार गवेषी तन भाड़ो दिवराई ।
द्वादस विध तपमाल निकाले अनुकंपा घट छाई ॥सु ॥ ८ ॥
धर्म ध्यान शुक्लध्यान में आर्त न कबहु बनाई ।
जिनमत दृढ़ समकित सरधा शुद्ध देव न सके चलाई ॥सु०॥ ९ ॥
हांस विलास न विकथा आलस नहीं विकल्प विकलाई ।
आतमगवेषी करे तन मन शुद्ध नहीं करे मान बड़ाई ॥सु ॥ १० ॥
सोचफिकर दुगंछा नहीं जिनपर प्रभु पद प्रीत लगाई ।
अनुभव ज्ञान विलास बाग में केल करे चित चाई ॥सु०॥ ११ ॥
केइ पंडित वरनाम विवेकी केइ तपकर अघ सुखाई ।
केइ रसत्यागी महा वैरागी करे घणी कठिनाई ॥सु०॥ १२ ॥
इत्यादिक आमा गुण भरिया कहतां पार न पाई ।
'सुजान' ऐसे सतगुरु वंदत करते रंग बधाई ॥सु ॥ १३ ॥
कापीसे गगन बोधाये अस्त शुक्ल अष्टमी गाई ।
पूज्य 'विनय' सुपसाय मुनि गुण चतुर्दसी बरनाई ॥सु०॥ १४ ॥

१—अक्रोधी २—अमायी (कपट रहित)

४४

[राग—बरुश्रो]

सतगुरु दरस सदा जयकारी, जिण कामोद्दीपन तपत निवारी ।।स।।
कृष्णगढ सु स्वामी पधारे, आणद मगल हरप अपारी ।
चद्रोपम सम आनन सोहे, चढत कलागुण ज्ञान उजारी ।।स०।। १
गिरा सुधा सम बरसत वारु, पीवत भवि मन केसर क्यारी ।
क्षमा दया सत् शील दृढावत ज्ञान दर्शन चारित्राधारी ।।स।। २ ।।
विहार करी धुलेसर जावत, तिहा उमाजी अष्टसु सतिया पधारी ।
सहुजन चरण नमी इम दाखै, राखो जहाज आप उपगारी ।।स।। ३।।
पोसाद्विसहस पणदस पचरगी, भेंट विशाल करे नरनारी ।
चतुरमास करुणानिध कीजे, आसा सफल करो अवतारी ।।स।।४।।
अवसर बीनति मान मयाकर, फिर आगये जयनगर मझारी ।
महतपुरुस गिरवा गुणसागर पूज कजोड़ीमलजी भारी ।।स०।। ५ ।।
विनयचन्दजी की विनय पवित्ती, मुलतानमल मुलका में जहारी ।
सौभाग्यमल सौभाग्य गुणागर, रिखवर चतुर बालब्रह्मचारी ।।
स० ।।६।।
सुखसु राजै, श्री महाराजै, खम सम दम लक्ष्मी उरधारी ।
सब सजन 'सुजाण' सुरगै, तुम चरणन पर वार हजारी, हे तुम
चरण पर हु बलिहारी ।।स०।। ७ ।।

४५

[चाल — मैं सुग्रीवना की नार मार चाली पर मांहिजी]

पूज विनय महाराज भाग्यदिस है भक्तारीजी।
क्षमापात्र गुणधाम सुजस जग मांहि भारीजी।।टांकणी।।
भारति कंठनिवास वचनामृत अमृत धारीजी।
सुरता चित चाहै मोद क्षेम जस सींच्या क्यारी जी।
शान्त कान्त गम्भीर मुद्रा है मोहनगारीजी।
चर्म्मगंगा दिनमणि क्षेम मिथ्यातम दूर निवारीजी।। पूज०।। १।।
श्री आचार्य कमलद्द चंदमुनि महिमाधारीजी।
वे व्याख्यान अनूप श्रवण मन होय अरनारीजी।
प्रश्नोत्तर हो भव्य भरी घट ज्ञान पिटारीजी।
सप्तवीस गुणधार, तपोधन सुचितधारीजी।। पूज ।। २।।
जिनराज क्षमा गुणधार, रीम कृ कई विचारीजी।
शोभाचन्दजी महाराज बुधि मति बहुत कसारीजी।
इस मुनि प्रसस बस ने लियो सम्भारीजी।
गुलाबचन्द गुणमहक फूल फूली फुलवारीजी।। पूज ।। ३।।
सगवानदास तपमूरत तपस्या करे करारीजी।
इत्यादिक ब्रत तप चढ़े पैर कुसुम आयो छारीजी।
इत्यादिक एकादश मुनि जयपुर जयकारीजी।
सत्य शील संतोष सरल मन ममता मारीजी।। पूज ।। ४।।
सागोसे वासठ, फागुन कृष्ण तरस प्यारीजी।
पूज विनय सुपसाय स्तवन कियो तुरत तैयारीजी।
'सुजाव' चरण को दास भास वर आयो थांरीजी।
तारण तारो श्री आज राज भव तारो म्हारीजी।। पूज ।। ५।।

४४

[राग—वरश्रो]

सतगुरु दरस मदा जयकारी, जिण कामोद्दीपन तपत निवारी ।।स।।
कृष्णगढ सु स्वामी पधारे, आणद मगल हरप अपारी ।
चद्रोपम सम आनन सोहे, चढत कलागुण ज्ञान उजारी ।।स०।। १
गिरा सुधा सम वरसत वाण, पीवत भवि मन केसर क्यारी ।
क्षमा दया सत् शील दृढावत ज्ञान दर्शन चारित्राधारी ।।स।। २ ।।
विहार करी धुलेसर जावत, तिहा उमाजी अष्टसु सतिया पधारी ।
सहुजन चरण नमी इम दाखे, राखो जहाज आप उपगारी ।।स।। ३।।
पोसाद्विसहस पणदस पचरगी, भेंट विशाल करे नरनारी ।
चतुरमास करुणानिध कीजे, आसा सफल करो अवतारी ।।स।।४।।
अवसर बीनति मान मयाकर, फिर आगये जयनगर मझारी ।
महतपुरुस गिरवा गुणसागर पूज कजोडीमलजी भारी ।।स०।। ५ ।।
विनयचन्दजी की विनय पवित्ती, मुलतानमल मुलका में जहारी ।
सौभाग्यमल सौभाग्य गुणागर, रिखवर चतुर वालब्रह्मचारी ।।
स० ।।६।।
सुखसु राजे, श्री महाराजे, खम सम दम लक्ष्मी उरधारी ।
सव सजन 'सुजाण' सुरगे, तुम चरणन पर वार हजारी, हे तुम
चरण पर हु वलिहारी ।।स०।। ७ ।।

४७

[राग—आसावरी]

महाराजा का राज्य भरोसो भारी। श्री जवाहरलाल यश धारी ।।म०।।
।। आंकडी ।।

काम क्रोध मद मत्सर तृष्णा इनहूँ पकर पछारी।
संयम गुण में सदा रहे नित शम सम दम ब्रह्मचारी ।।म०।। १ ।।
धनराज मुनिश्वर चतुर विचक्षण ज्ञान कला विस्तारी।
टीका सहित सिद्धांत सुणावे मतिवाले नरनारी ।।म०।। २ ।।
खेम शिष्य्या सुखसागर साँई, कृष्णलाल हितकारी।
इस मुनि निज वस पचास सीख फले वस वारी ।।म०।। ३ ।।
पट आर्यो साधु संत सिरोमणि मुन्ना मोहनगारी।
चतुरमास कीनो रंग भीनो, जयपुर में जयकारी ।।म ।। ४ ।।
उगणीसे सैंतालीस कातिक सुद चौदस सुखकारी।
कहत 'सुजाण' चरण को चेरा आयो शरण विहारी ।।म०।। ५ ।।

४८

[तर्ज—गहरा फूलन्या है गुलाब गैंदा बाग में है]

मन भाया हो सतगुरुजी मनवाल वारया ने।
मोहरा निजगुण भाव सुधारवाने ।। टेर ।।
सम्प्रदाय श्री हुक्मेसजी में
श्री श्री जवाहरलाल विराजे।
जाके धनराज मुनिश्वर छाजे

४६

पूज थारा दरसण की वलिहारी, मैं तो वारी जाऊँ वार हजारी ॥पृ०॥
दरस सरस सुख सपत सोहे, मुखमगल जयकारी ॥पू०॥ १॥
पूज परम गुरुदेव दिवाकर, विनयचन्द्र जतधारी।
सत सौभाग्य हरप मन, खिल रही गुलाव ज्यूँ गुलक्यारी ॥पू०॥२॥
ठाणा पाच नोधाणा मॉही, भेंट भई भवतारी।
दुद्धर पच महाव्रतधारी, सुमत गुपत सुविचारी ॥पू०॥ ३॥
वाणी जाण अमीरस वरसे, प्रफुल्लित भवि कमलारी।
हेतु जुगत बहु विध समभावे, प्रतिवोधे नरनारी ॥पू०॥ ४॥
जैपुर शहर महर कर फरस्यो, वीनतडी अवधारी।
'सुजाण' ने निज निध वगसाओ, आयो शरण तिहारी ॥पू०॥ ५॥

४७

[चाल–थारी फूलसी देह पलक में पलटे, क्या मगरुरी राखे रे]
श्री सोभाचन्दजी महाराज मुनि की, महिमा कहिय न जावे रे
॥ आकडी ॥
नाम जथा गुणमहक कुसमसम, शोभा अति गरणावे रे ॥ श्री ॥१॥
पूज विनयचन्दजी गुरु भेट्या, सारा लोग सरावे रे।
ग्यान कला जागी घट अन्तर, थॉरी कीरति ढोल वजावेरे ॥ श्री ॥२॥
काम राग सु थया वेगला, निज गुण जोत जगावे रे।
ज्ञान ध्यान विज्ञान सिरोमण, परमानन्द रस पावे रे ॥ श्री ॥३॥
वाणी रग वैराग सु भीनी, शिक्षा सवद सुणावे रे।
हेतु जुगत बहु भाँति करीने, अमृत रस वरसावे रे ॥ श्री ॥४॥
जयणा जुगत जोग मग चाले, सुमत गुपत छिव जाये रे।
'सुजाण' सतगुरु केरी महिमा, वडलू में वरणावे रे ॥ श्री ॥५॥

वाणी सरस घटा घन गाजे ॥ भल० ॥ १ ॥

खीमराज खीम्या गुण सायरुजी,

कृष्णलाल दयानिध धीरा।

मुनिवर हस अमोलक हीरा,

ठाणे पॉच प्यारा प्रभूजीरा ॥ भल० ॥ ॥ २ ॥

थारी सोम निजर लागे सोहणीजी,

सूरत थारी हू बलिहारी।

मुद्रा अति ही मोहनगारी,

निर्मल शात छवी सुखकारी ॥ भल ॥ ॥ ३ ॥

अनुभव ज्ञान कल्पतरु फूलीयोजी,

महाव्रत फूल खिल्या पचरगी।

तप इमरत फल स्वाद सुरंगी,

हुलसी सुमत प्रिया शिव संगी ॥ भल ॥ ॥४॥

सवत उगणीसे तीयालीस का मे,

जैपुर चौमासे रिख आया।

भव दुःख सचित पाप पुलाया,

निस दिन रग 'सुजाण' मनाया ॥ भल ॥ ॥५॥

— — —

४६

[चाल — जावाणो जीवाणिया म्हाने पोमनी लडेलो"]

काइ न विचारी भोरा, काइ न विचारी,

म्हार पितानी मारी काई न विचारी ॥ टेर ॥

नहीं प्रेम किसी का कहना, पर अवगुण कभु न गहना।
अपना निज गुण में रहना रे ॥ सद्गुरु ॥२॥
करो सब जीवन की रक्षा, यह सुगुरु सीख धर सना।
आगे सुख होसी तना रे ॥ सद्गुरु ॥३॥
मोह पिंजर तोड़ तू सैना, अब धन सम्पत् कृमि फैना।
या ते पर भव सरषी लेना रे ॥ सद्गुरु ॥४॥
घट ज्ञान रोशन करवैना जाके भ्रम तारीकी मैना।
"सुजान" समकित गुण गहना रे ॥ सद्गुरु०॥५॥

५२

धर्म का मौल

चाल —"तेहीज

मत चूके धरम का मौल्य कुच रख धरम बिन तोला रे ॥मत०॥टेर॥
सही परभव आस्याँ नहीं मोल्य, विन महिमा महल तज रोला।
तूँ—मकर प्रेम रस पोला रे ॥मत ॥१॥
मेरा रूप रंगीला चोखा इस आय करे मन आला।
भय एक से एक मनाला रे ॥मत० ॥२॥
देव गुरु धर्म निर्मोला, पक्षपात सिपा स्वाव मोला।
"सुजान" जिनंद यह बोला रे ॥ मत ॥३॥

---

१ चोला—चौगना [मदन करना]

५०

[चाल —"जोबन धन पाहुणा दिन च्यारा, याका गर्व करे सो गीवारा"]

चेतन तू तन धन में कहा फूल्यो, काई भयो रे रान अदूल्यो ॥ चेतन तू० ॥टेर॥

कबहु रक होय भिक्षा खातर, गलियन मे डम डूल्यो।
कबहु क राजा होय राणिन सग, खाट हिंडोले झूल्यो ॥ चेतन०॥१॥
कबहु क चगी चाल मनोहर, कबहु क होय गयो लूल्यो ।
माखी, तीड, पतग्यो होयकर, उड़त जेम अकतूल्यो ॥ चेतन०॥२॥
जात जोन चाकी नहीं राखी, गैंद दडी जिम रुल्यो ।
अब मत धर्म मिल्यो कर दिलधर, किस्मत खजानो खुल्यो ॥ चेतन० ॥३॥
नरक निगोद आदि दुख भोगे, सो सबही अब भूल्यो ।
कहत "सुजाण" गम्म कर फन्दुयक, क्यू हो रह्यो राह भूल्यो ॥चेतन०॥४॥

५१

सद्गुरु के वचन

[चाल —"रगीला मुखड़ा"]

सद्गुरु के समझा वेना, ज्यू पाओ परम सुख चैना रे ॥सदगुरु ॥टेर॥
नला सुध निनमन के एना, अन्तरघट खोलो नैना ।
निज धम-ध्यान मग पहना रे ॥ सद० ॥१॥

नहीं मैंम किसी का कहना, पर अवगुण कबहु न गहना।
अपना मिज गुण में रहना रे ॥ सद्गुरु० ॥२॥
करो सब जीवन की जयना, यह सुगुरु सीख पर चलना।
आगे सुख होसी तेना रे ॥ सद्गुरु ॥३॥
मोह पिंजर तोड़ तू सैना, लख मन सम्पत् वृषि कैना।
या ते पर भव सरची लेना रे ॥ सद्गुरु ॥४॥
घट ज्ञान रोशन झलकैना जाके भ्रम वासीकी मैंना।
"सुजाण" समकित गुण गहना रे ॥ सद्गुरु०॥५॥

४२

धर्म का मौख

तर्ज —"तेहीज"

मत चूकि धरम का मौखा कुल राखे धरम बिन धोखा रे ॥मत०॥टेर॥
सही परभव जायां नहीं चोखा बिन महिमा महत्व तज गोखा।
द्यूँ —मकर प्रेम रम पोखा रे ॥मत ॥१॥
मेरा रूप रगीला चोखा इम जाण करे मन जोखा।
मया एक से एक अमोला रे ॥मत० ॥२॥
देव गुरु धर्म निर्दोखा, पक्षपात किवो सब म्होखा।
"सुजाण" जिनंद कह मोक्ष [१] रे ॥ मत ॥३॥

---

१ धोखा—दूखना [यत्न करना]

५३

(राग–आसावरी)

[चाल —अवधू हम विन जग कछु नाही, जगत हमारे माही]

चिदानन्द तू कहा भयोरे नचीता, तेरा जनम जाय सहु वीता।
चिदानन्द० ॥टेर॥

पापारभ म पच पच प्राणी, खोया काल अतीता।
बारबार सद्गुरु समझावे, क्यू जाय भरया माहि रीता ॥चि०॥१॥

जन्म जरा मरणरा जग म, सम्प्रति लग्या रे पळीता।
काम अन्ध नर कछु ना देखे, मोह छक छाक छकीता ॥चि०॥२॥

भोग श्मसान शास्त्र के अन्ते, वहु जन होय भयभीता।
मामति जो सर्वदा रहे तो, भवार्णव नाय भमीता ॥चि०॥३॥

लाक रिझावण पेट क अर्थे, वाँचे भगवत् गीता।
दया धरम का मर्म न लखिया, तो होसी फेर फजीता ॥चि०॥४॥

राजा राजकुमर राजन पति, तिरिया जग जोग विदीता।
'सुजाण" जोगाभ्यास साधन में, मस्त मन मारो मारो पीता
॥चि०॥५॥

१ पीता=स्वभाव

५४

अहिंसक यज्ञ

चाल —"तेहीज"

अवधू एसा यज्ञ रचाओ, तासे पार भवोदधि पाओ रे ।अवधू॥टेर॥

अनीत वेदिका निश्चत करने तृष्णावु छिनकाओ।

देवल धर्मे देह रूप रखकर तप अग्नि प्रजलाओ रे ।।अवधू ।।१।।
काम-क्रोध का दुसमन भागक, इन्द्रिय-विषय पशु लाओ ।
दुर्मत स्नेह रूप घृत सींची चढ़ाओ लोभ जलाओ रे ।।अवधू०।।२।।
हिंसा होम आहुति देकर, स्वाहा शब्द सुनाओ ।
शान्ति-पाठ नवकार-मंत्र पुन दीपक ज्ञान जगाओ रे ।।अवधू०।।३।।
श्रीफल कुंकुम पान सुपारी माला गुण दरसाओ ।
सामग्री सब मेलि यथारथ अहिंसा धर्म जमाओ रे ।।अवधू०।।४।।
हिंसा जग भवफल दुख दाता समझाना धम समाओ ।
"सुजान" जीव जतन क्या करतो होवे हर्ष बधाओ रे ।।अवधू।।५।।

५५

चाल—"सोहनी"

समझ ऐसा नर भव मांय गमाना, या से लगी मोक्ष पद पाना ।
समझ० ।।टेर।।
तन धन यौवन जोवन चंचल ये थिर हु न रहाना ।
हीनेन्द्री ना करना क्या जोड़ धर्मे तांड़ धन भाया ।।समझ०।।१।।
दरखी भोग किम्पाक फलोपम स्वाद लगी मिष्टान्न ।
प्रगम्य प्राप्त पहिर कर देवे मूरख मन ललचाना ।।समझ०।।२।।
कूड़ कपट कर चित कू खोवे पर रासे धन जाना ।
लक्ष्मी गर्वित सब जग खोवे क्या राजा क्या राना ।।समझ०।।३।।
दरया माल मद नाम न खोवे सरव मयी गिठवमा ।
तू थिर माल करी किम बैठयो, होयगा कूच पयाना ।।समझ० ।।४।।

भू–धन–दास–आवास धरे रहे, हय–गय–रथ जोधाना।
जग[1] ग्रासी से सहु जन त्रासे, इन्द्र चन्द्र मरदाना ।।समक०।।५।।
धरम कार्य में विलम न कर रे, मोह कर्म नींद उडाना।
तन छाया[2] मिस तोय तकत है, काल अरि अवसाना ।।समक०६।।
मात, तात, युवती, सुत, बाधव, स्वप्न भ्रम लखवाना।
आन जान एकाकी फिर क्यूं, मोह-फंद पग उलझाना।।समक०।७।।
तन वेदन तनु जनु न बटावे, कहा सूर सुलताना।
सुख दुख दाता भोक्ता आतम, आगम ज्ञान दृढाना ।।समक०। ८।।
लाला पान बाल विभ्रम तन, अ गुष्ठा चुसलाना।
म्थान पान मन मनमाने तैसे, जग सुख भर्म लुभाना ।।समक०।।९।।
मृग पतग-अलि-सफरी-गज, एक एक वश न दुःख थाना।
पचेन्द्री वस पड़कर प्राणी, क्यों न सहे दु ख नाना ।।समक०।।१०।।
देव गुरु धर्म ओलख हितधर, तजकर तान तोफाना।
धन यौवन मद अध होय मत, भर गुण ज्ञान खजाना ।।
।।समक०।।११।।
यो ससार असार दु खालय, जिन धर्म सार लखाना।
अमर मानव भव वाच्छा राखे, तो सठ केम ठिगाना ।।समक०।।१२।।
नर भव फल जिन धर्म, सेव बुध, ज्यू पहुचे निर्वाण।
पूज विनयचन्दजी परमादे, "सुजाण" उपदेश सुनाना ।।
।।समक०।।१३।।

१—काल। २—छाया के बहाने।

खान प न पैछाण अनिचारण, बोलन चलन पिछाना।
नाना विध मुग्धापन लच्छण, धरे नहिं काना ॥सुगण०।७॥
कुल मर्याद मेटकर सेवे, सप्त व्यसनादिक नाना।
हरेक बात मे अत ताने ते, सो भी मुग्ध गिणाना ॥सुगण०॥८॥
मलयाचल चन्दन तरु पासे, अन्य तरु चन्दन कहाना।
तैसे सत सगत ते दुर्जन, सज्जनता पद ठाना ॥सुगण० ॥९॥
मूल-मुग्धता ताकू कहिये, आतमगुण विसराना।
जड पुद्गल सग लीन होय कर, भव दुःख कूप पडाना।
॥सुगण०॥१०॥
तज दुर्ध्यान, सुध्यान सुसमता, "सुजाण" यह चित्त चाना।
पून विनयचन्द जी प्रसादे, हित शिक्षा अनखाना ॥ सुगण०॥११॥

५७

सुगुरू-महिमा

चाल-तेहीज।

भैया मोक ऐसे देव सुहावे, अवरन को चित्त चाहवे।
जगदानन्द, परमात्म प्रभु पद, सेवत पाप पुलावे ॥भैया०॥१॥
वैर कषाप नहीं घट त्राके, रति अरति नहीं आवे।
निद्रा, मद चोरी मच्छर, भय, प्रेम हास नहीं पावे ॥भैया०॥२॥
शोक, अज्ञान प्राणवध क्रीडा, वचन न झूठ वदावे।
ये अष्टादश दोष रहित है, चोसठ इन्द्र शिर नावे ।भैया०॥३॥
केवल दसण नाण जुगत जिन चराचर भाव बतावे।

चतुर्विध संघ स्थापन करने वाणी रस बरसावे ॥ मैया० ॥४॥
वाणी विच पैंतीस वर्ष ? मुयणों रूप न थावे ।
चौतीस अतिशय सहित मुन कर, परमानन्द प्रगटावे ॥मैया०॥५॥
राग द्वेष नहीं रच ही जाके, जग जस ख्याता जावे ।
अनन्त चतुष्ठय कर अति दीपे तारण तिरण कहावे ॥मैया० ॥६॥
तन्या शीस मन कर प्रभु सुमरे वीतराग पद ध्यावे ।
सो नर स्वर्ग राज–रिघ भोगी अजरामर होय जावे ॥मैया ॥७॥
सावस अठोत्तर सम्वत पाग गम्य हमारो धरावे ।
'सुभाग' ऐसे देवाधिदेव के चरणों शीश नमावे ॥मैया० ॥८॥

—

१८

चाल-(आज नगरया में हरष बधाई समोशरण की शोभा रचाई)
आशा नदी है अति गहना, ताते पार उतरिया रे सैना ॥टेर॥
मनोरथ जल परिपूर भरया है, पार गहेक न मिलत के फेना
॥१॥आशा०॥
तृष्णा लहर तरंगता विच भमर वृतु न चिन्ता तट अहना ।
गणधिक माह मगर निवासन माया गुल घरतम बग रहना
॥२॥आशा ॥
धीरज द्रुम से मूल विनासक मोह आवर्तम उरध सब ऐना ।
सो 'सुभाग' सद्गुरु प्रविनासो, पावन परम महासुख चैना
॥३॥आशा०॥

खान पान पैछाण अविचारण, बोलन चलन पिछाना ।
नाना विध मुग्धापन लक्षण, धरे नहिं काना ॥सुगण०।७॥
कुल मर्याद मेटकर सेवे, सप्त व्यसनादिक नाना ।
हरेक बात में अत ताने ते, सो भी मुग्ध गिणाना ॥सुगण०॥८॥
मलयाचल चन्दन तरु पासे, अन्य तरु चन्दन कहाना ।
तैसे सत सगत ते दुर्जन, सज्जनता पद ठाना ॥सुगण० ॥९॥
मूल–मुग्धता ताकू कहिये, आतमगुण विसराना ।
जड पुद्गल सग लीन होय कर, भव दुःख कूप पडाना।
॥सुगण०॥१०॥
तज दुर्ध्यान, सुध्यान सुसमता, "सुजाण" यह चित्त चाना ।
पूज विनयचन्द जी प्रसादे, हित शिक्षा अवधाना ॥ सुगण०॥११॥

५७

सुगुरु–महिमा

चाल–तेहीज ।

भैया मोक ऐसे देव सुहावे, अवरन को चित्त चाहवे ।
जगदानन्द, परमात्म प्रभु पद, सेवत पाप पुलावे ॥भैया०॥१॥
वैर कषाप नहीं घट वाके, रति अरति नहीं आवे ।
निद्रा, मद चोरी, मच्छर, भय, प्रेम हाम नहीं पावे ॥भैया०॥२॥
शोक, अज्ञान, प्राणवध क्रीड़ा, वचन न झूठ वदावे ।
ये अष्टादश दोष रहित रू, चोसठ इन्द्र शिर नावे ।भैया०॥३॥
केवल दसण नाण जुगत जिन चराचर भाव बतावे ।

सब जग स्वारथ केरे सनेही स्वारथ बिन सहु ताणे ताना।
इनके भर्मपेच नहीं माना, निज आतम गुण रूप समाना
॥क्या ॥२॥
सब जग जन्तु ने सुख व्हालो दुःख नहीं चाहत जगत सयाना।
अपना प्रान समान ध्यान गिन पद् जीव जतन करो मतिवाला
॥क्या०॥३॥
कर कछु त्यगा धरत सुध समता तज ममता तन मन तोफाना।
'सुजाण' कहे आतम वश कीजे जो चाहे परमानन्द पाना
॥क्या०॥४॥

६१

मैं मोरा आतम नहीं चीन्ही कोई अजानी करम फल हीनी ॥टेर॥
बालपणों रामत म खोवो जोबन मद तृष्णा तरुणीनी।
वृति लालच लाग्यो बृधापन सब-सगत म करी करमीनी
॥मैं मोरा ॥१॥
कला बहोत्तर सीखके मरनी, धरम-कला न करी रंग भीनी।
एक कला बिनु सब ही निकला केवल नरक सही वप कीनी
॥मैं मोरा ॥२॥
परनारी सग रोग गिरमता देही होय गई छरा छीनी।
चोरी हाँसी कर के नाना, तन चाखे पछताई किम कीनी
॥मैं मोरा॥३॥
कूड़ कपट कर माया मेली, कलावत बात बताई भीनी।

५६

राग—तेहीज

समय वृथा मत खोय सियाना, प्रभु भजवे का मिलगया टाना ।।टेर।।
पच थावर विकलेन्द्री भयो जद, प्रभु पद रूप न रच पिछाना
।।समय०।।१।।

यो ससार गहन भव सिंधु, अब तिर पार उतर सुख पाना ।
पंचेन्द्रिय वश कर भज प्रभु कू, अनुभव रग चढे गुण नाना
।।समय०।।२।।

सत्य जडी सतगुरु बगसाई, प्रवचन सार सुधारस खाना ।
ज्ञान प्रबोध मदैव सुमति धर, जिनपद ध्यान 'सुजान' लगाना
।।समय०।।३।।

६०

चाल–(राम कहो रहमान कहो, कोउ पारसनाथ कहो कोउ विरमा।)

क्या इस जग विच मोहब्बत लाना,एक दिन छोड़ अकेला जाना।।टेर।।
किनके मात पिता सुत सगी, तज अर्द्धांगी अलग सिधाना
सराय के मेला सम मेला, होगर क्यों अति अधिक लुभाना
।।क्या०।।१।।

चक्री हरि–हलधर पाण्डव से, थिर न रहे कोई राजा राना ।
अपनी अपनी बार बजाकर, छाड धन माल ठिकाना ।।क्या०।।२।।
झूठा जाल जान दुनिया का, काल अबाधा पूरन थाना ।
उस दिन होगा सकल विराना, तो इतना क्यो प्रेम बढाना
।।क्या०।।३।।

सत्य धरम की गैल चलाओ कुमति कुरकी खोय ।
अन्तर ग्यान निचोकर छानो तत्र ज्ञान को तोय ।।अनुभव०।।२।।
त्याग भाग वैराग अमर फल, चाखत चाखत चाव मोय ।
"सुभाग" सुरत-ज्ञान मोतियन की अनुभव-लड़ियां पोय
।। अनुभव० ।।३।।

६४

चाल-पूर्ववत् ।

अनुभव लगन लगी गुण रंग ।।टेर।। अनुभव ।।
कुमत कुपातर को संग छूटयो सुमत लगी चित चंग ।।अनु ।।१।।
अनन्त गुणन की मैं रसा सु पद चाख्यो शुभ ढंग ।
मिल पर गुरु की ओलख पाई सत संगत परसंग ।।अनु०।।२।।
जिन-वाणी प्रगटी गुण-गंगा नाय सवायो अङ्ग ।
"सुभाग" ज्ञान सुधारस सींची निर्मल करो सर्वंग ।।अनु ।।३।।

६५

अनुभव महिमा

चाल—पूर्ववत्

अनुभव तेरी महिमा कही न परे ।।टेर।। अनुभव०।।
अनुभव ज्ञान निधान निजातम संत महन्त भरे ।। अनु०।।१।।
अग्नि चोर जलते नहि जिनसे जल कर कोई न जरे ।

अति चतुराई महादु ख दाई, तेरी मति कितगई रे सजीनी
॥तैं भोरा० ॥४॥

पट् रस खान पान तन पोख्यो, न करी दया दुर्बल दरदीनी ।
ईश्वरता मद गाफिल हो कर, भक्ति न कीनी ते जिनजी नी
॥तैं भोरा०॥५॥

पलभर में परभव उठ जाना ताकी मिसल नहीं कछु कीनी ।
'सुजाण' कहे तू खोई धरम विन, सम्पत सुरगत शिव पदवीनी
॥तैं भोरा०॥६॥

६२

राग—कल्याण

मन रे तू सुधमति आन सयान ॥टेर॥
परम प्रमोद बोध की बतिया, उर धरो धर कान ॥मनरे०॥१॥
चेतन, ब्रह्म, अमल, अविनासी, अन्तर ज्ञान विज्ञान ।
जड सगत त भ्रमण होत है तोहु न तजत कुवान ॥मन रे० ॥२॥
आत्मिक सुख आनन्द प्रगट्या, जड़ चित होय 'सुजान
अलख निरजन ध्यान पलक मे पावे पद निर्वान ॥मनरे० ॥३॥

६३

अनुभव मित्र

अनुभव तुम सम मित्र न कोय ॥टेर॥ अनुभव ॥
रोग उपाद तुम सम नाहीं अन्तम करने जोय ॥ अनुभव ॥ १ ॥

केवल दरसण सुध मन राखी राज रिद्ध प्रगटाई ।
वर्धमान देशना में गाई ॥ निशिभ ॥५ ।
एक बरस के त्याग छमासी–तप फल ज्यों सब पाई ।
निशि भोजन बहु पाप रूप सम त्याग करो चित ल्याई
सुगण पद सीख सुनाई । निशिभ ॥६॥

६७

चाल–मोहमन क्यों सुमरो भगवान

जगबिच कौन सगाई तेरो ।
कौन सगाई तेरो जग बिच कौन सगाई तेरो ।।टेर।।
मात तात सुत सेज सहोदर, सुपना का सो मेरा ।।जग०।।१।।
बिछुरे पंखी मिले वृक्ष पर रजनी वास बसेरो ।
भोर भई सब उड़ उड़ जावे त्यों तू मत्त मेरो[1] ।।जग ।।२।।
मतलब की मनुहार जगत में क्या दूरो क्या नेरो ।
बिन मतलब कोई मारन पूछे, फिरत गलियों बिच डेरो ।।जग ।।३।।
थोड़ा जीवन काज करे नर, बांधे बैर घनेरो ।
बावलो ऐसा मुश्किल पड़सी समझ क्यों न सबेरो ।।जग ।। ४ ।।
सुख दुख संचित करम कमाई, अरथ मात रस पेरो ।
तुम बिन कौन मिटावे मेरो, आठ करम दुख फेरो ।।जग ।।५।।
प्रभु सब तज मन कुमति साई मोह मिथ्यात अन्धेरो ।
मन को मैल मिटयां बिन भाई कैसो होय सबेरो ।।जग ।।६।।

---

१ सम्मिलित १ भगवान

ज्यू खरचे त्यू अधिक विवर्धि, परमानन्द करे ॥अनु०॥२॥
और धन में दाता बहुला, सप्त सीर उचरे ।
"सुनाण" जिन-धन हेर हिया में, भय जल वेग तरे ॥अनु०॥३॥

६६

रात्रिभोजन निषेध

राग—काफी—होली । चाल—विषया को संग निवारो ॥

निशि का तज भोजन भाई, पातिक-पिण्ड जाण सदाई
॥निशिका०॥ टेर॥

पीपिलिका—भक्षण होय मति मन्द, कोढ मकडी थी थाई ।
जू के पडिया पेट—जलोदर,मक्षिका वमन कराई ।
विच्छु ते काल सहाई ॥निशिका०॥१॥

माखी, माछर, पतग्या परमुख, पडे भाण मे आई ।
त्रस जीवन को भक्ष निर्वंछन, भोजन अन्ध बताई ॥
समझकर दया छिट काई ॥निशिका०॥२॥

चिडकला, काग, कपोत, कमेडी, रैन चुगण नहीं जाई ।
चातक हायकर दिल नहिं सोचे, कहा तैं नर देह पाई ।
शरम कछु उपजत नाई ॥निशिका०॥३॥

अन्न—आमिष वारि-शोणित सम, अन्य मत में दरसाई ।
कपाल स्वपल समोपम दूपण, मार्कण्ड पुराण सिखाई ।
करो मत दुष्ट कमाई ॥निशिका०॥४॥

यामिनी—भोजन भूम भयकर, इम आपद पद ठाई ।

समकित खेत समान धांगरा सप्त भय पोल विशाल ।
महाज्ञान रूपी पचरंग मता दान-ध्वजा लहकाय ॥ चे ॥ २ ॥
सप्त-विभक्ति रूप चारियां शुभ प्रज्ञा शुभ थान ।
भाई फिरसी मग वरगान सूत्रार्थ रतन री खान ॥ चे० ॥ ३ ॥
श्रुत-आचार सरल मत सड़क चड मति चौपड़े बनान ।
अहिंसा पथ असल दुकाना नाम टेशन असमान ॥ चे ॥ ४ ॥
नाना-गुण-जन बसत धाम द्विध दुविध परम कुबेर धाम ।
वापी मन-जल गुरु मुख दू दर्पा कर अमरत रस पान ॥ चे० ॥५॥
क्षमा-रूप किरना मय सुन्दर तप जप महल रचान ।
शांति-परम के साकी झरोखा निवत नोबत मधुर गान ॥ चे ॥६॥
समय-कपोत पवटा गरखारे मन खोले मकसान ।
सुमन सेजरी सौरभ माही सुमत सु मीत सगाम । चे ॥७॥
प्रवचन अष्टतनी मठ कोमल पर उपगार प्रधान ।
बावन भाग की बावन क्यारी विरक्त माल दीवान ॥ चे० ॥८॥
जिनागम हस्माली-सिक्का चासे भर श्रम रतन सवाम ।
कोम्भास साद सुरत सुमरी, दोष मक्खी ढान ॥ चे ॥९॥
पचोस योग-संग्रह सम्म रोपी राजधानी रचवान ।
उपशम-राग-जम निखी विभावत सिंहासन शुभ ध्यान
॥ चे १० ॥
वैराग्य-शील वस्त्र भरख पेरी क्षिम-भक्ति मुकुट बरान ।
सम-दम छत्र चामर शिर सोहे बैठ्यो चेतन सम भाम ।
॥ चे ॥११॥

१—च भी

श्री जिन धर्म "सुजाण" सखाई, आतमा सुख हेरो।
दान, शील, तप, भाव अराधो ज्यू होय तुरत निवेरो ॥जग०॥७॥

६८

चाल-"तेहीज"।

समझनर आतम हित अनुप्रास।
आतम हित अनुप्राय, समझ नर० ॥टेर॥
गफलत में क्यों खोवे निशदिन, आयु अपर वल मास॥समझ०॥ १॥
संचित पाप उदय गत आया, देत न को विसवास।
एक अकेला आप किया कृत, भोगे भव दुख रास ॥समझ०॥२॥
सारभूत जिन धरम जगत में सेवत ही सुख तास।
दश विध बोल मिल्या मन-गमता, अब क्यू जाय निरास
॥ समझ० ॥३॥
तप-जप-व्रत सुकृत शुभ किरिया, कर कछु ज्ञान अभ्यास।
परमानन्द होयगो तब ही, 'सुजाण' शिव पुर वास ॥समझ०॥४

६९

चाल —"तेहीज"।

चेतन राय निज-गुण नगर वसान, ज्यू होवे कल्याण।
चेतनराय ॥ टेर ॥
ज्ञानानन्द बागायत रा फल, स्वाद लगे मिष्टान्न।
समता रस सागर भर वारु, कूप गहन बुधठान ॥ चेतन० ॥ १ ॥

समकित कोट प्रधान कांगरा सप्त नय पोल पिछान ।
महाव्रत रूपी पचरंग झंडा धर्म-ध्वजा लहकान ॥ चे० ॥ २ ॥
सप्त-विभक्ति रूप बारियाँ सुथ प्रभा शुभ भान ।
खाई फिरती मग वरगन सूत्रार्थ रतन री खान ॥ चे० ॥ ३ ॥
सम-आधार सरल मत सड़क चत्र मति चौपड़े बनान ।
अहिंसा पद बसत दुकाना, दाम रोशन असमान ॥ चे० ॥ ४ ॥
नाना-गुण-धन बसत धाम दिव दुविध परम सुजस धाम ।
वापी प्रश्न-नद गुरु गुण दृढ़ता वर अमरत्व रस पान ॥ चे० ॥५॥
क्षमा-रूप किल्ला मन सुन्दर, तप जप महल रचान ।
शान्ति-धरम के बाली झरोखा नियत नोबत मधुर गान ॥ चे० ॥६॥
समय-अपवीत बखट गरणाटे मत सोभे अवसान ।
सुमन सैजरी सारम माही सुमन सु भीव लगान । चे० ॥७॥
प्रवचन अष्टवर्षी मठ क्लेस्सक पर दरगार प्रधान ।
पावन भाख पी पावन कथाख्य विरक्त भाव दीवान ॥ चे० ॥८॥
जिनागम टकसाली-शिक्षा चाले भर भ्रम रतन खजान ।
कान्याल साथ सुरत सुमती, तोप दसस काम ॥ चे० ॥९॥
बत्तीस योग-संग्रह सम्य रोपी राजधानी रचवान ।
सम्यक-ज्ञान-क्रम सिंही सिंहासन सिंहासन शुभ ध्यान
॥ चे० ॥१०॥
वैराग्य-शील बखर मरण वैरी जिन-भक्ति मुकुट बतान ।
सम-दम छत्र चामर शिर सोहे, बैठ्यो चेतन सम मान ।
॥ चे० ॥११॥

१—चंगी

त्रिविध-भावना सभा सुरंगी, समक्त जुड़ी गुणज्ञान ।
सप्त-भंगी की सप्त ड्योढ़िया, उपशाम दरवान खबरदान
॥ चे० ॥१२॥

विनय-नफर[२] कहे शहर घेरियो, मोह नृप करे तोफान[३] ।
विवेक उमराव हुकम ले उठ्यो चउ बुद्धि सेना सभान
॥ चे० ॥१३॥

शुक्ल-ध्यान गजराज चढियो, क्रिया करवाण मिलान ।
संवर बक्तर कस जाय लड़ियो, सूरा को सुलतान ॥ चे० ॥१४॥
जोर देखी तोर उतरयो, मोह-दल सर्व भगान ।
"सुजाण" ऐसो राज करे सो, पावे पद निर्वाण ॥ चे० ॥१५॥
उगणी सै छप्पन सन् बड़लू, जेष्ठ सुमास रहान ।
पूज विनय चन्द जी प्रसादे, आतम गुण प्रीति दृढ़ान ॥ चे० ॥१६॥

७०

ज्ञान बाग

(दोहा) राग द्वेष कू छार दो, करे गुनन की ह्वान ।
अनुभव समता चमन में रमण करो मतिवान ॥ १ ॥
चाल—"कर मन अजित जिन को ध्यान" ।
अनुभव ज्ञान बाग की बहार, अनुभव ज्ञान चमन की भार ।
घट में लगाओ गुलजार ॥ अनुभव० ॥ टेर ॥

---

२ सेवक. ३ उपद्रव ।

स० न बनात ज्यू जन्तु जगत मे, जतना जुगत पग डार
॥ अ० ॥८॥

शील–मण्डप नव बाड–लता कर, लह झड सोहे सार ।
सुमति–प्रिया–सग सज चेतन बैठ्यो, हो रह्या मगलाचार
॥ अ० ॥६॥

भाव चोपड दोऊ हिल मिल खेलें, तृतीय–रतन पासा ढार ।
सोलह कषाय की नरदा[1] मारे, कर्म रिपु से जीते रार
॥ अ० ॥१०॥

या–विध केल करे हस राजा, अध्यातम बाग मझार ।
"सुजाण" संवेग आराम रम्या सु, उतरे भव जल पार
॥ अनु० ॥११॥

७१

दया धर्म की पुष्टि पर स्तवन

राग विहाग—' भेष धर याही जनम गमायो

समझ नर षड्जीव यतन कराना ।
षड् जीव यतन कराना ॥ समझ ॥ आकडी ॥
जहा हिंसा तहा अधरम मानो, दया जहा धर्म आना ॥समझ॥१॥
धरम धरम सब कोइ जन भाषत, धर्म का मर्म न पाना ।
मूढ रूढ–ग्रहि हिंसा थापे, कुगुरु के वह काना ॥ स० ॥२॥
अहिंसा लक्षण धम जानो, सब मत माहि बखाना ।

---

१ चौपड की गोट

हिंसा-यज्ञ करि[1] स्वर्ग जात कहे तब नरक का कहां जाना
॥ सम ॥३॥

जीव हणी अनुमोदन करने हिंसा धर्म सुनाना
निरपेक्षी के वचन न माने मिथ्या भ्रम भुलाना ॥ सम० ॥४॥
सोम-क्रिया पालक धर्म दास लाभ[2] और सुनत धुपाना ।
प्राण को मार प्राण मेघाली अनुकम्पा घट लाना ॥ सम० ॥५॥
अपना प्राण जगत ताहि प्यारा वैसे सब समझाना ।
कीटक-इन्द्र-जीवन सब चाहे जिनवरजी फरमाना ॥ स० ॥६॥
कंचन-मणि-मुक्ताफल-भूषण-गो-गज-रथ है दाना ।
अभय दान के तुल्य न लागे वेद पुराण कहाना ॥ स ॥७॥
तीरथ-स्नान पूजा न अभिषेक फल इक जीव बचाना ।
जीव दया सम धर्म न दूजो जिस का मरम मिटाना ॥ स ॥८॥
नेम दयालु पशु करुणा करि तोरण से फिरवाना ।
धर्म रुची कीन्धी करि करुणा कडुआ-जहर-तुंब खाना
॥ स ॥९॥

घोर-कष्ट सह्यो मेतारज मुनि उ-पथ न बताना ।
मेघ रथ राय परेवो राख्यो तीर्थंकर गोत्र बंधाना ॥ स ॥१०॥
गज-भव मेघकुंवर ससला की, अनुकम्पा बचवाना ।
काष्ठ-नाग युग जलता उबार्या पार्श्व नाम मंत्र दाना
॥ स ॥११॥

हिंसा प्रचारक मिथ्यावाचक ते वसु-नृप नरक पठाना ।

---

१ पशुवध २ रक्त का कपडा

परवत आद नरक बहु पहु चा पाम्या दु ख अथाना ॥ म० ॥१२॥
रोगी सोगी बधिर पागुरो, अ ध कुष्ठ दुख नाना ।
जीव हिंसा फल जानी प्राणी, हिंसा धर्म[1] छुडाना ॥ म० ॥१३॥
सुन्दर अ ग बहुरग धर्म जस, सुख सपत सरसाना ।
अभय-दान शुभ-लक्षण फल सुण, अहिंसा-धर्म दृढाना
॥ स० ॥१४॥
ऐसी जान दया-धर्म दिलधर, निशदिन प्रभु गुण गाना ।
पूज्य विनय चन्द जी परमादै, 'सुजाण' वधै नितबाना[2]
॥ समझ० ॥१५॥

७२

चाल पूर्ववत्

सबही काम निकाम, धरम बिन सब ही काम निकाम ॥टे०॥
टुक लालच के कारण दौडे, विणजी करवा गाम ।
कावे बोझ उपाडे खरज्यू, सहेशीत तप घाम ॥धरम बिन०॥१॥
सगा सनेही सेण सलूणा, पुत्रादिक घरवाम ।
प्रेम मगन इन वस पड पावै, भव दु ख दुरगत धाम ॥धरम०॥२॥
मन गमता भोजन कर पोषी, करी चीकनी चाम ।
अन्त तन होयगी तन भस्मी, छाड सकल परियाम ॥ध०॥३॥
देश देशातर फिर छलबल करि, किया इकट्ठा दाम ।
आखिर व्याह विरथ म खोया, जगमें कीनो नाम ॥ध०॥४॥

---

१ हिंसामय धर्म २ अच्छी आदत

नाम दाम नहिं घटै कसलो चितमें चितै नाम ।
वे समझ्या मैं दरच मुदाया, भव किम रहसी माम ॥३०॥५॥
दया दान सुकृत जप तप फल करे न अवसर पाम ।
पंथा भ्रम परचा रहे मन ही धम सं धावे धाम ॥४०॥६॥
धरम शरम राखै मन मन मैं सुख संपत अभिराम ।
'सुखास' कहे जिन धरम करया मु पावे अविचल ठाम ॥७॥०

(इति)

७३

चाल पूर्ववत

वुधजन अवसर जान खोय मत वुधजन अवसर जान ॥टे०॥
काया माया बादल छाया, यह थिर नाहि रहान ।
धप अनिष्ट तज धर्म श्रेष्ठ भज ज्यों पावस सुख थान ।

।खोयमत । १॥

जन्म कुतान्त चरह सोग रोग भय जरा रूप विगमान ।
जैन सुबैन ऐ न जिन समझी निर्भय परम करान ।
खोयमत वुधजन अवसर जान ॥२॥
परम धरम को मरम न जाण्यों पुष्ट करया निज गात ।
कर्मे के सरम नहीं सुखम्यो जन दायो हाथ घतात ॥खोय मत ३॥
नामा कमा रामा धामा, चित धरची सुरम्यान ।

धरम करम की गम नहि किंचित मोहोटे र थिर कनात

॥ खोय मत० ४॥

आयस रैन दिन घूम न देखे, तू युग नाहि दिखात।
काल कराल व्याल प्रसियाते, मोहो छक छाक छुटात

॥ खोय मत० ५ ॥

चोगइ क्रीडा माहि चितानन्द, काल अनन्त भुलात।
गेंद दडी ज्यूं भ्रमण भई बहु, पाम्या दुःख अघात

॥ खोय मत० ६ ॥

दरशन ज्ञान चरण तप खप कर, जो सद्गति दिल भात।
आव रू वाव नाव मन चचल, पुद्गल सुख के मलिपात

॥ खोय मत० ७ ॥

मृत्यु देखी रुदन करे बहु, जनक नार सुत मात।
अग्नि-प्रक्षेपी दई जलाजलि, निज-घर आवे मात

॥ खोय मत ८ ॥

ऐसी जाण सुरत रख प्राणी, पुण्य पाप सग जात।
कहत 'सुजान' समझ उर अन्तर, धरम करया सुख थात।
खोय मत बुध जन अवसर जात।

७४

क्या करे विपयन मौज चिदानन्द क्या करे विपयन मौज ॥ टे० ॥
विषय भोग में हरखित निश दिन, छांड़ परम चित चोज।
सो सागर में डारत तज कर पाइन बांधे बोझ ॥ चिदा० १ ॥
ऐसे मूरख प्राणी जग में करत निज गुण मोज।
अमृत तज क्यों भाय विपय विष गुरु कम तक कहे ठोज
॥ चिदा० २ ॥
मोह निद्रा में गाफल मत रहे आतमीक गुण खोज।
कहत 'सुजाण' परम चिमत्कारा, ज्यूं अगन का रोज
॥ चिदानन्द ३ ॥

७५

चाल पूर्ववत्

'मत कर मन मगरूर मिजाजी मत कर मन मगरूर ॥ टे० ॥
गरब वात कोसे मत छकियो तेरा क्या मगरूर।
भाग-रग-भग भयो वैदन त ढड गयो मुख को नूर ॥ मिजा १॥
हाथी-घोड़ा-रथ-पायक वल, दौड़ दास हजूर।
मगध माय नहिं मायो जिन के तन में कठी सूर ॥ मिजा० २ ॥
सुख-शय्या सम क्याने पोढे पंखा पवन हिलोर।
पाप उदय-नाग आपा ने मर होगए आप मजूर ॥ मिजाजी ३ ॥

केइ केइ जुलमी जुलम करै अति, कर कर निजर करूर ।
हाकम हुकम अन्याय चलावे, ते दुख पावे पूर ॥ मिजा० ४ ॥
पचेन्द्रिय के प्राण लूट कर, मास भखै कई क्रूर ।
ते नर मुद्गर मार भोगवे, यम करे चकना चूर ॥ मिजा० ५ ॥
तन धन जीवन यौवन झूठो, इनका कहा मगरूर ।
'सुजाण' कहै सत शील धरम ने सू, प्रकटे पुण्य पण्डूर
॥ मि० ॥ ६ ॥

७६

चाल पूर्ववत्

मत खो नर भव ऐसो, प्राणी मत खो नर भव ऐसो ॥टे० ॥
कल्प वृक्ष सम धरम मिल्यो तुझ, सेवा सुख लहै, ऐसो ।
जिनगुण भक्त रक्त रहो निशदिन, समझ जिनागम रैसो ।
प्राणी मत खो० ॥ १ ॥
देश पर्यटन दु ख सहे नाना, करै इकठ्टो पैसो ।
खावण का सब सीरी जाणो, अघ फल तुम ही सैसो ॥ प्रा० २ ॥
अपनी उतपत जोरे भाई, गर्व करै तू कैसो ।
सूओ चूओ हार करी हुओ, फून चुवडा[१] (चुडा) घर भैसो
॥ प्रा० ३ ॥
कुल मर्यादा मेटी वरनी, हुओ अनारज तैसो ।

---
१ चाण्डाल

पापारम्भ से डरतो नहीं सब जीव दरद तुम जैसो ॥ प्रा ४ ॥
ज्ञान ध्यान नियमन व्रतावत भली तरह जो गहसो ।
'सुजाण' कहे समता पर भायवा मन वांछित सुख लहसो
॥ प्रा० ५ ॥

— —

७७

चाल पूर्ववत

किणविध होवे छूट करम को किणविध होवे छूट ॥ टे० ॥
दुष्ट करम-मन मुष्ट चमत्कार कियो वृष ने टूट ।
इस भव कुष्ट पुष्ट तन परभव पावस रहा भ ग छूट ॥ क० १॥
मेरवा सम कुल-बल-रूप करने बनगयो स्यालो सूट ।
माया दाट में दह थाट म लियो बारणामे बूट ॥ क २ ॥
गुणवता का गुण नहिं कीना अवगण भरया मूठ ।
इधर उधर की बात बणा कर, वाणी वाणी फूट ॥ क० ३ ॥
पट्–रसभोजन महल त्रिया सुख, राज करु बहु लूट ।
पार नहि भमे सर बनियो भाजुबल गयो लूट ॥ क ४ ॥
सत सगत को नाम न लीनो किस हाम बहे सुख लूट ।
'सुजाण' कहे सतरीस परम विम ज्यू टोला को फूट
॥ क ५ ॥

७८

चाल–पीकर प्याला हो मतवाला प्याला प्रेम दयारस कारे ।

गाफल मत रहे गर्भ दीवाना, पल भर का नहिं ठीक ठिकाना ।
गाफल मत रहे गर्भ दिवाना ॥ टेर ॥

काल करे सो आजहि करले, आज करे सो अब ही कराना ।
अब अब करता काल गबक ले, तो फिरये मुशकिल है टाना
॥ गाफल० १ ॥

एक काल तो काल परो गये, एक काल फिर काल ही आना ।
काल बिचाले आय फस्यो तू, इनसे किणविध छुटे पाना
॥ गाफल० २ ॥

इन्द्र चन्द्र–नागेन्द्र नरेन्द्र, काल से कोय बचा नहिं छाना ।
सबके ऊपर काल फिरत है, काल का घुर रह्या अजब निसाना
॥ गाफल ३ ॥

धर्म सामग्री नर भव नी की, नर भव से पावे निर्वाणा ।
ताते यो नर भव मत हारे, सुगुरु सीख उर धार सयाना ॥ग० ४॥

श्रेय काम में विघ्न बहुत है, पुण्य योग पाया अवसाना ।
धर्म चतुर्विध कर जिन-भाषित, ज्ञान दर्शन चारित्र तप ठाना
॥ गा० ५ ॥

कुगुरु मिथ्या अ व कूप डुबोवे, उनके पास कभी नहि जाना ।
धन यौवन का गर्व न लाना, चलनै गर्व पडे पछताना ॥ ग० ६ ॥

बालमीक गण की रुचि राखो प्रभु सुमरण चित ध्यान लगाना।
'सुजाण' सत करतूत सफल पे इनसे पाना अविचल थाना
॥ गा ॥ ७ ॥

७८

चाल—"समत मत की क्यों राख मन म तेरा हंस चाले०।
कुमति दूर कीजो राज पटकी इन्हें भरज-भरज रस झट को
॥ कुमति ॥ टेर ॥
आठ-पहर का पापणि दूती चाले कपटकी कट की।
पापारम की मति उपजा कर देवे नरक में पट की ॥कुमति ॥१॥
इसकी संग करो मत चेतन अब मन दे ी घट की।
हाथ पड्या अवसर मत चूको, जाय तीर म्यू सट की
॥ कुमति ॥ २ ॥
विषय कषाय मद निन्दा विकथा, पच प्रमाद रज मटकी।
धरम बीज खप कर कय अमो पाप रूप तुस फटकी
॥ कुमति० ॥ ३ ॥
विमल-विवेक विलोचन कुचिया सील हिया में सटकी।
'सुजाण' दुर्मति दूर करायडु समता रस को गटकी
॥ कुमति ॥ ४ ॥

८०

सुमति वाक्य

चाल—"अजी म्हारो पोंच्यो ढीलो छोड,
आलिजा म्हारी नींद तो गई"।

अजी थाने आई अनादि नींद, जरा टुक जोवोतो सही।
अजी थाने सुमति कहे कर जोर के, सन्मुख होओ तो सही
॥ अजी थाने० ॥ टेर ॥

मोह-मद छक रही नींद निवाणी, टोओ तो सही।
अजी जरा ज्ञान शुद्धोदक छाट, दृगन पट धोओ तो सही
॥अ० ॥ १ ॥

काल अनन्त दुःख देख पिया, फिर मोहो छो सही।
अजी इन कुमति मलिन सग बैठ, पैठ क्यूं खोओ छो सही
॥ अ० ॥ २ ॥

क्रोध कपट मद लोभ, विषय वस हाओ छो सही।
अजी यो चतुर-गति को बीज, चतुर किम बोओ छो सही
॥ अ० ॥ ३ ॥

सत-मत मुक्ता माल, प्रेम तर पोवो तो सही।
अजी या निज सुख सेज 'सुजाण', सुगण मन सोओ तो सही
॥ अ० ॥ ४ ॥

८२

मन को शिक्षा

चाल—"तेहीज"

अरे मन चंचलता तज वीर, रहो साहसवन्त सधीर ।
अरे मन चंचलता तज वीर ॥ टेर ॥
ध्यान छोड कर कपि जिम कूदे, नहीं लाजे मन कीर ।
चपला सम तू चंचल वाजे, लालच वडो अजीर ॥ अरे० ॥१॥
कबहु आनन्द अगन मावे, कबहुक दिल दिलगीर ।
कबहुकजोगी कबहुक भोगी, या तेरी तहरीर ॥ अरे ॥२॥
कबहु क्रोध करी कल-कल तो, जैसे तावो कथीर ।
कबहु समता सुख सागर को, पीवत ठंडों नीर ॥ अरे० ॥३॥
शब्द-रूप-गंध-रस-स्परसेरे, पेहरण चगा चीर ।
ममता गमता चाहे निश दिन, कहा कहूँ तुझ तासीर ॥ अरे० ॥४॥
सरल-स्वभाव राख मन मेरा, काटो कपट जंजीर ।
पर-जीव पीर लखया सु प्यारा, उतरो भव जल तीर ॥ अरे० ॥५॥
सार सुगण गण गुण महि करिये, उधम अधिक उदीर ।
"सुजाण' कहे नित रहो धर्म मे, आत्म ज्ञान उमीर ॥ अरे० ॥६॥

— —

८३

व्यवहार निषेध शिक्षा

राग—कुडरो

चाल—"गिर नारी की वता शोमया करारिका"।

जिया मत कर मिजाज जवानी का कोई नहीं है भरोसा जिन्दगानी का ॥ जिया० ॥टेर॥

गौर वरण पर झकि योवन वास फूले मत नहीं मोसानी¹ का ॥ जिया ॥१॥

धन-योवन अरु रूप-गरव पे स्थिर नहीं रहे कोई मानी का।
महा-मरकल में यातुल भये हैं, जग जीव बोध-मरदानी का ॥ जिया ॥२॥

वृथा मान मत राख मोरा आखिर वास मसानी का।
"सुजान्य" सुध जिन धर्म धरायो मारग यह मोक्ष निसानी का ॥ जिया ॥३॥

८४

चाल—पीजर प्याला हो मतवाला, प्याला प्रेम सुधा रस का ॥
तुच्छ जिन्दगानी माइ यानी, क्यों करता है बेईमानी ॥तुच्छ ॥टेर॥

---

१ मेरे बराबरी का

अधिका लेना ओछा देना, करके तकरिया अन्तर कानी ।
पर-वचन ग्रहे भया मूरमा, पिण ये कर्म महादुख दानी
॥ तुच्छ० ॥१॥

डाण चुरावे धडिया उडावे, भेल सभेल करे जिनमाने ।
दाव घात कर माया जोडी, यह माया तेरी थिर न रहानी
॥ तुच्छ ॥२॥

इक परवचन मह जग जन दाम्हें, तेरी बुद्धि कहो केम छलानी ।
छल बल कर क्यों जनम डुबोवे । चहिए तन वस्त्र पानी ।
॥ तुच्छ० ॥३॥

पर-धन चोरया चोर कहावे, जान दई जद टाट कुटानी ।
खाडा बेडी बहु दुख भोगे, तोहू न त्यागे मूरख प्राणी
॥ तुच्छ० ॥४॥

नारी जारी हाय वेनारी, गरमी आदि रोग दुख खानी ।
रगड भगड होय इज्जत जावे, तिनके मुख पर धूल पड़ानी
॥ तुच्छ० ॥५॥

अतिही जुलम अनीति न आछी, यम से जोर न चले मस्तानी ।
जीवदया रस प्रकट होय घट, धारो सीख सुगुरु मुख वाणी
॥ तुच्छ० ॥६॥

कुमति का मत दूर निवारो, "सुजाण" सुमत उर आन सयानी ।
दान-शील-तप-भाव आराधो तो तेरी नइया तुरत तिरानी ।
॥ तुच्छ० ॥

८६

चन्द्रगुप्त के स्वप्न

दोहा—"भद्रबाहु ऋषि आविया, पच सै मुनि परिवार।
फाडलियत वदन करी, पूछे स्वप्न विचार॥

चाल पूर्ववत्—"पखी पोषध सुपन पहल है, कल्प वृक्ष का डाल भगाना।
या को अर्थ पचम आरा के दीक्षा नहीं लेसी राजाना।
भद्रबाहु कहे चन्द्रगुप्त सुण पोड़से सुपन अर्थ कहू नाना॥ १॥
अकाले रवि अस्त भयो सुण, पचमें आरे केवल ज्ञाना।
तीजे चालणी चन्द्र विलोक्यो, समाचारी जू जुई थाना
॥ भद्र० ॥२॥
भूत भूतनी नृत्य वेद मैं, कुगुरू कुधर्म पाखण्ड वधाना।
बारे फण अहि पचमें पेख्यो, द्वादश काल कालान्तर पडाना
॥ भद्र० ॥३॥
देव-विमान फिरयो पट् सुपनें जघाचारण लब्धि विलाना।
उग्यो उकरडी कमल सप्त मे चार वरण में धर्म बखाना
॥ भद्र० ॥४॥
आज्ञा नो चमत्कार अष्ट मे, स्वल्पमात्र धर्म जु वरताना।
समुद्र शुष्क त्रिदश दक्षिण में, डोला जल ज्यू दक्षिण धर्म ठाना
॥ भद्र० ॥५॥
सुवर्णथाल मग खीर खात लख, उच्चकुल अर्थ नीज घर आना।

फरि–भाण्ड कपि सुपन इग्यार म होसी राज सुखो मलेछाना
॥ भद्र ॥६॥

ऋषि ग्रामी मर्यादा बार म कम मिल केन करे न जग्यसी पाना।
महारज वोलरिया वालरिया बुढा पेन्ग होसी साधु धर्म कराना
॥ भद्र ॥७॥

रतन म्हारा दीर्घ पञ्चसमें ताका मर्थ मयो मन कमा।
मरण सावर के साथ मावशा कम हितकाय न हुए भयाना
॥ भद्र० ॥८॥

राजकुमर पाजीम मान्ड जिनधर्म तज मिथ्यात दवाना।
करी करी चिन महागज पोडस मैं पञ्चमी काल दुखम समाना
॥ भद्र ॥९॥

स्वप्न मर्थ भद्रेश मुखी ने वैराग्य रूप रग चढ गया पाना।
हाथ जोड़ नमे मुनिवर से मयम लेयूं दिल हुलसाना
॥ भद्र० ॥१ ।

भद्रबाहु क है मोमा राजन यह अवसर चूका मत दाना।
राज पाट सब सुत न सौंपी दीक्षा ले गया अमर विमाना
॥ भद्र ॥११॥

महाविदेहमें माव मिथामी दिम बराग्य धरा मतिवान्य।
दया धम सत्य शोल आराधो निज आतम गुण मीम दमा (चा) मा
॥ भद्र ॥१२॥

व्यवहार सूत्र की चूलिका मांही यह अधिकार बहुविध माना।
पूज्य शिष्य "सुजान" शुभ मन सोलै सुपन का स्तवन सुणाना।
भद्रबाहु ॥ १३ ॥

८७

चाल—पूर्ववत्

घर में अरिजन वसत घनेरे, तू जानत है सनेही मेरे
॥ घर में ॥टेर॥

दारा सुत बाधव वित्त के हित, लिपट रहे बहु विध ललचेरे।
मिष्ट मनोज्ञ बात कर वल्लभ, तो धन लूटत, है ज्यू लुटेरे
॥ घर में ॥१॥

और कुटुम्ब चिपटे (निज) स्वारथ, माखी गुड चिपतटत ज्यू तेरे।
मकट परिया अलग होय सब, अन्त हि कठिन वखत की वेरे
॥ घर में ॥२॥

कामरू क्रोध लोभ ठग मोंह ठग, काय नगर में होरये भेरे[1]।
'सुजाण' इणसु बच निच गुण रज, तोसब काज सरे तुमफेरे।
॥ घर में ॥

८८

चाल—पूर्वषत

जगमराय विच लिया उतारा, यामे तू किनका कुण थारा
॥ जग० ॥टेर॥

सराय समघर बैने मुसाफिर, चउ-गई राहगीर बसबारा।
आयु-रैन थित वामो तामें, कुणसु खार धरे कुण प्यारा
॥ जग० ॥१॥

---

[1] इकट्ठे

मात पिता युवति सुत बन्धव भाव मिथ्या इन से परवारा
जिन से भाप फिर आवेंगे सब बिछरेंगे प्यारा प्यारा
॥ जग ॥२॥

ये मेरी जगनी बहना मानजी ये मेरी नारी ये मेरे सारा।
इस भव के सब नाते तजि, पर भव में कौन तुम्हारा
॥ जग ॥३॥

ये सब स्वारथ के रंग रसिया स्वारथ लग फिरे तुम लारा।
बिन मतलब जिनसे दुतकारे ये नहीं भारा ज्ञान डिगारा
॥ जग ॥४॥

मृत्यु ठाठ बन्या दुनियाँ का × जग मेला जैसे इठवारा।
धन माल सब धरया रहेगा उठ चलेगा जिय बिणजारा
॥ जग ॥५॥

तृष्णा-लहर समुद्र से निकली, लोभ धारा का जगत बढ़ारा
ता बिच बहरया सब ससारा फिर इनकू तरवे परवारा
॥ जग ॥६॥

विषय भोग में मन लम्बे न विषय कटुक फल विषसम खारा।
काम-कला गुण प्रगट करो घट प्रभु सुमरण ज्यो काम करारा
॥ जग ७॥ ज

त्यागी से पद पर शुभ सवत् भरत शुक्ल सम नगर मन्मारा।
पूज विनय चन्द्र की प्रसादे 'सुजाण' मम मेट विकारा
॥ ज ८॥

×—मां

८९

अथ शिक्षा का स्तवन

चाल पूर्ववत—'मानरे मान तू मेरी कही को।
गई सो गई अब राख रही को ॥ मान रे० ॥ टेर० ॥
अञ्जलि जलवत् जीवन जावै, अन्तर घट खोलो खिड़की को
॥ म० ॥१॥
बालपनो गम्मत मे खोयो, यौवन धन लग रह्यो रमणीको।
हाय अवस्था अफल बितानी, वृद्ध भयो न भज्यो जिनजी
को ॥ म० ॥२॥
सद् गुरु वचना कुशादे दाबे, मन गज वश कर तज कुमती को।
सुकृत सोदा कर सोभागी, 'सुजाण' सीख धारो सुलटी को
॥ म० ३ ॥

९०

अथ लावणी की चाल का स्तवन।

दोहा—'सोलै सतिया गुण भरी, भाखी जगदाधीश।
नाम लिया सुख सम्पजे, प्रकटे कोड जगीश ॥
सोलै सतिया सतगुणरतिया, शीलशिरोमणि सुखदाई।
महिमा मुखसे कही न जावे, नाम लिया पातक जाई ॥ टेर ॥
ऋषभदेव–धुया ब्राह्मी सुन्दरी, बाल कुमारी वरणाई।

६१

अथ उपदेशी लावनी

चाल–"तू धार हिये जिनवचन मीठा सुण सैणा २।
तुने (थने) हित धरदे उपदेश समझ गुरु वैणा ॥ टेर ॥
यो नरभव केरो दाव हाथ सु जावे,
क्यों विषय भोग किंपाक जहर फल खावे।
तू हस हस बाधे कर्म उदे जद आवे२,
फेर भुगतण को वेर रुदन दिखलावे।
तू अन्तर खोल कपाट देख निज नैणा।॥ तू धार० ॥ १ ॥
ये मात पिता तिरिया सुत सैण सगाई २,
जग झूठ कपट मुतलब की मचि ठगाई।
थारो सत्त सम्हाई धरम तजे मत भाई२,
करो दान शील तप नेम की सकल सजाई।
जिन मत का यही सार करो जीव जेणार ॥ तू ने० ॥ २ ॥
यो करमा केरो ख्याल कह्यो नहि जावे२,
जीव सुख दुख सचित पुण्य पाप फल पावे ॥
केई रोगी निरोगी रूप कुरूप कहावे२,
केई निर्धन केई धनवन्त गर्व नहिं मावे।
तू क्यों होरह्यो मजबूत किताहिक रहणार ॥ तू ने० ३ ॥
केई पण्डित चतुर विचक्षण वेत्ता वाजे२,
केई मूरख ठोठ लवार बोलता लाजे।
ये जगरित विरीत नाना विध छाजे२
"सुजाण" अथिर जग जान आतमा माजे।
ज्यो सेवे जिन धर्म शुद्ध जिन,का क्या कहनार

॥ तने० ॥ ४ ॥

९२

अथ धीरजता उपर लावनी

दोहा— अचल शृंग सम धैर्य तरु, बैठो शीतल छाय ।
शुद्ध समता गुण अनुभवो तज कर वेद कषाय ॥ १ ॥
चाल लावनी—मुख से बोली देश पराया । कहा हु तोसे नन्दरानी ॥
बड़ घरों के पक्षम लगाती । नये घरों की मसतानी ॥"
अस्थिरता तज सुख सुखदानी धैर्य धरो दिल के मांई ।
धीरजता हु धर्म फले सुख पावे प्रभुता अधिकाई ॥ टेर ॥
संचित पाप उदयगत आयो कहो श्री कृष्णदास भाई ।
अपना बांधा आन सिरे मत धीरजता धर सुखदाई ॥ अ ॥ १ ॥
सो नर धन है विपत पड़्यावें निज स्वरूप रमता मांई ।
भानु[1] तपत हेम तजे नग शीतलता न तजे भाई ॥ अ ॥ २ ॥
सुगन्ध चन्दन की प्रबल पवन से गिरि पर्वत से गिर जाई ।
सत्पुरुषों का वाक्य अचल मन कष्ट परयां न चले मांई

॥ अ० ॥ ३ ॥

लक्ष्मण राम सती सीता अरु नल पाण्डव वन वनवाई ।
धीरज से पुन प्रभुता पाई अब तक कीरत बरताई ॥ अ ॥ ४ ॥
उदय अस्त रवि रक्त होय तिम सुख दुख समचित सममाई ।
सत्य पाल्यो हरिचन्द्र राजा का, बहुरि राज ऋद्धि प्रकटाई

॥ अ ॥ ५ ॥

अवहेना का करे अगामी, धीरा तजे धीरज नाई ।

१—सूर्य का ताप

अधोमुखी करे तो भी देखो, अग्निशिखा ऊ ची थाई ॥ का० ॥६॥
निन्दा स्तुति करो को लक्ष्मी, आवो भलजाओ धाई ।
अथ मरण पुनि हुओ युगान्तर, सत न चूके सत प्राहाई ॥का०। ७॥
कुसगति कहो का करे वाको, जम चित्त थिर आतम ठाई ।
अहि शिरमणि निर्विष तिष्ठत है, सा मणि अहि विष उतराई
॥ का० ॥ ८ ॥

पात्र दान रत गुण अनुरागी, भोगे धन परिजन मनसाई ।
शास्त्र बोध कर्म रण जोधा पुरुष इर्वन पत्र पेखाई ॥ का० ॥ ९ ॥
नर-भव सार धरम सेवनता, कर शुद्धात मलिन त्याई ।
निजगुण-रमण करो निन भक्ती, बहुत कठिन वेला पाई
॥ का० ॥ १० ॥

रोया राज मिले नहिं कबहू, सुणो सकल भाई बाई ,
महान पुरुष विपदा दधि तिरिया, धीरजताकु दृढताई
॥ का० ॥ ११ ॥

तीव्र बन्ध पडना नूतन, अशुभ कर्म-दल खपवाई ।
चचलता तज समगत गढचढ, आरत चिन्ता द्यो ढई ॥का० ॥१२॥
गुणसठ साल चोमासे जयपुर, पूज्य विनय कीरति छाई ।
तास प्रसाद सुजाण' लावनी, हित धर धीरज की गाई
॥ का० ॥ १३ ॥

६३

अथ सात कुव्यसन की लावनी

दोहा "दशमनते अनुभव करो, सुखिया होय नर नार ।
अम्बर पद लोक के सातु व्यसन निवार ॥ १ ॥
चाल—"अपना पराक्रम खाक कर चेतन परमें फसना ना चाहिए ।
रंज में रोना और असरत में हंसना ना चाहिए ।"
जुआ १ मांस २ मद ३ वेश्या ४ आखेट, ५ चोरी ६ परनारी
७ भाखी ।
दुख दाई है कुव्यसन सातु ही मत सेवो प्राणी ॥ टेर ॥
पाप सकल संकेत आपदा कारक दुर्व्यसन जाना ।
भूल न जासो, कलह की खान दारिद्र को जानो ।
ग्रहगण खोट शुक्र–रवि दोषक राहु केतु सम पहिचानो ।
व्यसन राय को खेलक भी निरदय नहिं निरखय जानो ।
जूआ देश से राज हार गये भरत पांडव से सुखवासी

॥ दुख ० १ ॥

जंगम जीव विनाश करे रसना का गिरधी हत्यारा ।
निर्दय पापी पराया मांस कट कांचे मारा
नरक भोग नर नीच कसाई अभक्ष आहार भखने वारा ।
निन्दनीक है, अशुचि–मूल दुर्गंधवाली धारा ।
मांस भक्षी भक्ष्य लूयार भयो आसी कह्यो नर सुर ज्ञानी

॥ दुख ॥ २ ॥

कृमि कुल रास कुवास मडे अति, छीवत सहू शुचिता जावे।
मद्पान करे सो, बोले बहोश बके दिलके दावे।
छेडे छाक मतवाल घूमतो, चाले जहा तहा पड जावे।
दारू लक्षण मुख, मुत्र श्वान कर देतो खबर नहि पावें।
महा निषेध मद् तज मतिवना, यादव क्षय कथन हिये आणी
॥ दुख० ॥ ३ ॥

धन-कारण गणिका प्रीत रचे, नहिं तो नेह तुरत तोडे।
आमगो न किन की मूढ विसवास धरी मोहबत जोरे।
मद मास भखे तिनके मु ह की लव, चाखे नर नीच प्रेम धारे।
व विषय अ गला, जगमे कुयश चढावे भव बोरे।
वश्या संग रमो मत भोरा, चारुदत लख चिरतानी ॥दुख० ॥४॥
इच्छाचारी गरीव दीन पशु, कानन में डरते फिरते।
मिरगादिक बहुले तृण पत खाई पेट गुजर करते।
वेगुने दुष्ट अनारज उनकी, खेल सिकार हरष धरते।
दुर्बल जीवों का कालजा काढ आपका पिंड भरते।
अनरथ मूल विसन मत सेओ, ब्रह्मदत आखेट नरक ठानी
॥ दुख० ॥ ५ ॥

पर धन लेवा तके निरन्तर, पापी कुटिल कुराफाती।
चिन्ता नहिं जाती, चोरी करता छाती धडका खाती।
धणी देख ने मार मरम, कोट यार क्रूर निजर लाती।
हा पडे जेर बध भागसी, भोगे वेदन अण चहाती।
एह जाण तज चोरी चेतन, सत्त घोस गयो नरकानी ॥दु० ६ ॥

बिन मतलब कोई मुखे न बोले, यह जग रीत विरीत कही।
क्यों इनके सग मोह अरूझै, तेरी आतम डूब रही।
राग द्वेष बहु भाति यधारै, करम वन्ध मू डरत नहीं।
ओछा जीतव काज जीव तु, क्यू करता है लड़ा लड़ी ॥ एक० ॥१॥
बडी भूल दुनिया की देखो, इस भव कारण पच मरते।
पर निश्चय जाना, जिनकी कछु भी गम वे नहिं करते।
धर्म स्वर्ग सुख छोड़, पाप कर नरक गति में जा पड़ते।
तिर्यंच का दुख परतक्ष दीखे, तोभी चित नहिं अनुसरते।
कूड़ कपट छल छिद्र करीने पाप पोट शिर पर धरते।
कुविसन अनाचार अति सेवे, लोक लाज से नहिं डरते।
नरक दुख मे जाय जमा की, मार सहै बहू झड़ा झड़ी ॥एक०॥२॥
जगत जाल विभ्रम का बाना, इस पर कहा तू लपटाना।
मात पिता तिरिया सुत साथी, छांड़ अकेला उठ जाना।
मेरी मेरी कर रह्या मूरख, तेरी न काया कमठाना।
धन माल सब धरया रहेगा, सग चले नही एक दाना।
सरायसम सहू मिल्या मुसाफर, म कर रोस मत ललचाना।
आत्म ज्ञान समाधि भाव में, रमण करया होय कल्याणा।
जात पात में मान करी मूढ, क्यों पाडे दुधडाधडी ॥ एक० ॥३॥
जब्बर जोर यमराज तणो है, तीन लोक सहू थररावे।
काल आयकर पकड़ेलो ज्यू चिडी सींचाणो झपटावै।
औषध बूटी मन्त्र यन्त्र कछु जड़िया काम नहिं आवै।
सगा सैण बिलबिले बहूत विध, ऊभी कामण गरलावै।

झूठा जग के कारण पच पच, दगा ठिगा क्यू करता है ।
कपट कुण्ड में पढ़ीने, पाप पिण्ड सर भरता है ।
अधिका लेना ओछा देना, अनीति करी धन धरता है ।
थिर नहीं रहेगा फिर पछतायाा, काज न सरता है ।
नीति रीति सु चाल सयाना, नाहक किमी ने ना छलना ।।तुच्छ०२।।
गर्व घोल मत घोल दिवाना, मान करी लहे अपमाना ।
जिय समझाना धीरानी, कथनी से क्या फल पाना ।
आतम ज्ञान समाधि भाव में, रमण करो नित मतिमाना ।
होय कल्याण छोड़कर तू न करम बंध का थाना ।
सुद्ध दिशा प्रकटे चेतन की, जब होवे भव जल तरना ।।तुच्छ०३।।
समता सागर न्हाय निर्मल होय, सत्त शील सिणगार सजो ।
त्रितय रतन का पेर आभूषण, आतम ने खूब छजो ।
समगत सरस सुगंधी भोजन, पाय मजो जिनदेव भजो ।
दया धरम का पान मुख, चाव पाप का पीक तजो ।
'सुजाण' ज्ञान क्रिया गल चोसर, पेर सु गुरु के पाये परना ।
भला पेर सुगुरु संग विचरना । तुच्छ जिन्दगानी ।।४।।

९६

चाल—निजनन्दन झुलडावे वामादेवी, निजनन्दन०

अन्तर घट नहिं चीन्हो । चतुर तैंने अन्तर घट नहिं चीन्हो ।।टेर।।
बहु विध चटक मटक कर चाले, बात करण परवीणो ।
इन भव की चतुराई छांटे, पर भव से नहिं भीनो ।।च०१।।

महल सजावट हेम पर्यंक पर, सुन्दर रूप रसालै ।
सेज हेज सब रह्यो अधूरो, कह न सक्यो मुख सवाल ॥चि०४॥
ग्रह गण माही चन्दा सोहै, सभा माहिं भूपाल ।
खमा खमा शस्त्रधर करते, नृप खा पड्यो उछाल ॥चि०५॥
तत्क्षण तरुणी परणी आनी, गज गति चालै चाल ।
पासू प्रबल शूल ऊठ्यो तब, यम ने सक्यो न टाल ॥चि०६॥
अग्र महिष्या वसु सुरपति के, रूप वैक्रिय भालै ।
सागरोपम स्थिति पूर्ण हुवा सु, काल झपट विकराल ॥चि०७॥
दधि वन हेम किलो तम भूगर्भ सगरियत अग्नि झाले ।
सोवत जागत सुखी दुखी पे, अन्तक पट के जाल ॥चि०८॥
पुत्र कलत्र तात मातदिक, ये सब फंदो (मोह फद दे) डालै ।
कुगति परत को राखे जिय को, धर्म गुरु करुणाल ॥चि०९॥
चिन्तामणी रत्न मग पडिओ, सब दे चाले फालै ।
तिम सत व्रत विन, मा यौवन तरु, काटण भयो कुठाल ॥चि१०
अस्थीकेश दात नख-सींग हू, काम आत पशु खाले ।
नर देह काम न आत धर्म गहो, दाखै सुगुरु दयाल ॥चि०११॥
ईर्ष्या अमरष मेटो मनकी, मत दो को सिर आले ।
तप-सयम नित नेम धर्म में, रहो निरन्तर लाल ॥चि०१२॥
स्वल्पायु वायु सम चंचल, निष्ठ सहज राह ढाले ।
'सुजाण' सग सबल लेवे कु 'रतन' त्रय भर माल ॥चि०१३॥

९९

चाल-मनवा नाहिं विचारी रे

मनवा मत ललचावे रे। लोभी क्यु ललचावे रे।
उमर बीती जाय जवानी, छेह दिखलावे रे ॥मनवा०॥टेर
यह कीनो यो करणो याछे, या फिर पावे रे।
इण विध लालच करता, जनम विहायो जावे रे ॥मन०१॥
घर सुन्दर बन्धव सुत साथी, माथन आवै रे।
इनके मोह वश भूल झकोला, मत तू खावै रे ॥म०२॥
काम भोग क्रीड़ा मन करने, कर्म बन्धानेरे।
फल किम्पाकरी ओपम, ज्ञानी देव बतावे रे ॥म०३॥
जग सुपना सम माया, जागत झूठी थावै रे।
समता के सर में मत ममता, धूल मिलावे रे ॥म०४॥
सुख दुख योग वियोग लेख, कृत कर्म कहावे रे।
फूले मत मुरझावै भाई, सुगुरु चितावै रे ॥म०५॥
आतम तत्व विज्ञान ध्यान धर, जीव समझावै रे।
सो 'सुजाण' शिव पावै, आवागमन मिटावै रे ॥म०६॥

१००

चाल-पूर्ववत्

भोला क्यों भरमायो रे, लोभी क्यों लिपटायो रे।
बार बार समझायो तू नहिं गेले आयो रे।
भोला क्यों भरमायो रे ॥टेर॥

धर्मराज मग चढ़ सुरज्ञानी, सुगुरु चेताओ रे।
तू मिथ्या मग भूल न भूल्यो झूठ पायो रे ।।मोहा १।।
पर प्राणी का मास खूटकर, बहुत पमायो रे।
जीव हणी ने धर्म प्ररूप्यो अनरथ गायो रे ।।मोहा०२।।
तन धन यौवन के झक छकियो जोर जणायो रे।
दुःख निगोद गामी मांहीं इतनो क्यौं (क्या) अकड़ायो रे ।।
मोहा०३।।
मालम हेत हिये नहिं सोच्यो जनम गमायो रे।
'सुजाण' कहे तू निष्फल खोयो नरभव पायो रे ।।मो ४।।

१०१

चाल पूर्वक्त

त्रिया पर-घर गमन न कीजिए, आयु घटै तन छीजिए
त्रिया पर-घर-गमन न कीजिए ।। टेर ।।
पर नारी का पाप बुरो है सब दुःख विपत् सहीजिए ।।त्रीया १।।
चक्रवर्ति रावण बलराजा तम त्रिया हर लीजिए।
लक्ष्मण हाथ मरी नरक पहु तो अब तक कुयश कहीजिए
।। त्रीया २ ।।
धात्री खण्ड के राय पद्मोत्तर द्रौपदी हरण करीजिए।
कृष्ण पाण्डव रण आय भरया मद त्रिया रूप घर ली जिए
।। त्री ३।।
मेणरहा वसे मनिरथ राजा मार हत्या पाप गहीजिए।

कुकर्म कीनो काज न सरियो सरपे डसीने मरीजिए ।।जी० ४।।
कीचक आदि मुन से राजा, रिपुपुर भीख मागीजिए।
देखो पर दारा-सग राच्या, [1]पत-घट गुण न रहीजिए ।।जी० ५।।
शील सु शूली सिंहासन कीनो, सुदरशन सुयश लहीजिए।
'सुजाण' सकल गुण सफल मित्र ये, शील सुधारस प्याला पीजिए
।। जीया ।।६।।

१०२

जनम गमाया रे भाया, तेरा घट विच ज्ञान न आया, जनम०
।। टेर ।।

सत धरम उपदेश सुगुरू मुख सुणता नैण धुलाया।
सारी रैणतू ख्याल तमासे, नर्णो नेण सधाया। जन्म० ।। १ ।।
पाप करण हुसियार रात दिन धर्म करण मुरझाया।
परदारासू प्रीति लगा कर पर धन हरण उमाया ।। ज० २ ।।
अनरथ कर धन कियो इकट्ठो। अनरथ दरब लगाया।
सुकृत खरच की बात कहैतो, धड़ हड़ धूजे काया ।। ज० ३ ।।
आत्म हेत जरा नहीं सोच्यो, किया काम चित चाया।
कुविसन अणाचार आचर कर, कड़वा करम बंधाया ।। ज० ४
परम धरम को मरम न जान्यो, मोहमाया लिपटाया।
'सुजाण' कहै प्रभु नाम न लीनो, नरभव रतन हराया ।। ज० ५ ।।

१—इज्जत

१०३

चाल पूर्ववत्—

"तू नहीं समझो रे मोला ये नर-भव रतन अमोला तू नहीं०
॥ टेर ॥

प्रगट कटुक विपाक पाप फल मत संचे कम बोला ।
पीछे तू पिछतासी भाई सहसी करम हीलो ॥ तू० ॥ १ ॥
कुगुरु सुगुरु का भेद न पाया खाया भरम झकोला ।
गोपय पुस्ट भक्ष पय भरमा तें आम्बा दोड मोला ॥ तू २ ॥
थारी म्हारी चुगली जारी पर ना छिद्र टटोला ।
शिव-सुख गमन करोला तो फिर, दुख से केम बचोला । तू० ३ ।
आप पिवाड़ का किसा भरोसा, छिन मासा छिन तोला ।
करणा होय सो करले फिर, जम आय फिरेला डोला ॥ तू० ४ ॥
मन मान्या अवसर ते पाया, सुकृत-धाम गहोला ।
मबसम समता सुखसागर में करिय धर्म किलोला ॥ तू० ५ ॥
दान शील-तप-भाव-भली विध इणमें थांन रगोला ।
सुखाम्ब' स्वर्ग-मदर्म संपत का पासी बहुरंग रोला ॥ तू ६ ॥

१०४

चाल—

मार्ई मत देसे तू माया रंग गुलाल पु ॥
"भाई द्रोपदी होली, सम्य असम्य की बहारमें । भाई । टेर ॥
महाव्रत-पंचरंग फूल महकते भवि मधुकर गुंजार में ॥ भाई १ ॥

ज्ञान-गुलाल-लाल रंग उछरे, अनुभव अमलाकातार में ॥भा० २ ॥
क्रिया केसर रंग भर पिचकारी, खेले सुमति प्रिया संग प्यार में
॥ भा० ३ ॥
जप तप-डफ-मृदङ्ग चङ्ग बाजे, जिन-गुण गावे राग धमारमें
॥ भा० ४ ॥
'सुजाण' या विधि—होली मचीहै, सन्तन के दरबारमें ॥ भाई० ५ ॥

१०५

चाल पूर्ववत

"गुरूदेव को, गुरूदेव को, दरश लगे मिसरो । गुरू० ॥ टेर ॥
हाड हाड मींजी में बस रह्यो, कहो तो किम जावे विसरी ॥ गु० १ ॥
गुरू गुरू जग में केता बाजे, परखे नर जेमहेम विसरी ॥ गु० २ ॥
गुण दरिया गुरू में किम भरिया, ज्यु कुलिया अनार जड्या जिसरी
॥ गु० ३ ॥
गुरू बिन जग माही कहो भाई मुक्ति हुई दाखो किसरी ॥ गु० ४ ॥
पाप-ताप-सन्ताप निवारण, गुरू गंगा जग में इसरी ॥ गु० ५ ॥
कर गुरू भक्ति धरो धर्म सक्ती, आयु वल नितरह्यो खिसरी
॥ गु० ६ ॥
महीमें महिमा अद्भुत गुरू की, कहत 'सुजाण' पूज्य सिसरी
॥ गुरू० ७ ॥ २५६ ॥

नरक निगोद री वेदना, सुण सुगणा लोय,

महो अनन्तीवार जियरा जोय ॥ २ ॥

योग मिल्यो दश बोल को, सुण सुगणा लोय,

एह जनम मत हार जियरा जोय ।

सुकृत कर शुद्ध भाव सू सुण सुगणा लोय,

भव दुख होय छुटकार जियरा जोय ॥ ३ ॥

काया घट काचो कह्यो, सुण सुगणा लोय ।

गर्व करे सो गंवार जीवरा जोय ।

सपत सुपना सारखी सुण सुगणा लोय,

मत मुरझो नर नार, जियरा जोय ॥ ४ ॥

योवन जाय उतावलो, सुण सुगणा लोय,

नदी वेग जल धार जियरा जोय ।

रूप रो गर्व न कीजिए, सुण सुगणा लोय ।

जोओ चक्री सनत्कुमार, जियरा जोय ॥ ५ ॥

पल पल आयु बल खिस रह्यो सुण०

नहिं कोय आय उपाय, जियरा जोय ।

काल झपाटा दे रह्यो सुण सुगणा लोय ।

बाज तीतर को न्याय, जियरा० ॥ ६ ॥

क्षण लाखीणी जाय छे सुण सुगणा लोय ।

करना होय सो कराय, जियरा जोय ।

सुर तरू सम जिन धरम ने, सुण सुगणा लोय

सेवो मन वच कायजियरा जोय ॥ ७ ॥

दान शील-तप-भावना सुण सुगणा लोय
कर करणी कछु सार जियरा लोय ।
चरण पकड़ जिन राज का सुण सुगणा लोय
बेगी पार उतार जियरा लोय ॥ ८ ॥
चोमासो पाली किनो सुण सुगणा लोय
पूज्य विनयचन्द्रजी सूरिराय जिन लोय ।
त सु परसादे भायाद स सुण सुगणा लोय
'सुजाण' सुयश सुणाय जियरा लोय ॥ ६ ॥

१०८

समता का स्तवन

समझ नर समता सार वेखाम समझ नर समता सार वेयान ।
क्यों होवे परम कल्याण समझ नर समता सार वेयान ॥ टेर ॥
समता सुख सागर की लहर लेवे कोई मतिमान ॥ सम १ ॥
क्रोध कषाय की अमल बुझावन शीतल बरफ समान ॥ सम २ ॥
तपनो क्रोध उपसम कर लेवे महातप फल पहिचान ॥ सम ३ ॥
समता रस कर राय परदेशी सिधे सुरियाम विमान ॥ सम० ४ ॥

दुर्मति दुःख में पहुँचावे सुमति ले जावे शिव थान ॥ सम ५ ॥
समता कर केइ तिरे तिरसु है तिरजासी निरवाण ॥ सम ६ ॥
'सुजाण' कहे समता नित सेवो मकल गुणों की खान ॥ स ७ ॥

१०६

चाल गीतकी

जशारया जाट का गढ जैपुर बाँको रे।

सुगण नर साभलो, काटो करम की फासी रे।
सकल सुख संपजे जग में यश छासी रे॥ टेर।
गुरू उपकारी दयाल जी आगी कहत सुधासी रे।
समझइ अथिर सुख मुरछिया पुन्य भोगोंयें वासी रे॥ १॥
अनन्त काल सु प्राणिया, भमियो लख चौरासी रे।
हिये त्रिवेचन कीजिए, याते तु सुख पामी रे॥ सु० २॥
आयो अकेलो जीव तू पुनि एकलो जासी रे।
भोला मोह घोले कहा छेवट बिछडासी रे॥ सु० ३॥
भोग तिरपत थई, धर्म करा जद मोको आसी रे।
समय पाय चेते नहीं, तेहनी होवे हासीरे॥ सु० ४॥
दुख जीवण तुच्छ आयुमे, का भयो विषय विलासी रे।
भोग आपद तरू बीज छे, चित में लेओ बिमासी रे॥ सु० ५॥
दुर्जय कर्म अरि अष्टने, सूरा जेह हटासी रे।
चात्रक तेही ज जाणिए, धर्म प्रीति लगासी रे॥ सु० ६॥
घनरामावश जे पड्या ते तो गोता हि खासी रे।
विरक्त थई जिन जे भजै, पावे सुख अविनाशी रे॥ सु ७॥
गृह आगण वह्नि लग्या पीछे कूप खुदासी रे।
दृढ लक्ष्य पहली करे, सोही सुखिया थासी रे॥ सु० ८॥
हलु कर्मी ज्योही जाणिए, जीवे धर्म रचासी रे।

मारी कर्मो बीतने दिल धर्मे म भासी रे ॥ सु० ६ ॥
चतुर चन्न उपदेशनो बिवरण समझासी रे ।
मूर्ख हास्य विकथा तथा सुणने निद्रा ठासी रे ॥ सु० १ ॥
संवत साठीसे त्रे सठ, भादवी तीज प्रयासी रे ।
'सुमव पूज्य प्रसाद थी यह ढाल प्रकासी रे ॥ सु० ११ ॥

११०

चाल—राग मङ्गलोकी कू ची आप ॥

वा दिन की करज्यो तदबीर ज्यू उतरो भव सागर तीर ॥ वा दिन की० ॥ टेर ॥
परम पुरुष परमातम प्रभु को नित प्रति जाप जपो धर बीर ॥वा०१॥
जीव दुराइ कुवाम्य माहेवी तक तरु मारे तीर शरीर ॥ वा० २ ॥
उस दिन का डर राखो मित्रा जिम प्रभु पदकज को पकडो मीर ॥ वा० ३ ॥
सबसे साता भारी बोलो ज्यू बोले मिठवा वच कीर ॥ वा० ४ ॥
पर सुख संपत देखी प्यारा मत होवो दिलमें दिलगीर ॥ वा० ५
पवन कबाइ उपशमियो भाई प्रकट करो मत फेर जमीर ॥ वा० ॥ ६ ॥
रात्री भोजन अभक्ष आहार तज मत पीवे तू अनछाना नीर ॥ वा ॥ ७ ॥
क्षमा, दया, सत शील आराधो, कर तप पर तप पाडो सीर ॥वा०८॥
शक्ति सार व्रत पालो बालक, पात्र दान में रहो अमीर ॥ वा ॥ ९ ॥
शंका कंखा कर मत कोयो, जिम आगम को मीठो चीर ॥ वा० ॥ ॥ १० ॥

मर्थ धाड धर्मेसु मिले रे सु , स्वर्ग मोक्ष पद थान ॥ सु ८ ॥
काच पाच की पारखा रे सु० जौहरी ही समझान ।
तैसे धर्म नी पारखवा रे सु बिन गुरु कौन बखान ॥ सु० ९ ॥
जिन धर्म पुरुष बोरे मिस्योरे सु० समझो ज्ञान विधान ।
तप जप आर कर व्रत धारे सु नत झूठा तूफान । सु० १० ॥
कोइ नाव ना तारसी रे सु० तारसी काष्ठमय यान ।
कुगुरु सुगुरु तिन अन्तरा रे सु कहत सुजाण निदान
॥ सु ११ ॥

११२

चाल गीत की—खेलण द्यो गनगोर० ॥

पाको पुण्य उदार जीवाजी, पाको पुण्य उदार ।
मत हारे यो नरभव मीले करिये धर्म विचार ॥ टेर ॥
स्वजन सपदा तमसुख धनसुख मिश्या जनती बार ।
धर्म तणी वांछा करे सुरगण यो आयो तंत सार ॥ मत० १ ॥
पांच सुमसु बहु दुख हो मानव मेटो विषय विकार
जीव मरे मत वासना समनी गुरु परम्परा भार ॥ मत० २ ॥
थोड़ा जीवन कारण चेतन मत रख किस से खार ।
क्षमा सु आयो बेहलो मांडो वैर विरोध निवार ॥ मत० ३ ॥
धनवंत बलवंत पराक्रंत धीवंत कामसु गये सब हार ।
जिन धर्म सेवि शिव पद पामे जहां यम को न जोर लिगार
॥ मत० ४ ॥

जाणपणाओ सकल सार चे, सुजाण कहे लखलो पर पीर

॥ ११ ॥ था०

१११

चाल—गीत की-अनोखा भंवर जी हो० ।

"सुगणा मानवीरे, कर तू धरम तणी पहिचान ॥

सुगणा मानवी रे० ॥ टेर ॥

प्रथम समकित सरधिये रे सुगणा, तत्व तीन पिच्छाण ।

सुध देव गुरु धरम नीरे, सुगणा सेव करो मतिमान ॥ सु० १ ॥

अनुक्रम सहु सरिता जई रे, सु० सिन्धु माहे मिलान ।

तैसे अहिंसा धरम मे रे सु० सर्व धरम आन वसान ॥ सु० २ ॥

देव निरजन सो नमो रे सु० रागादि दोष हटान ।

केवल नाण दशण धरा रे, सु० सोही देव अवधान ॥ सु० ३ ॥

सत गुरु तेहिज जाणिये रे सुग० समो दमी गुण खान ।

सुमत गुपति रहे लीनता रे सु०, पर उपकार करान ॥ सु० ४ ॥

भव दरिया पडता थकारे सु० गुरु तु व वेल समान ।

सेव करी गुण संग्रहो रे सु०, ज्यों पहुँचो निरवाण ॥ सु० ५ ॥

कुगुरु पाखण्ड मत धारता रे सु०, मत दे ता पर कान ।

भ्रम जाल के मायने रे सु०, ज्यु हरी कूप पडान ॥ सु० ६ ॥

इम जाणी सत गुरु तणीरे सु० सेव करो हित आन ।

धरम लाभ सचय करोरे सु०, सतबुध समता ठान ॥ सु० ७ ॥

धर्म छोड धन धन करे रे मूसु०, ते नर ढ अजान ।

जग माया कर्म बंध का खाता आनों क्यों न बुभाओ।
इससे डर आतम गुण सर मर, तो तेरी सफल कला ज ॥म ६॥
मगफूरी मद का मन मेरा सुगुरु सीख सुनवा जी।
'सुजान' सम परिणाम ध्यान धर इसमें बहुत नफा जी॥ म ७॥

११४
मन भ्रमर का स्तवन
चाल—हो पिउ पंखीड़ा।

अरे मन भमरा रे चाखो ज्ञान गलाब ओए।
निज मकरन्द रस पीजे मू मू स्यू करे रे लोए॥ १॥
अरे मन भमरा रे निज गुण माल पराग ओए।
सरस सुग धी महिमा, फटकी महकति रे लोए॥ २॥
अरे मन भमरा रे रूप बसन गुलनार ओए।
मत फूले ये कशियर्य आकी आरमी रे लोए॥ ३॥
अरे मन भमरा रे जोबन फूल कुसमाय ओए।
चार दिनां की चटक चांदनी खिल रही रे लोए॥ ४॥
अरे मन भमरारे मालती कुसुम सुवास ओए।
तज कर रे मत कोबड़ बैठे गलका रे लोए॥ ५॥
अरे मन भमरा रे थिर पद प्रीति लगाय ओए।
इधर उधर क्यु भूम भूम बहक्यो फिरे रे लोए॥ ६॥
अर मन भवरा रे, सुखिया थारा भाग ओए।
सुजाण' प्रभु पदकज की पाई सेवना रे लोए॥ ७॥

चउ गति डोलर हींदै हींचत, भव दु:ख भ्रमण अपार।
भोगै अकेलो आप किया कृत, पुण्य पाप दोउ लार ॥ मत० ५ ॥
अथिरे पर्याय पिछानी ज्ञानी, जग सुख दीनी छार।
'सुजाण' कहै यह निकट भवी छे, होसी सही निस्तार ॥मत० ६॥

११३

मन समाधि पद

दोहा—"मन मरकट को बाधले, ज्ञान डोर कस जोर।
इत उत कहा ते जायगो, रहे ठोर को ठोर ॥ १ ॥

चाल—मना तुं ने किणविधकर समझाऊं ॥

मना तू मक्करा मकर मिजाजी, थारी उमर देत दगाजी।
मना तू मक्करा मकर मिजाजी ॥ टेर ॥
कितनिक उमर कितनाक जीना, क्यु जग जाल फंसाजी।
रूप रग भोडल का झलका खलक ख्याल चेर बाजी ॥ म० १ ॥
मनकी लहर तरगा बहुविध, लोक कहै यो पाजी।
कूड कपट केलवणा कर यो, नर भव हारो ना जी ॥ म० २ ॥
कबहू सोच सागर मन झूले, कबहु क रंग रस राजी।
आरत रौद्र ध्यान तजि धीरा, धर्म शुक्ल ल्यो साजी ॥ म० ३ ॥
सुख-दु:ख लाभ अलाभ-हीन गत, सोही होवे नितका जी।
मनसा पाप बांध मत भोरा, धार सन्तोष सदा जी ॥ म० ४ ॥
दुर्मति दौडि जाय मन जबही, घेर राखो घटमां जी।
कतवारी[1] का तार तणी पर, उलट आन सुलटा जी ॥ म० ५ ॥

१—कातनेवाली

११५

चाल—गजल की ।

"ध्यान में जिनके सदा लवलीन होना चाहिए ।।"

टुक चश्म दिलकी खोल देखो, स्वारथी सहु है सना ॥ टेर ॥
मोहमाया में मत उलझो, जान झूठी थापना ॥ टुक ॥ १ ॥
नरभव पाना बहुत मुशकिल, लख चौरासी भरमना ।
नरकादिक दुख घोर वेदन, सही अनती तरजना ॥ टुक ॥ २ ॥
मात तात रु भ्रात भामन, मतलब लगे सनातना ।
सराय सम मिलिया मुसाफिर, ये न जानो आपना ॥ टुक ॥ ३ ॥
अलिप्त भोग उदास रहना, धाय पुत्र ज्यू जानना ।
खिलाफ वखत न खोय ऐसी, अपना लाभ उठावना
॥ टुक० ४ ॥
शुद्धातम गुण ज्ञान दरशन, चारित्र सु चित्त लावना ।
'सुजान' साहब में सुरत रख, तन मन ध्यान लगावना ॥ टुक० ५ ॥

११६

अन्तर उज्जवल का स्तवन

चाल—सफा न देखा दिल का रे कोई
सफा न देखा दिल का रे ॥

अन्तर उज्ज्वल करणा चेतन, अन्तर उज्ज्वल करना रे
॥ अन्तर टेर ॥

माया गणिका ठिगत ठगोरी, सब गुण लेत छिनाय ॥
भलाजी ॥ क्यु० २ ॥

लोभ को थोब कछू नहिं लागे, काष्ट अगिन के न्याय ॥
भलाजी ॥ क्यु ३ ॥

जोड़ जोड़ केइ छोड गया धन, इभ, शेठ वड राय ।
भलाजी ॥ क्यु ४ ॥

कुण सग लाया कुण लेजासी, ताको भेद बताय ।
भलाजी ॥ क्यु ५ ॥

बिन सरज्या किम पावे लक्ष्मी, भाग लिख्यो फल पाय ॥ भलाजी ॥ क्यु ६ ॥

वृथा कर्म क्यो बाधे भोरा, अथिर पर जाय कहाय ।
भलाजी ॥ क्यु० ७ ॥

कम्पिल ब्राह्मण तृष्णा त्यागी, केवल ज्ञान लहाय ।
भलाजी ॥ क्यु० ८ ॥

ममता तज दो दान सुपातर, 'सुजाण' सकल सुख थाय,
भलाजी कोइ सुजाण सकल सुख थाय ॥ जी० क्यु० ९ ॥

११८

चाल आज रग बरसै रे

यौवन जावेरे, यौ० जावेरे ।
या पल पल देखो पलटा खावेरे, उमर जावेरे ॥ टेर ॥
काया घट काचो मत राचो, यौवन रूप विलावेरे ।

१२०

चाल —कमल की—

"समरो चार सुभाष नाम मेरी सम्भा तरे हाथ।"
चाभे मत खोवे तू हीरा नर भव मिल्या अमोलक हीरा
। चाभे। ॥ टेर ॥

खेल तमासे राग रंग में मजे ताल मजीरा।
वहाँ तू इराक नाम हो बैठे धर्म करम ने सीरा। चाहू ॥ १ ॥
सब शिर-पाव तुरंग चढ़ चाले मगे मिजांगी चीरा।
धनि मगरुरी क्या करता तु मया मिट्टी का कीड़ा ॥ चाभे० २ ॥
ओस-बिन्दु अञ्जलि का पानी पतंग रंग हलदी रा।
ऐसी तृष्णा जिन्दगानी जानी, रोग्य वस कर वीरा ॥ चा० ३ ॥
शिरिया सुत सस्नेही साथ, बेच सके नहिं पीड़ा
तन बेवस व्यापी सो भोगे होवे भजन संगीरा ॥ चा० ४ ॥
जिन-धर्म सुख आराधन करने मढो कर्म जंजीरा।
"सुभाग" कहे सुर नर शिव भोगो पावे सुख सुभ्दी रा ॥ चा० ५ ॥

१२१

चाल—"खबर नहिं है जगमें पलकी"—

जगत सब सुपना-सम जानोरे, जगत सब सुपना सम जानोरे।
मोह माया जग जाल फँसो मत आतम हित आनो ॥ टेर ॥
मतलब की सब प्रेम सगाई वहाँ तु ललचानो।

११६

चाल—दुनिया के बीच, नाथ जालन्धर आया घूमता ।
दुनिया के बीच दुनिया के बीच, आय सुकृत तेने कहा किया ।।टेर।।
बालपणे बालापण खोयो, योवन त्रिया—रंग रागिया ।
वृद्ध भयो प्रभु नाम न लीन्हो, उदर मार्ग लागिया ।। दुनि० १ ।।
षट् काया का प्राण लूट कर, पिण्ड आपणा पोखिया ।
नात अनीत रीत नहि जोई, बोल भलाई लारा ना लिया
।। दुनि० २ ।।
पुण्यमाल मूठी भर लायो, कुकर्म लगा कर भारिया ।
नवा पाप दल सचय करने, दुर्गति जाय डेरा दिया ।। दुनि० ३ ।।
इधर उधर फिर दिवस विताना, रैन नींद भर सोइया ।
उमर व्यतीत करी तै भोरा, लालच में दिन खोइया ।। दु० ४ ।।
सत संगति की बात न भाई, कुगुरु मिथ्या मद मोहिया ।
जीती बाजी हार चल्यो तू विषय रस विष प्याला क्यों पिया
।। दु० ५ ।।
दान सुपातर कदी न दीन्हो, घर धन्धा में ध्याइया ।
'सुजाण' कहे तू ज्यों आयो त्यू जनम गमायो रे जिया ।। दु० ६ ।।

———

बिन मतलब एक क्षण भर माही, काढ़ जाय कानो ॥ ज० १ ॥
अभ्र पटल दल ओस बिंदु जल, मोती लहलानो ।
समीर झकोरे बिखर जाय ज्यू, जग सुख अथिरानो ॥ ज० २ ॥
उदक अंजली टप टपकत ज्यु, आयु-बल मानो ।
तू क्यु बैठो गाफिल होय के काल तके छानो ॥ ज० ३ ॥
कर तप जप सुकृत शुभ किरिया, जो तुझ सुख पानो ।
"सुजाण" कहे तू लील लहे लो, मत चूको टानो ॥ ज० ४ ॥

१२२

चाल––रेखता की

"पलक एक रैन का सुपना, समझ नर कौन"

खोल टुक चश्म तू दिल दा, दिवाना केम थाता है। खोल ॥टेर॥
खलक का ख्याल सब झूठा, भरम में क्यों भुलाता है।
वाणी घन जलधर ज्यू बूडा, छिया नहिं हाथ आता है
॥ खो० १ ॥
नगन-भर मोह निंद सोता, पाप तरू बीज बोता है।
सुगुरु उपदेश नहिं जोता, कुगतिका खत लिखाता है ॥ खो० २ ॥
स्वजन परिवार सुत दारा, दुनिया दारी के नाता है।
बिछड सब जाता है न्यारा, अकेला भव दुख पाता है ॥ खो० ३ ॥
जुल्म मत करे जोर जबरी, जीवन का प्राण सताता है।
व्यसन तू सेवे बेखबरी, इसी से कर्म बन्धाता है ॥ खो० ४ ॥
रहो जिन राज भजन राता, भला यह अवसर जाता है।
"सुजाण" को येही मन भाता, सकल सुख के वर दाता है
॥ खोल० ५ ॥

१२३

चाल—दिल मिल पावीके आप से ननदिया ॥
तरगिनी अब किम जावे रे बयानी । तरङ्गनी वेग० ॥ टेर॥
कहा विसवास मान मन मोह्या जौवन लहरे समुद्र समानी
॥ तरगनी० १ ॥
मोह माया के फन्द पड्यो मर, नहिं सोचे सद् वस्तु विरानी
॥ तरगनी० २ ॥
भरत क्षरत धन संच्यो लोभी संग चले नहिं कौड़ी कानी
॥ तरगनी ३ ॥
निमदिम आयु छीजे छिन छिन तबहुन चेतत मूरख प्रानी
॥ तरगनी ४ ॥
"सुखराय" कबे सुकृत नहीं कीनो मिथ्याक खोय दई जिन्दगानी
॥ तरगनी ५ ॥

१२४

चाल—नेम निरञ्जन ध्यावो रे बन में तप कीनो नेम
वा दिन को अर राखो रे, मत विरथा खावो । वा दिन ॥ टेर॥
शुभ श्रद्धा दया धर्म की धारो बोल बोल सत्य साखो रे
॥ मत विरथा० १ ॥
अघरत मद्य मत कर नवि संगा, शील सुधारस चाखोरे
॥ मत० २ ॥

परिग्रह ममता मेटो कषाया, ज्यु सुधरे माहुँ स्याम्योरे[1] ॥ म० ३ ॥
राग द्वेष की परिणति छोड़ो, कलह आल किम आम्योरे ॥ म० ४ ॥
चुगली तज अपवाद न बोलो, सुख दुख सम अभिलाखोरे
॥ म० ५ ॥
मरम मोषा मिथ्यात अष्टादशा, पातक परहा[2] नाम्योरे
॥ म० ६ ॥
यम को जोर जबर ज ग माही, पट-रखो तिणरो धाखोरे
॥ मत० ७ ॥
करणा होयसो तुरतहि करलो, को किणरो कुण काकोरे
॥ मत० ८ ॥
सकल पाप तज थया मुनिवरजी, "सुजाण" शरण लियो ताकोरे
॥ मत० ९ ॥

१२५

चाल—रे भविजन जीवदया प्रतिपालो।

सुरीजन धर्म करो चित्त ल्याई, या वख्त पावनी आई रे
॥ सुरिजन० टेर ॥
मुख धोला गछ शिर थया धोला, काया सब कपाई।
कुकर्मसु मन तोहि न कम्पे, यह अधिकाइ दिखाई रे
॥ सूरिजन० १ ॥

---

१ सब ढंग दाचा, २ दूर

सुख सम्पत घन घर छे म्हारा सजम मरग मो भाई ।
मेरो मेरो कर जग मूरखो, मरियां श्रम[1] पराई रे ॥ सुरिजन० २ ॥
भोग भोगवंता मन नहिं धापे त्याग्या तिरपत थाई ।
घर अमन्ती सुर श्रादि भोगी भव विलस्यो समभाई रे
॥ सुरिजन० ३ ॥
काया माया बादल छाया पल भर में पलटाई ।
जग संपत सुपना सम अडम्बर, सुगरणमर वधवाई रे ॥ सुरि० ४ ॥
ममता समता माहीं ममता समता रमता भाई ।
ममता रख बोलो वच गमता, समता इन्द्रिय सुखदाई रे
॥ सुरि ५ ॥
श्रादि अन्त तक सुख सुरब्यासु समझू समझ पचाई ।
आशांध मन मत कोई वेदो आस्था राखो भाई रे ॥ सुरि ६ ॥
श्राइपद तज रख संपत सबसु पाप कंस्त पग ठाई ।
शासन पति संपत शीघ्र जयमा सुभाग्य' पद सीख सुधाई रे
॥ सुरिजन० ७ ॥

१२६

चाल– 'मारलो हाथ में नवकरवाली सुमे अरिहन्तनो आधार रे'
म्हारो तो म्हारो कर मत हारे, मतलब को संसार रे
॥ म्हारेवो टेर॥

१–श्रम सम्पदा

अरथ काम के केड़े[1] पड़िया, सोने नहिं लिगार रे।
कनक रथ पदमर के ताही गया जमारो हारे रे॥ म्हारो० १॥
मध की तान टपत में टूटे, दारण फूहों लल हार रे
धनरा गिरधी जे कोई होसी, मोसद्दसी दुख भार रे
॥ म्हारो० २॥

अशोक चन्द्र तात दियो, पिंजर धरी द्वेप अन पार रे।
हार हाथी के कारण लड़िया, कोणक वहेल कुमार रे
॥ म्हारो०

सागर लोभी ने चतुर बहुआ मिल, सागर में दियो डार रे।
नंद राय की नव ड्डगुरिया, एक न आई लार रे॥ म्हारो० ४
भरत बाहु बल बेनू भाई, झगड्या केती वार रे।
पाण्डव ने दुर्योधन नहिं दीना, ग्रामज पच विचार रे
॥ म्हारो० ५॥

सभयचक्री अतितृष्णा कर, पहुँतो नरक मझार रे।
कनक रथ-राजा लुब्ध पुत्राने अग भग किया सफार रे
॥ म्हारो० ६

आफू क्यारी सम जग नारी, मानों सहत से भरी कटार रे।
ऐसी जानी पर रमणी तज, खोटो विषय विकार रे॥ म्हारो० ७
राय प्रदेशीने विष दीनो, सुरीकता नार रे।
साता पूछण मिसटूपाकेरो, कथाकार विस्तार रे॥ म्हारो० ८।
कुल मरजादा मेट चूलणी, दीरघ राय कियो यार रे।

१—पीछे

विषयासक्त निजसुत मदारथ ने दियो प्रास महल में मार रे
॥ म्हारो ९ ॥

कूरम भावक गुणवंताने मिल छाविंस का हार रे।
पापवशा मगन मांहि प्रजाल्यो दुर्गति पड़ दुई छमार रे
॥ म्हारो० १० ॥

शूर्पणखा राम रूपे मोही दृढ़ लक्ष्मण पै हार रे
लक्ष्मण कहे मो माभी लागो बड़ बंधव बधरी मार रे
॥ म्हारो० ११ ॥

उपरम्भा रावण से राची बोल्यो विभीषण बात सम्हार रे।
किया लेकर सासमकाई भीती नल कूबेर से रार रे
॥ म्हारो० १२ ॥

छिपे नहीं चंचल नर नारी, कहे चातुरी वचन बखार रे।
दासी दृशी मांहि रही जिम ब्यम्बन होंग बधार रे ॥ म्हारो० १३ ॥

यह सम्बन्ध भाख्या उर धुरा कर, हो निरदम में बार रे।
"सुजाण" कहे सोई नर उत्तम जिन मेरयो सब मो छार रे
॥ म्हारो० १४ ॥

---

१ पीछे

१२७

चाल—सतगुर, मत भूलो एक घड़ी, ज्ञानीगुरू मत भूलो ।

जिन भजन करो भवि भावे धरी, भावे धरी जी चित्त चावे करी ।
|| प्रभु भज० टेर ||

प्रभु समरण को समय सुरगो, भाग योग मिलियो अवरी
|| जि० १ ||

प्रह उठी ध्यान धरो जिन पदको, दिलमें लगाओ लगन लरी
|| जि० २ ||

हृदय नयन निहालो जिन गुण, ज्यु थाने उपजे बुद्ध खरी
|| प्र० ३ ||

तप जप नेम धरम को विरिया, सफल करो या हाथ परी
|| प्र० ४ ||

जिनवाणी–सरिताजल गुरुमुख, वचन फंवारा छुटे ज्ञान झरी
|| जि० ५ ||

कर जिन जाप ता[illegible] [illegible]ी, सुख संपतकी [illegible]
[illegible] ० ६ ||

"सुजाण" कहे स[illegible] [illegible], जो थैं था[illegible]

१२६

चाल—ऐसे जादुपतीरे ऐसेजादुपती परगुन चाल्या राजमति

ऐसे साधु सती रे, ऐसे साधु सती।
काखमें ओधो राखे मु हडे मुखपती ॥ टेर ॥
उघाडे माथे काधे पोथी रहती।
विहार करी उपकार करे उन्नती रे। ऐसे सन्त सती ॥ १ ॥
चोल पटो चादर ज्याके, धोली फावती।
लाग नहीं देवे, तृष्णा त्यागे छती ॥ ऐसे सन्त सती० २ ॥
पन हीना पहरै धरती, धग धगती।
छत्र शिर नाय धरे, धूप पडती ॥ ऐसे सन्त सतीरे० ३ ॥
जीवदया हियमाहे खात खनी।
नीची दृष्टि जोवे, यतना-जुगत जती ऐसे सत सती ॥ ४ ॥
महाव्रत पच पाले धारे सुमती।
त्रीण गुप्ति में ज्यारो, गहन गती ऐसे सत सती ॥ ५ ॥
शुद्ध शील पाले, भोग विरत यती।
ईर्या-भाषा एषणा में, निपुण मती ऐसे सत सती ॥ ६ ॥
बरसे बाणी धुन, धारा ऊछलती।
भविजन सुण पावे, हरष अति ऐसे सत सती ॥ ७ ॥
पाट विराजे सन्त सोहे, चढ़ती रती।
बहु जन सुण करे, त्याग विपती एसे संत सती ॥ ८ ॥
ज्ञान-गुण-लीला निन, रहे वधती।
"सुजाण" सुरत ज्यारी, लगी एक मुकती ऐसे सन्त सती ॥ ९ ॥

१३०

सद्गुरु–महिमा

(दोहा) सतरा[1] धारक सुममती अष्टादश[2] दूर खोय।
पचटाळे[3] पंचपाळवे[4] नमूं नमूं ऋषि सोय ॥ १ ॥

चाल—"चाखो रे नर समता रस मीठो"।

सेवो रे नर सतगुरु आचारी, जो समाधिक तत्त्व निहारी जी
॥ सेवो टेर ॥

आतम लक्ष करता विचरे सहे धूप ठंड ठारी जी।
लाभ अलाभ सम् सम जाणे, दुश्मन सोच विसारी जी
॥ सेवो १ ॥

ज्ञान ध्यान आचार धर्म के समकित पुष्ट करारी जी।
दुर्गति टाल सुगति पहुंचावे ऐसे मुनिवर भवतारी जी। सेवो० २ ॥
पंच महाव्रत निर्मल पाळे सुमति गुप्ति सुविचारी जी।
यति धर्म दश धारक तारक नवकल्पी अविकारी जी
॥ सेवो० ३ ॥

मान तुच्छ जाणे पद्मपद आतम करण सुखकारी जी।
सरल भाव समता के सागर, माया त्याग मदहारी जी
॥ सेवो ४ ॥

---

१ सत्तरह प्रकार के संयम को धारण करने वाले। २. अठारह पाप को दूर करने वाले। ३ पंच विषय टालते। ४. पांच महाव्रत पालन करते हैं।

निज गुण जोत लगी घट अन्तर, परगुण ममता टारी जी।
राग-रोष अहंकार न आणे, ज्यारी मैं जाऊं बलिहारी जी
॥ सेओ० ५ ॥

परदेशी केसी गुरु भेटी, हुवो सुरियाभ सुर भारी जी।
संजतिराय आहेड़े जाता, गद्भाली ऋषि दियो तारी जी
॥ सेओ० ६ ॥

वज्रकुंवर परणी घर आता, तजी मनोरमा नारी जी।
वन ऋषि भेटे संजम ले सिद्धा, छाईम राज-सुत लारी जी
॥ से० ७ ॥

अनाथी ऋषि नो रूप श्रेणक लख, इचरज पायो अपारी जी।
नाथ अनाथ को भेद सुणी ने, धारी समकित सुखकारी जी
॥ सेओ० ८ ॥

इत्यादिक बहुधा नर तार्‌या, सुगुरु सेवा लगे प्यारी जी।
"सुजाण" दास शिव आश सफल कर, याही अरज हमारी जी
॥ सेओ० ६ ॥

१३१

चाल-"जै गणेश जै गणेश जै गणेश देवा"।

श्री नेमनाथ जिनन्द जपो, तन मन तह भेवा ॥ श्री० टेर ॥
समुद्र विजय सेवादेवीके, नन्दन गुण थुणेवा ॥ श्री० १ ॥
बाल ब्रह्मचारी प्रभुनी, करो नित सेवा।
अद्भुत अनूप रूप, देवन-पति देवा ॥ श्री० २ ॥

केवल वरनाण धरो कर्म रिपु हयेला ।
भिन्न भिन्न प्रकारा क्रिया, दुविध धरम भेवा ॥ श्री० ३ ॥
बारस¹ विध देश धर्म पंच मुनि महाव्रत² का ।
सुन साधम क्यो जनम, सफल होय जैवा ॥ श्री० ४ ॥
इत्यादिक धर्म करो हरो कुमति टेवा ।
'सुजाण'' श्री जिन भजन सार अविचल पद लेवा ॥ श्री० ५ ॥

१३२

(दोहा) सुगण नरा तुम सांभलो विनय बड़ो संसार ।
नम्र भाव नित नवल गुण प्रकट होय सुखकार ॥ १ ॥
चाल—"चलोप्यार प्रभु सैर करेंगे बाग जिनन"

सुगुरु विनय कर रंग उमंग भर, जो तुम तिरणा चाहते हैं
। भव्य जो तुम २ ॥ सु० टेर ॥
विनय मूल जिन धर्म सार सुन सो मति दिल धर ध्याते हैं रे
जप पुण्य हर आतमना गुण जल, विनय भाव बरताते हैं रे
॥ सु० १ ॥
हंस बिन आप नाक बिन बदन सुख बिन ना सोमाते हैं रे ।
विनय विवर्जित शिष्य ना सोहे, आगम इम दरसाते हैं रे
॥ सु० २ ॥
सड़त कान कुत्ती-सम घर घर, अविनीत निरादर पाते हैं रे ।

---

१ बारह प्रकार का गृहस्थ धर्म २. महाव्रत

मर किन्नवेणी भ्रमत वेदगत[१]; ये अविनय फल पाते हैं रे
॥ सु० ३ ॥

दशवैकाल उत्तराध्ययन में, बहु विध अधिकार कहाते हैं रे।
दत्त होय वर लच्च न लेखें, सो भवि फन्द उलझाते हैं रे
॥ सु० ४ ॥

अपढ बाल वृध गुरु होय तो भी, जे अविनय अवधारे हैं रे।
सो विश्वानल[२] पगसु चापे, नख सु नगने[३] जु खिणाते हैं रे
॥ सु० ५ ॥

निद्रागत सिंह जागृत कर पुनि, जहर हलाल खाते हैं।
शन्ति होय मन्त्रनते तो पिए, आशातन फल न टलाते हैं रे
॥ सु० ६ ॥

अन्य शास्त्र माहि इम आख्यो, सुवर[४] गत नहीं जाते हैं रे।
स्वान सत मातङ्ग होय पुनि, भव दु ख से तड़फाते हैं रे
॥ सुगुरु० ७ ॥

गुरु निन्दक शिवद्वारा अर्थोहि, पंगु गूग थई कुष्ठ सहाते हैं रें।
घोर कष्ट अविनय अन्तर लख, धनजे गुरु भक्त हटाते हैं रे
॥ सु० ८ ॥

मात तात ते अधिक धर्म गुरु, खम सम दम गुण राते हैं रे।
मुकुट हार लोचन सम गुरु गिन, स्वपर मत गुण गाते हैं रे
॥ सु० ९ ॥

जाति अश्व सुवश नमे को, अम्ब तरू फल मेघ नमाते हैं रे ।

---

१ चार गति २ अग्नि ३, पर्वत ४ स्वर्ग अच्छी गति

खोटी कूड़ी विना विचारी, अजब गजब किम धरिये रे।
दीठी अण दीठी कर लेवे, सो नर हस (हसल) उचरिये रे
॥ आतम० १ ॥

ओ खोटो ओ चोर जार ठग, पिट्ठी मस नाऽ चरिये रे।
मुझ सम खोटो और न छोटो, आतम ज्ञान समरिये रे
॥ आ० २ ॥

छि पर छिद्र जोने मत घाइला, अपना छिद्र चितरिये रे ।
वहु-विध खून किया भव-भव में, अघतक सहज न ढरिये रे
॥ आ० ३ ॥

हिंसादिक आश्रव रग रातो, दुर्गति कहो किम टरिये रे।
घोर पाप मैं किया आकरा, किस विध कारज सरिये रे
॥ आ० ४ ॥

लपट लोल विषय व्यभिचारी, इम पिछतावो करिये रे।
कूड कपट जग-जाल जलधि में, भव फद फस ना परिये रे
॥ आ० ५ ॥

ईर्ष्या अमरष मकर मिजाजी, पर निन्दा अघ भरिये रे।
आपो मार धार गुण सैली, समता भाव विचरिये रे
॥ आतम० ६ ॥

काम क्रोध मोह मच्छर तृष्णा, ये छिन छिन गुण छरिये रे।
तुझे विरानी क्या परी भोरा, अपनी हुँ ने निवरिये रे
॥ आतम० ७ ॥

धिक धिक धिक मुझ पातकिया ने, यह वुध नाहि विसारिये रे।

वेर वेर आतम गहाँ कर, भव सागर से तरिये रे ॥ आतम० ८ ॥
शील सेना वर सत्य शस्त्र से, कर्म अरि मु अरिये रे।
"सुशाला" शील अवसर होय अब प्रभु पद मीर पकरिये रे
॥ आतम० ९ ॥

१३४

अथ द्वादश भावना

(दोहा) निज परहित हेते रची द्वादश भाव समप्रय ।
दृढ़ सुध मन कर भावतां अमरा पुर में जाव ॥

चाल—"गाफल मत रह रे, मुशकिल है फिर यो अवसर पावणो" ।
सुध मन ठहरावो भावना द्वादश भावो भाव सु ॥ सुध १ टेर॥
प्रथम अनित्य भावना भवि मन भावनी
पुद्गल की पर आय पलक्ष्य आवणी ।
यह थिर किम ठहराय चपल ज्यूं दामनी,
काल म्रपट सैताप आडंबित पावनी ।
अनित्य भावना भरत केवल मगावनी
परहाँ चारु शिक्षा सार सुगुरु समझावनी ॥ सु १ ॥
बीजी असरण भावना चेतन मानवे
मरण मिटत नहीं शरण जीव सजाइवे
औषध जू डी जडियाँ काम न आइवे
पुष्कर थामे काष्ठ धास सरणाइवे ।

ऐसा सार कुटुम्ब अकेलो जाइये, परहां,

अनाथी ऋषि ज्यूं असरण मुनी लगाइये ॥ सु० २ ॥

संसार भावना तीजो चित्त में चुभ गई,

काल अनन्त दुःख सह्या पार पावे नहीं।

सुख दुःख चउगति भ्रमण डोलत होता सही,

लख चौरासी जोनि गतागत हो रही।

विषय कषाय मोह ममता सु जकड़ता लई,

परहा, धन्य सालिभद्र संसार सरूप लख्यो सही ॥ सु० ३ ॥

एकत्व भाव सम निज गुण लखो लगावना,

आया एका एक अकेला जाव ॥

स्वारथ का सह से ए मिल्या है पावना,

अपना सगा न कोय वृथा ललचावना।

इनसे आपा खैंच सुद्धातम ध्यावना, परहा,

नमी राय ज्यूं एकत्वरूप लखावना ॥ सु० ४ ॥

अन्य भाव नित न्यारो चिदानन्द जाणिये,

पर स्वभाव में रमण होय दुःख आणिये।

दौलत घर परिवार करे नुकसाणिये,

सराय को सो वास झूठ मडाणिये।

जड चेतन को न्यारा पणो पिछाणिये, परहा,

मृगापुत्र लियो अन्य भाव निरधाणिये ॥ सु० ५ ॥

अशुचि देह सु नेह निपट नहीं कीजिये,

अस्थि मास नशा जाल रुधिर लिपटीलिये।

सफल जनम जद होय आतम उजवालस्यूं ॥ सु० ६ ॥
धरम भावना भाओ दिल धर ध्यान सु,
विषय कषाय प्रमाद उड़ाओ ज्ञान सु ।
धरम विवेकानीपजे बहुत विधान सुं,
दान शील तप भाव रचो भगवान सु ।
जीव जतन त्रय रतन आन सरधान सु,
पर हा' धर्म रुचि ज्यू धरम धरो श्रीमान सु ॥ सु० १० ॥
षट द्रव्य-मई यो लोक सरूप लख्यो सही,
चौवदह राजु प्रमाणजीवभटक्यो मही ।
कुल स्थान जात जोनन बाकी को रही,
गेंद दड़ी ज्यू अनन्त वेर भ्रमणा थई ।
मतलब को ससार सार क्षण में नहीं,
पर हा, लोक भाव शिव-राज ऋषि शिव पुर लही ॥ सु० ११ ॥
बोध-बीज सुध समकित सैंठी आदरो,
मिथ्यात्व भाव में अनन्तकाल खोयो परो,
देव गुरु धरम तत्व तीन निरणय करो,
मिथ्या-मद विषपान मूल मत आचरो ।
महा अश्व गज वेच न खर लेवो खरो,
पर हा, गोत तीर्थंकर बाध्यो श्रेणिक नरेस रो ॥ सु० १२ ॥
जोग[3] शर[5] निधि[9] शशी[1] (१९५३) सन् श्रावण सुध सप्तमी,
जोधाणे चोमास भावना दिल रमी ।
पूज्य विनयचदजी प्रसाद ढाल यह वरणमी,
दाखी सरस "सुजाण" सुगुरु पदकज नमी ।

मैथुन खान पान भय निद्रा, पशु भी सकल करे।
सत्यज्ञान बिन पशु ओपम तुल्य कह्या तू भयो नर रे ॥ ज्ञान० ४॥
निरक्षरी धन युक्त देख कर, दक्ष किम विद्या न पढे।
कुल स्त्री कुलटा अंग भूषण लख वेश्या घर नाय धरे
॥ ज्ञान० ५॥

स्वर्ग श्री भक्त वल्लभ नर, ज्ञान निधान भरे।
ज्ञान हीन भव भ्रमण करे बहु मिल मिल के बिछुरे ॥ ज्ञा० ६॥
प्रथम ज्ञान पीछे शुभ किरिया, धारो चित्त धरे।
तत्वार्थ अनुभव रस स्वादित, सो पर ठार ठरे ॥ ज्ञा० ७ ॥
नय निक्षेप पिछाण नाग गुण, रहो नित सुमत घरे।
"सुजाण" श्री जिन वचन सुधासम, वास लगा लिव रे ॥ ज्ञा० ८॥

———

१३८

दोहा—अंक स्थान समकित धरम, अपर सकल सुन थान।
अंक स्थान होय भ्रष्टता शून्य प्राय सब मान ॥
चाल—"कैसे कटे फासी करम की कैसे कटे फासी"
समकित शुद्ध धरो मतिवान, शुद्ध धरो मतिवान
॥ समकित० टेर ॥

देव निरंजन निर्लोभी गुरु धरम जीव जतनान।
तत्व तीन तणी सुध श्रद्धा, धारो धीरज आन ॥ स० १ ॥
समकित नर पे कर चिन्तामणि, सुरतरु द्वार रुपान।

काम धेनु अनुगामिनी जाके लक्ष्मी रहे दास समान ॥ स० २ ॥
सुरपति नर पति ते अति दुर्लभ समकित पद को मान ।
सब जगवस्तु अमोलकता ते समकित ही परधान ॥ स० ३ ॥
धन कर हीन लोभी धन धारी, समकित धन को धरान ।
धन सुख देवे एक ही भव में भव २ सुरक्षित सुख खान
॥ समकित ४ ॥
सब रतनन में परम रत्न यह, पर संजय विज्ञान ।
परम धाम की नींव अचल गुण सेवो मन हुलसान ॥ स० ५ ॥
समकित धारी अल्पक आनन्द, काम देव परिमान ।
समकित होवे तिरिया पुनि सुन हरि श्रेणिक राजान ॥ स० ६ ॥
विरक्त भाव पुद्गल सुख ऊपर उदासीन शुभ ठाम ।
सुख दुख फल आपद गत राखे समता गिरद् पहान ॥ स० ७ ॥
समकित सम नहीं लाभ जीवों सम्यक् गुण की खान ।
"सुखाकर" सम्यक शुभ दशा प्रगटे, वर होवे कल्याण ॥ स० ८ ॥

११६

दोहा—चरित्र चिन्तामणि रतन वांछित पूरण काम ।
भव संचित भय सब हरण मुक्ति दायक अभिराम ॥

चाल—म्हाने एक आपको आधार ।

मन लख सुगुरु गुण आचार, सुगुरु गुण आचार ॥ मनमस्त० टेर॥
पंच महाव्रत निर्मल पाले मिश्र-भोजन दिये टार ।

पच सुमिति त्रण गुपते गुपता, यति धरम दश धार ।। म० १ ।।
वाईस परिसह सहे मन गे, प्राण बावन रिछ पार ।
अनाचार बावन दूर करता, नव कल्पी भ्रम बिहार ।। म० २ ।।
निदूषण ऋषि आहार गवेषे, दोष बयालीस टार ।
सप्तबीस गुणयुक्त अनोपम, ज्ञान तणा भंडार ।। म० ३ ।।
द्वादश तपविध माल निकाले, भावना इण पर कार ।
दृढ समकित जितेन्द्रिय सुखोचित, करता पर उपगार ।। म० ४ ।।
षोडस नभ (भू) १७ विध सजम रक्ता, विनय भक्ति बुध सार ।
अष्टादश[1] अघ हरि ने हरिया, चढ अनुभव तो खोर
।। म० ५ ।।

ज्ञान दर्शन चारित्राचारी, शील धरम दातार ।
शान्त कपायी गिरा पीयूष सम, समता भाव उदार ।। म० ६ ।।
मान मच्छरता नहीं तन किञ्चित् , अष्ट ही मद कू मार ।
धरम मडन अरु भ्रम विहडन, सहें सीत तप ठार ।। म० ७ ।।
परगुण प्रीत पुरातन तज कर, निज गुण में हुँसियार ।
"सुजाण" शीश धर एसे मुनिपद, वन्दू वार वार ।। म० ८ ।।
उगणी सै ठावने चोमासो, जयपुर कीना आय ।
पूज्य विनयचन्दजी परसादे, त्रय रतन करि द्वार ।। म० ९ ।।

———

१—पाप

सुपात्र दान वटबीज तणी पर, वृक्ष ज्यूं फल डहृदाया रे।
मेघ धारा तारा गण सख्या, दान संख्या न कह्याया रे॥ अ० ७॥
याते तिरिया तिरे पुनि तिरसी उभय दान मन भायारे।
"सुजाण" कहे श्रद्ध सिध सुख सम्पत्, चैन लहे चित चाया रे
॥ अ० ८॥

१४१

शील स्तवनम्

दोहा—वेद जात का देवता ताहि नमावे शीश।
शीलवन्त ने ओपमा दाखी जिन बत्तीस॥ १॥

चाल-"शान्ति सूरत देख मूरत, मेरे मन भाईरे"

शील बड़ो ससार, धरे सो दक्ष कहावेरे २॥ शीलब० टेर॥
फीलरु[1] भील सलिल भय जावे, श्वान व्याघ्र सिंह दूर पुलावे।
गद दुःख अरि मरि निकट न आवे, व्याल पुष्फ माला थावे रे
॥ शी० १॥

श्रेष्ठ कुलीन शील लख चारु, शील ते लील लहे अणपारू रे।
ताते तू धर शील उदारु, शीलते सब सुख पावे रे॥ शी० २॥
शील प्रधान न कुल प्रधान, शील विवर्जित कुल दुकुलान।
बहुधानरा नीचकुल पान, शील ते सुरगत ठावेरे॥ शी० ३॥

---

१ फील—हाथी भिल्ल—चोर और जलका भय श्वान—कुत्ता, व्याघ्र—शेर, गद—रोग, अरि—शत्रु, मरि—महामारी, व्याल—सर्प।

दृढ परिहारी अति ही पापी, चार हत्या करथावे रे ।
सो पिण महा तप ने परभावे, सद्गति जावे रे ॥ सो० १ ॥
सात माणस मारे निशिवासर, पातक पूर कहावे रे ।
अर्जुन माली छठ छठ तप कर, करम उड़ावे रे ॥ सो० २ ॥
हरि केसी चण्डाल कुरूपी, तप कर देह सुखावेरे ।
देव सेव करतो यग (यज्ञ) पाडे, महिमा छावेरे ॥ सो० ३ ॥
तप तपता लब्धि बहु उपजे, विष्णुकंवर ज्यू थावे रे ।
लक्ष योजन को रूप धरणा, जिन-धर्म दृढावेरे ॥ सो० ४ ॥
अठारे सहस मुनि में ढढण, अधिक नेम फरमावे रे ।
दुक्कर तप कारक धन धन्नो, वीर सरावे रे ॥ सो० ५ ॥
रोग शोक विपदा सब जावें, रूप अनूपम पावे रे ।
कठिन करम दल तप से ततक्षण दूर पलावे रे ॥ सो० ६ ॥
तप से स्वर्ग मोक्ष पद पावे, लक्ष्मी तेज वधावे रे ।
मनोकामना सिद्ध होय जो, तप अवधावेरे ॥ सो० ७ ॥
बाह्य अभियन्तर द्वादश-विध तप, दक्ष लक्ष कर ठावेरे ।
तप मूरत सुरत मुनिराय तणा गुण, "सुजाण" गावेरे ॥ सो० ८ ॥

१४३
भावना स्तुति

(दोहा) भव दुःख दधिके माहिने, भाव नाव सम जाण ।
तातें तिरिया भविक जन, भाव सकल गुण खान ॥

चाल-"जीवरे तू शील तणो कर संग"

जीवरे तू शुद्ध भाव मन आन, भाव सकल गुण संपजे रे ।

१४४

श्रावक क्रिया

(दोहा सोरठ)

कर कर चाव किरोर, भोर ऊठ भगवन्त भज
यो अवसर मत छोर, हाथ लग्यो अलगो खिसे ॥

चाल—"इण सरवरिया की पाल, हिंडोरो घालस्या म्हाका राज"।

शुभ-किरिया अनुष्ठान, समयसर साधिये,
म्हाकाराज समय सर साधिये।
यथा शक्ति जिन-धरम रतन आराधिये,
म्हाका राज, रतन आराधिये ॥ १ ॥
रयणी को पश्चिम जाम[1] काम सिद्ध कीजिये,
म्हाका राज काम सिद्ध कीजिये।
मुशकिल यह अवसान, लाभ बहु लीजिये,
म्हाकाराज, लाभ बहु लीजिये ॥ २ ॥
घटिका च्यार विचार, चतुरचित्त चातुरी म्हाका० चतु०।
ऊठिये आलस छोड, नहीं दिल पर आतुरी म्हा० नही० ॥ ३ ॥
जाप जपो नवकार, सार जिनमत सही, म्हाका।
देव-गुरू धर्म तीन तत्व साचा सरधही, म्हा० तत्व० ॥ ४ ॥
शरणा चार सभार, मनोरथ दिल धरो, म्हाका० मनो०।
उप शम शान्त कषाय, करी छिन में तिरो, म्हाक० करी० ॥ ५ ॥
तजिये पंच प्रमाद, आठ मद मारिये, म्हाका० आ०।
द्वादश व्रत विलोक, दोष सहु टारिये, म्हाका० ॥ ६ ॥

१—जाम—पहर

समकित पुष्टी काम सबरा पोष पाइये मन्हां० २।
पंचासव रू रे रोक संवर निपंजाइये, म्हां० १ ॥ ७ ॥
वेठिवे पचक्ख स्थान आसय प्रतिसेखिये म्हां० २।
सामायिक सुधठाय समता सुख पेखिये, म्हां० ॥ ८ ॥
चित्त-प्रमन्न गुरु माल जपो जिन जप जपो म्हां २
सेवना ध्यावना भाव भक्ति मन गह गयो म्हा ॥६॥
स्तवन[१] तवन सम्भाय सु जिन जस गाइये म्हां १।
आतम-अनुभव रंग प्रमोद बढाइये म्हां ॥ १० ॥
ज्ञान ध्यान मिल नेम प्रेम भर पोखिये म्हां० २।
तृष्णा लोम निवार के मन सन्तोषिये म्हा ॥ ११ ॥
आयो कहां ते पथ्थ एक, अकेलो फिर जावसी म्हां० २।
धरम की अर्ची बांध, बहुत सुख पावसी म्हां० १ ॥ १२ ॥
दान शील तप भाव मे मोक्ष मारग वरो म्हां०२।
द्वादश भावना भाव भविक भव जल तिरो म्हा ॥ १३ ॥
रासिस करो प्रतिक्रमण सदासुख भाव सु म्हां०।
मिथ्यादवे अतिचार, आलोओ चित चाव सु, म्हां० ॥ १४ ॥
रोवन खाम्बो लोम मिच्छामि दुक्कड दीजिये म्हां० ॥
पच्चखाण करी गुरु वन्द खमावण कीजिये म्हां० ॥ १५ ॥
सामायिक हुई पूरण काम सारा पारी म्हां०।
चावरे नियम दृढाव विचारे चित रली, म्हां० ॥ १६ ॥
जैन धरम सम ध्याय, निरन्तर चाखिये म्हां० १।

१—स्तुतिरूप तवन बनारसी आदि के पद

कुविसन कर्मा दान, अभक्ष सहु टालिये, म्हा० ॥ १७ ॥
तजिये कुकर्म अनीत, धर्म रुख राखिये, म्हा० २ ।
गुरु मुख शास्त्र विनोद, सुणी रस चाखिये, म्हा० ॥ १८ ॥
चढते चित सुध वित, सुपात्र दान दीजिये म्हा० २ ।
या सम अवरन लाभ, लाहो खूब लीजिये, म्हा० ॥ १९ ॥
या विध धर्म विलास, करो निश दिन सदा, म्हा० २ ।
सुमति सु राखो प्रीति, कुमति तजदो तदा, म्हा० ॥ २० ॥
प्रात समय की रूड़ी रीत, श्रावक क्रिया कही, म्हा० २ ।
शिव-सुख फल पहिचान, "सुजाण" सेवो सही, म्हा० ॥ २१ ॥
साढा उगणीसे की साल, फागण सुद साते भली, म्हा० २ ।
श्री गुरु देव परसाद, पजोई मन रली, म्हा० ॥ २२ ॥

१४५

कषाय निवारण

"चाल—गहरा फूल्या है गुलाब गैंदा बाग में है" ।

चेतन चतुर कषाया ऊपशम कीजिये, जी
सुद्ध समता रस रूच पीजिये जी ॥ टेर ॥
विरवा वचन वदे अतिआकरा जी, क्रोध चण्डाल समान कहावे ।
तामस त तप सु भ्रुकुटि चढावे, पर भव नरक निगोद भमावे
॥ चे० १ ॥
मन मान मकर कह्यो केवली जी, गरव चले कहो किसका भाई ।

सनत कुमार का रूप बिगाई, रावण कोई निज ठकुराई ॥ चे० २॥
कुल कपट कुमति मत केलवो जी या से प्रीति न रंच रखावे।
भाई मिथ्या-दृष्टि कहावे त्रिजग जोनि में गोता खावे ॥ चे० ३॥
तृष्णा जग बिच मोटी मोहनी जी जोभी लगा गियो नहीं नाता।
अपने मतलब में रंग राता सागर सागर पड़ दुःख पाता
॥ च ४॥
क्षमा मार्दव सरल निस्पृह भावसूं जी या से अनुक्रम कीजो ख्याता।
जिनमत मूल कारण विख्याता, रिपुपुर 'सुजाण' सुख वरदाता
॥ चे० ५॥

१४६

चाल— 'भरत भाई तुम पर आया महारा वीर'।
तजदे तू क्रोध की चाल चतुर है तो तज दे तू क्रोध की चाल
॥ टेर ॥
क्रोधकियो नर आप विचारे बोले अाल पंपाल ॥ च १॥
तामस कर कर लाल भावे लगा भार्या ने कहे गाल ॥ च २॥
अनुताप करी क्रोधातुर होय जावे विकराल ॥ च ३॥
त्रिवधी मान बड़ाई बोले जाये कोष्पो काल ॥ ४॥
कोड़ वरष को तप फल खोवे देखो क्रोध चण्डाल ॥ च० ५॥
गत बिगाड़े क्रोधी नर वैरी होवे विच्छू मे सिंह व्याल ॥ च० ६॥
'सुजाण' कहे समतारस मीठा वे ओढ़ल्यो वचन रसाल
॥ च० ७॥

१—सर्प

१४७

चाल—"तेहीज"

मत कर मान गुमान, ग्यान लख,'मत कर मान गुमान ॥ टेर ॥
सज्जन तनुजनने नहीं देखे, तोड़े तुरत तटके तान ॥ ग्या० १ ॥
श्वान पुच्छवल जाय न जैसे, मानी भरे वट श्रान ॥ ग्यान० २ ॥
वाकोही बोले वाकोही चाले, वाकी ज्यू तीर कमान ॥ ग्य० ३ ॥
अति गरव ते ठोकरा खावे, जाय उपजे पापाण ॥ ग्या० ४ ॥
सभूम चक्री मान न मूक्यो, गयो नरक पुर थान ॥ ज्ञा० ५ ॥
मान रूप गज तज बाहुबल, केवल पायो परधान ॥ ज्ञा० ६ ॥
मान तज्या सन्मान वधत है, समजो सब ही 'सुजाण'
॥ ज्ञा० ७ ॥

१४८

चाल–तेहीज

माया मत सेश्रो मतिवान, समझ देखो माया मत सेश्रो मतिवान
॥ टेर ॥
अति कपटाई महादुःखदाई, वेऊ लोक विगड़ान ॥ समझ० १ ॥
प्रीतिरूप पय झट फट जावे, काजी कपट मिलान ॥ स० २ ॥
विल्ली ज्यू छल ताकत निश-दिन, वक ज्यू लगावे दभी ध्यान
॥ स० ३ ॥

भमाई सम–दृष्टि दाख्यो माई मिथ्याति कह्यो जान ॥ स० ४ ॥
स्त्री नपुंसक तिर्यञ्च पावे कपट तणफल पहिचान ॥ स० ५ ॥
ज्याई ऋषि मित्र पुर आवो, विष दियो केसी अवसान ॥ स० ६ ॥
'सुजाण" कहे मद्रक गुरु भाख्यो जो तुम चाहो कल्याण ॥ स० ७ ॥

१४९

चाल—पूर्ववत्

लोभ पाप को मूल तू तज दे प्राणी लोभ पाप को मूल ॥ टेर ॥
कुल अकुल न जोवे लोभी आवी है मोटी भूल ॥ तू० १ ॥
मनुष्य मारतां तनिक लज्ज नहीं, इन लोभ तणे शिर शूल
॥ तू० २ ॥
खाना खाय न पीवे पानी तृष्णा में रहो नित मशगूल ॥ तू० ३ ॥
चोरी कर पर धन हर हरखे फूलवाड़ी में जैसे फूल ॥ तू० ४ ॥
मार पड़ शिर-गिरियां खोवे किम कियो कर्म प्रतिकूल
॥ तू० ५ ॥
सागर सेठ सागर पड़ डूबो, मम्मण सह्यो दुःख शूल
॥ तू० ६ ॥
"सुजाण कहे" कहे लोभी नर जासे पर कोई होसी सूल
॥ तू० ७ ॥

१५०

तामस निवारण

(दोहा) कोमल वचन सुहावणो, मिष्ट मनोहर धीर ।
समय उपा' सच बोलिये, चढे चोगणो नीर ॥ १ ॥
चाल—"चेतन तू ध्यान आरत क्यू ध्यावे" ।
किसी सग विरुधा न बोलो भाई, थाने सत गुरु सीख बताई ।
॥ किसी० टेर ॥
कटुक वचन लगे तीर सरीखो, काल जे छेद कराई ।
अवर घाव तो रुक भी सकत है, वचन घाव न रुकाई
॥ किसी० १ ॥
क्रोध चण्डाली घट बीच आई, सुध बुद्ध सहु विसराई ।
पल मे प्रीति पुराणी तोडे, या देखो चतुराई ॥ कि० २ ॥
मात पिता सुत न्याती गोती, संगिनी गिणे न सगाई ।
गाल राल बोले मुख सेती, पड़े आपके माही ॥ कि० ३ ॥
सगा भाया के वणगत नाही, कलियुग की अधिकाई ।
धन खरचे बहु झगड़ा झगरे, राज तेज चढजाई ॥ कि० ४ ॥
कोप चढ़े तन मे रस घोले, सामी लेत लड़ाई ।
आप तपे और कू तपावे, क्रोधी नर दु ख दाई ॥ कि० ५ ॥
वचन तणे वस भारत हुवा, कथा पुराण सखाई ।
सुगण नरा तुम सोचो दिल में, तज दो वचन बुराई ॥ कि० ६ ॥
मीठा बोल्या मोल (दाम) न लागे, जहा तहा होत बड़ाई ।
वैर विरोध रहे नही किण सु, "सुजाण" सुख वरदाई
॥ किसी० ७ ॥

१५०

तामस निवारण

(दोहा) कोमल वचन सुहावणो, मिष्ट मनोहर धीर ।
समय उपा' सच बोलिये, चढे चोगणो नीर ॥ १ ॥

चाल–"चेतन तू ध्यान आरत क्यू ध्यावे" ।

किसी सग विरवा न बोलो भाई, थाने सत गुरु सीख बताई ।
॥ किसी० टेर ॥

कटुक वचन लगे तीर सरीखो, काल जे छेद कराई ।
अवर घाव तो रुझ भी सकत है, वचन घाव न रुझाई
॥ किसी० १ ॥

क्रोध चण्डाली घट बीच आई, सुध बुद्ध सहु विसराई ।
पल में प्रीति पुराणी तोड़े, या देखो चतुराई ॥ कि० २ ॥
मात पिता सुत न्यारी गोती, सगिनी गिणे न सगाई ।
गाल राल बोले मुख सेती, पड़े आपके माही ॥ कि० ३ ॥
सगा भाया के बणगत नाही, कलियुग की अधिकाई ।
धन खरचे बहु झगडा झगरे, राज तेज चढजाई ॥ कि० ४ ॥
क्रोध चढ़े तन में रस घोले, सामो लेत लड़ाई ।
आप तपे और कू तपावे, क्रोधी नर दुःख दाई ॥ कि० ५ ॥
वचन तणे वस भारत हुवा, कथा पुराण सखाई ।
सुगण नरा तुम सोचो दिल में, तज दो वचन बुराई ॥ कि० ६ ॥
मीठा बोल्या मोल (दाम) न लागे, जहा तहा होत बड़ाई ।
बैर विरोध रहे नही किण सु, "सुजाण" सुख वरदाई
॥ किसी० ७ ॥

तू केहनो थारो कुण चेतन, ज्ञाता यू मन समझाता ।
चन्द नरेन्द्र कुकुंट कर दीनो, माता थई दुःख दाता रे
॥ अव० ७ ॥

आद्रकुमार जिसा मोह छलिया, सूत के तार बधाता ।
गोतम केवल-नाण न उपनो, मोह जित ज्ञान उपजाता रे
॥ अव० ८ ॥

सीता विरह राम पशु पक्षिन सु, केई केई कीनी बाता ।
जब चेत्या तब मोहराय कु, क्षण एक माहि खपाता रे
॥ अव० ९ ॥

कोड़ा कोड़ सतर सागर थित, मोह कर्म की अवघाता ।
ऐसो प्रबल मोह जीते सो, सूर वीर पद ठाता रे ॥ अव० १० ॥
निर्मोही वश में मोह न व्यापे, सक्र सभा गुण गाता ।
देव परीक्षा करत न चलियो दृढ समकित जश छाता रे
॥ अव० ११ ॥

मोह-मद पी उन्मत भये नर, धन जोवन डह डाता ।
भोलप तज चित्त चेत चिदानन्द, जाता काल न पाता रे
॥ अव० १२ ॥

रग मेरू सत सुरपति-पत्नी, शची पय इन्द्र पडाता ।
पद ठेलत कहै तुम तन कोमल, हरि मधु वचन मनाता रे
॥ अव० १३ ॥

धिग धिग मोह कर्म यह विवस्था (व्यवस्था) पारावार नहीं आता
"सुजाण" कहे इन कु जीते सो, आवागमन मिटाता रे
॥ अव० १४ ॥

१५३

चाल—कडखा की

सुण हो मतिमान अवसान चूके मती, सुगुरु-शिक्षा उर आण भोरा।
स्वल्प आयु विभव, विचित्र दु ख जीयबो,
मूढ तू पैर क्यु धरत चोरा ॥ सुणहो० टेर ॥
पल्ल-सागर तणा सुख थिर ना रहे,
तज सुख तुच्छ जिम गिरत ओरा।
विषय में राचियो धरम नहीं जाचियो,
नर भव पाय रह्या तू कोरा ॥ सु० १ ।
मनुष्य आरज वरा कुल उत्तम, आयु चिरा,
पूर्ण इन्द्रिय रुज रहित थोरा।
सत गुरु सग पै सूत्र सुणबो कठिन,
श्रद्धा पराक्रम फोरा न फोरा ॥ सु० २ ॥
राग मे पाग रहे देव गुरु धरम कू,
ओलख्या नाहि धिग जनम तोरा।
अमर चक्री हरी सुख छोरी करी,
नरक त्रिजोनि उपजन्त ढोरा ॥ सु० ३ ॥
हरख परणत उत्पन्न सुत कील सम,
पैर अड़ी जंत भया वाम[1] खोरा।
मोह फाटक जरी कुमत आगल करी,
निकास नहीं पात परिवार पोरा ॥ सु० ४ ॥

१-स्त्री-खोडा है

जिनधर्म पाय सेवे नहीं तिनहू, करम भरदठ क्यूं भमावे
॥ सु० ५ ॥

अथिर संसार जाण को भविजन परमसु लगन लगावे ।
"सुगण" कहे उत्तम नर सोही, प्रभुजी सु प्रीत रचावे
॥ सु० ६ ॥

१५३

चाल-'श्री कस्याण मोरवां वाला ।

चित चेतो चतुर नर नारी गुरु मिलवा हे उपगारी जी ॥ टेर ॥
उपदेश सुणो सुविचारी, यो जन्म न जाज्यो हारीजी ॥ चि० १ ॥
नर भव को दिसावर भारी धर्म धन संची लो हारी जी
॥ चि २ ॥

जो सत्य समझ हे थारी, तो मन ममता मद मारी ॥ चि ३ ॥
पापारम्भ दूर निवारी धर्म ध्यान करो हुशियारी जी
॥ चि ४ ॥

विषयादि कषायं झारि भर निज गुण रतन पिटारी जी
॥ चि ५ ॥

मोग सगी खाज ज्यूं प्यारी, पिछ पीछे हे दुःख भारी जी ॥चि०६॥
तप संजम किया धारी फल आगे भविक उदारी जी ॥ चि ७ ॥
जिन वचन आसथा धारी प्रभु ऐसी पार उतारी जी ॥ चि० ८ ॥
"सुगण" विरख की बारी रख धर्म में लगन करारी जी
॥ चि ९ ॥

रहत "सुजाण ' घर वध में दोड़तो जेम प्रजापने घाम घोरा
॥ सु० १० ॥
थिप्रग, शर निधि शशी ' साल हरिगढ़ भली
फाग पक्ष शुक्ल होरी नी होरा।
पूज्य विनयचन्दजी प्रसाद निश दिन रहो, आतमगुण ज्ञानका
रग रोरा ॥ सु० ११ ॥

१५४

चाल-"बड़े घर ताल लागी रे, जीरडलारी जोत जागी रे"।
सुगुरु इम सीख सुणावेरे धरम के मारग ल्यावेरे।
आतम हित बोध बतावेरे, जीवका भ्रम मिटावेरे ॥ टेर ॥
पुत्र अनूप प्रिया मन हरणी, सेवक हुकुम उठावे।
हयवर गयवर राज कोप सब, दम निकल्या झूठ दिखावे
॥ सु० १ ॥
मात तात पुनि भ्रात सज्जन गण, देखतड़ा मन भावे।
समर्थ नहीं जम सु जे राखण, रोकर अलग रहावे ॥ सु० २ ॥
धिक् धिक धिक् ससार व्यवस्था, देव चव तिर्यञ्च ठावे।
भोगलिप्त षट् खण्ड को स्वामी, मर कर नरक सिधावे
॥ सु० ३ ॥
नारक दुःख सु निगोद अनन्ता, एक मुहुर्त माय पावे।
पैंसठ सहस्र पाच सै सटतीस, जन्मरु मरण करावे ॥ सु० ४ ॥
इम वहु कष्ट निकल कोउ प्राणी, मनुष्य गति में आवे।

शील पर सेठ सुदर्शन की कथा

दोहा—नमस्कार का ध्यान से, सुगग करी ने काल।
सेठ रिषभ सुत ऊपनो जग में जस उजमाल ॥१॥

चाल—अपने पद को तज के चेतन, पर मे फसना ना चाहिए।

सेठ सुदरशन जिन धर्म धारक, सील रतन सुध रखवायो।
कपिला अभिया ते, चल्यो नहीं जग में जस अधिको छायो ॥आकडी॥
अग देश चम्पापुर नीको, दधिवाहन राजा जानो।
अभिया पटरानी, मतिनो सागर सोहे प्रधानो॥
त्याग त्याग वाचा मे दृढ़ नृप, सूरवीर महा मरदानो।
राज रीति जाने न्याय में खीर-नीर-सम पहिचानो॥
सेठ श्रेष्ठ सुखिया सब बसता, दान धर्म दिल में भायो ॥ १ क० ॥
सेठ रिषभ पतनी गुणवन्ती, सूर सुपन ले निसितामे।
गर्भ मासज बीत्या, तब पुत्र प्रसवियो अभिरामे॥
मोछब करके करी दसोटण, दिल खुस भक्ति इगामामें।
सज्जनगण मिलके, दारक को सुदरशन दीनो नामे।
सर्वकला तत्पर जाणी सुत, नार मनोरमा परणाये ॥ २ क० ॥
मात तात सद्गति में पहुँच्या, कुलरीति सब ही कीनी।
दधिवाहन राजा, तिणाने, नगर सेठ पदवी दीनो॥
सेठ सुदरशन कुल जस केतु, सुगुरू सेवा सुद्ध लहलीनी।
समता के सागर, पोतानी नारी सू प्रीति चीन्हीं॥
सेठ-प्रीत प्रोहित से अविहड[1], प्रोहित मोटो घर आयो ॥३ क०॥

१—अत्यन्त

में अपछर तू इन्द्र रुप सम, मकर[1] जेज[2] मन उमेगायो ॥ क० ७॥
तन–मन–वच वस करी सेठ जी, ध्यान जिनद पद को आनी।
सा लटका करती सरम हर नर्म गर्म बोली वाणी ॥
सेठ सुदर्शन नग मम दृढता, थाकी तब कपिला मुरझाणी ।
कायो त्सर्ग पारी कहे हुँ धुरपण्डा[3] छू पहिचानी ।
महिला तुम सी मिल्या कुण चूके, मो अभाग छत्र सिर पे थायो
॥ क० ८ ॥

सेठ वचन सुण मन मे लाजी, पलती कपिला इम बोले ।
कासू मन कहज्यो, एम कर लीनो छे दोनू कोले ।
सेठ सग उत्तरी मा त्राला, द्वार पाट तत्क्षण खोले ॥
श्रेष्ठी घर आके, हरष में गरक भयो दिल नहीं डोले ।
पर घर जावण सेठ नेमलई, धर्म ध्यान दिल बरतायो ॥ क० ६ ॥
इन्द्र महोत्सव भूप मडायो, नर नारी देखण को जावे ।
घर सम रिद्धि लेके, सखिया सब राग मिल मि (जु) ल गावे ॥
राणी माहणि[4] सग गज चढ कर मेले की छवि देखण आवे ।
देखी सेठाणी पचही पुत्रा सग अति सोभावे ।
किण की यह त्रिया कपिला पूछे, रूप रति–सम दिखलायो
॥ क०-१० ॥

डिभ[5] सहित सजछजकर आई, सेठ सुदरशन की दारा ।
पच पुत्र एहना सकल ही, जन मन कू लागे प्यारा ॥

१—मकर २–देरी ३–जन्म से नपुसक
४–ब्राह्मणी–पुरोहितानी ५–बच्चों के साथ

पौषध व्रत कर ने, निजातम काज सुधारे गुणवालो ।
मेलैं मोज करता राणी चरित्र एक इम दरसायो ॥ १५ ॥
पेट दरद सुण राजा पूछे कहो राणी, थे किम आजे ।
वेदन मुख भाखो, कराबा तुरत रोग को इलाजे ॥
नाके सल घाली चरिंताली, अरि पे चढिया तब महाराजे ।
कामदेव पूजन री, प्रतिज्ञा करी आप रे सुख काजे ।
ते विसरी निसरी[1] मोच्छव में, पीडे वेदन अति हा हायो ॥क१६॥
हा जाओ तन वेदन हरिये, पूजो मूरत कर खुशियाली ।
आय कहे धाय ने, सेठ ने लाओ ये झटपट झाली ।
पोषध शाला सू सेठ पकड धर, धाय आणियो सुखपाली ।
अब सुख विलसो धाय यू बोले, सुण तू मतवाली ॥
मेघ वृष्टि ते कुसुम खिले ज्यों, राणी रो मन अति रीझायो ॥१७॥
स्नान मजन कर चक्षु अजन, वस्त्राभरण पहिरया भारी ।
मदमाती रानी केसर की खोल भाल बिंदली न्यारी ॥
चोबाचन्दन मुख ले बिडला, वेसर सोहे भलकारी ।
मृदुवाचा वदती, सेज रग हेज मोज माणो सारी ।
हूँ नृप राणी तू पुर श्रेष्ठी, कर प्रीत रीत मन दृढायो ॥१८॥
मन हस्ती मस्ती मे आयो, मदनाकुश दे बस आनो ।
रतिग्यान देवण में, चतुर कहलावो, तो हठ का[2] ताणो[3] ।
शून्यालय दीपक सम मत हो, सूर होय के क्यों कायर थाणो ।
पुनवे (से) भोग पद्मिनी नीतिशास्त्र कहे इम पहिचानो ।
हँम मुख बोलो प्रेम पियारा, कहा सोच उर छाआयो ॥ १६ ॥

१—निकलगई, २—क्यों, ३—खीचते हो ।

फिर मुक्ति सिधाया, बिनारी मन्थन में महिमा भारी ॥
उगणीसे बासठ शुभ संवत, आसोज विजयदशमी प्यारी ।
जयपुर में जयकारी "सुजाण" कीन्ही भविजन सुखकारी ॥
पूज्य विनयचन्दजी पद प्रणमी सेठ सीखमें सद्भाव ॥ कर्म रंग॥

शालीभद्रजी की कथा

चाल- 'तू दियो हमारो लोभ, प्रभू कू मझरे २। तेरे सिर पर'
धन्य शालीभद्र जत तजी भलो भवफिरायो मनो० ।
विमल जिनन्द कर चित नम् जिन पाया ॥ आंकणी ॥
सुरपुरी सम प्रत्यक्ष राजगृही ने मानो २,
जहां प्रभुता इन्द्र समान श्रेणिक राजानो ।
पटरानी चेलणा अभयकुमार प्रधानो २,
चोर नहीं मन चोर तहां दिखलानो ॥
सुखिया सगला लोक, भूप जस छाया ॥ वि० १ ॥
तिहां महर्धिक गोविन्द सेठ, भद्रा तसु नारी २
सा प्रसवयो शालिभद्र महा सुखकारी ।
यौवन वय बत्तीस वरी त्रिया वो प्यारी २
तदनन्तर गोविन्द भये भयहारी ॥
सुर भई स्नेहवस सुत पे पेटयां पठाया २ ॥ वि० २ ॥
रतन कम्बल व्यापारी बेचण पुर आये २

सील लाज की जहाज डूबी, आज सुदरशन पिघलायो ।
अगुली मुख देके, राणी रे महल चली राजा आयो ॥
कान्ता वचन सुणी वपु देखी, नृप मन में प्रजलित थायो ।
रग छे या छाती, मुझ घर हुते नहिं टलवायो ॥
अब नीश रीस वस कहै नफार[1] के, सेठ ने सूली दो धायो ॥२४॥
सिर मु ड स्याम मुख कर चाढी खर, ढोल बाजता भट झाल्यो ।
अपवाद बदन्ता, सुणी ने सेठाणी रे मन साल्यो ।
मुझ पति सील अखड न खडे, प्राचीन पाप ला रहे पाल्यो ॥
जिन ध्यान लगायो, सेठ बहुला जन सग सूली चाल्यो ।
सूलि देत ही, रतन सिंहासन अधर करे सुर सुखदायो ॥ २५ ॥
सेठ सुजस कहे चाकर आकर, राय आय नमे सुद्ध मतिया ।
सबचरी[2] सुनै देव कहे, अभिया राणी कुसतिया ॥
पच दिव्य बरसे सहु हर्षे, जन मन आनन्द रंग रतियां ।
राय दोष खमावै, सेठ कहै ये मुझ कर्म तणी बतिया ॥
भपन सग सेठ घर आयो, पत्नी पति निरख हरस पायो ॥ २६ ॥
राणी फासी ले हुई विंतरणी, धाय पाटलीपुर जाई ।
हिरणी वेश्या घर रही, सा पाप फल पोते पाई ॥
भू ठ जाल-जग जाण सेठजी, कालान्तर मे दीक्षा ठाई ।
पाटलीपुर वैश्या, तीन दिन कष्ट दियो मुनि ने साई ॥
बन विचरत व्यतरी दु ख दीन्हो, व्याल रूप डस फू फायो ॥२७॥
शुक्ल ध्यान चढ़ केवल लीन्हों, तारया बहुधा नर नारी ।

१-नोकर २-सब चर्या

महतारी मग मिली पत्र सुधि पाखया २।
हरख पाय तिहाँ, आय वीर पद न्यास्या।
पद पूर्व भव सुख मात अवदंत[1] बताया २॥ वि २४॥
वीर वया सुन वैन चित चमकया २।
संगम भव मान पसाय अ यह किया किरतया।
भव भवो तम माल चूको मत दायया २।
आज्ञा ले सर्व समाय वेई सुखदायया।
विपुल गिरी पाद[2]गमम, संथार पोहया २॥ वि० २५॥
श्रेणिक राज भरु मद्रा, बहुपर बंदे २।
भद्रा तब पूछे नाथ किहाँ फरजन्द।
वेमारगिरी सथारो कियो आनन्दे २।
आप गमी मोह वस किया बहु आक्रन्द ।
श्रेणिक नृप समझाय, गृह मिजवाया २॥ वि० २६॥
मास संथारे स्वार्थ-सिद्ध भव फरसी २।
तिहाँ सू चव महाविदेह क्षेत्र अवतरसी।
अष्ट क्रिया सुर बाई, सकल शिव वरसी २।
धर्मां पुरुसोरा, नाम लिया अप हरसी।
जैसे रवि ते रजनी तम न रहाया २॥ वि २७॥
उगणी से भव साठ, सत्यत्तर साले २।
माघ शुक्ला तरस विरवार समाजे।
पूज्य विनय महाराज आज्ञा सस गाजे २।
जैपुर शहर सुखान, मैं आय विराजे।
तास प्रसाद सुखमल" मुनि गुण गाया॥ वि २८॥

१—अवदात वरत—वृत्तान्त २—पाद की तरह अडोल पड़े रहना।

स्थूलभद्रजी की लावणी

"छप्पय छन्द"

पाटली पुर नृप नन्द, सकडाल मन्त्री सकला जुत ।
लाछलदे तसुनार, थूल भद्र सीरियो सुत ।
कला सीखवा थूलभद्र, कोस्या घर आयो,
विलम्यो द्वादश वर्ष, साढि बारह कोटि द्रव्य पठायो ।
वर रुचि का जोग सु, तात मरण लख बात ।
सभूत विजय पैं दीक्षा लई । वेश्या सुण पछतात॥ १ ॥

राग—"केदारो"

धन धन थूल भद्र ऋषिराय, थूल भद्र०, धन धन० ॥ टेर ॥
श्री गुरु आज्ञा लेय चोमासे, कोस्या प्रबोधण जाय ।
चेटी[1] कह्यो सव, सामो लइयो मोतियन थाल वधाय ॥ धन० १ ॥
शिर धणी तुम इम, चूण्डामणि सम चन्द्रमुखी कहेवाय ।
भो कथा विस्मृत करि मो किम, को गोरी विलमाय ॥ धन० २ ॥
पूरव प्रीति की रीति राखो, कहा मो जिय तलफाय ।
इहा पधारो चित्रशालि में, चातुर्मास दो ठाय ॥ धन० ३ ॥
आउ ट[2] हस्त नित, रहजे अलगी, इम कही तिहा रहाय ।
मृग-त्राधण सम तोय सगम, पिण तुम्ह बोधण आय ।
॥ धन० ४ ॥

१—दासी २—एक मुट हाथ—मुट्ठी बधा हुआ ।

रतनकवल के चोप[1] सुलट्यो गुरु वन्दी शील दृढ़ाय
॥ धन० १४ ॥

उगणीसैं पट्ट शुभ सम्मत सोहे, ज्येष्ट शुक्ला तृतीयाय।
पूज्य विनय प्रसाद जैपुर में, "सुजाण" ये मुनि गुण गाय
॥ धन० १५ ॥

विजयकुमार की कथा

(दोहा) आदिनाथ वारे हुआ, गुरु मुख सुणियो एम।
ब्रह्मव्रत पाल्यो किण विधे, ते सुणज्यो धर प्रेम॥
चाल-'कुब्जा ने जादू डारा, जिन मोह लिया श्याम हमारा रे"।
थाने धन धन विजय कुमार, शील शुद्ध धर्म तणा धरणार
॥ थाने० टेर ॥

दक्षिण देश कोशाम्बी नगरी धन्नो सेठ उदार।
तस सुत योवन वये गुणालय, आयो मुनि दरबार॥ शी० १॥
देसना सुण पर वनिता त्यागी, स्व दार कृष्ण पक्ष छार।
इम करि सूं स सुगुरु पद्ध वन्दी, गृह गच्छ चढ़तो[2] स्वार
॥ शी० २॥
अपर सेठ धन्नो तिहा वसतो, विजया धिया तसुसार।
रूप रम्भा सम विजयकुमार ने, परणाई तिणवार॥ शी० ३॥
सोलह शृंगार सजी गज गमनी, पिउ महला ठाढी आर।

२-निमित से २—सवारी घोड़ा

केवल नाण प्रगट कर पहुँता, दम्पति मोक्ष मझार ।
सुण आख्यान "सुजान" गण हरपे, जिम द्रुम मोतियन थार
॥ शी० १३ ।

व्योम ऋतु निधि ईन्दु वरसे (१६६०), ज्येष्ठ मास चे ढार ।
जैपुर पूज्य विनय किरपा ते, कीनो "सुजाण" मठार
॥ शील० १४ ॥

"चाल तेईज"

अजी धन धन्ना जी ऋषिराया, अजी श्रीमुख आप सराया
॥ अजी धन० टेर ॥

अनुक्रम गाव नगर पुर विचरत, वीर काकन्दी आया ।
जिन आगम सुण राजा पुर-जन, धन्नाजी भी धाया ॥ ॥ अज० १ ॥
दरशन कर परसन मन काया, चरणा शीश नमाया ।
देसना धुन सुन थया विरागी, सजम सु लिव ल्याया ॥ अ० २ ॥
निज घर आय माता समझाई, आज्ञा ले हरपाया ।
नार बत्तीस तजी अपछर सी, कोड़ बत्तीसरी माया ॥ अ० ३ ॥
उच्छव कर आय प्रभु पाय वन्दी, निज गुण रग सवाया ।
स्वहस्त केश लोच ले दीक्षा, अभिग्रह कठिन कराया
॥ अजी० ४ ॥

छट्ठ छट्ठ तप कर पारण आम्बिल, नाखित आहार लिराया ।
सो भी धोय खाय कू चो कर, देह सू ममत मिटाया ॥ अ० ५ ॥

अट्ठ धरम गोचरी आय घर में मार चप्पड़ दे गाली ।
कहे मर्दांसा भस मही रोपज सुख सोहे वैराग की डाली
|| श्र० १३ ||

षट मासा में मोक्ष सिधाया, धार धरम की आली ।
'सुगाम' कहे इमका मुनि वन्दो, पाबी अम्बगढ़ में परनाली
|| श्र० १४ ||

अनाथी महर्षि की कथा

(दोहा) उत्तराध्ययन के बीसवें अनाथी महानिर्ग्रन्थ ।
श्रेणिक ने प्रति बोधियो सो किंचित परबन्ध ।
चाल—बंधव बोल्या माना हो ।

अनाथी ऋषि मम भाया हो, अनाथी० || टेर ||
संयम से विचरत मुनि राजग्रही बन आयो हो ।
वनखंड हेठे आयने ध्यानस्थित बैठाया हो || अ० १ ||
उस समय महीपति नगरी वनक्रीड़ा ने आया हो ।
नृप रूप मुनि देख ने मन आश्चर्य पायो हो || अ० २ ||
अहो वरण अहो रूप रूड़, अहो मृदु सोम दिखायो हो ।
अहो क्षांति मुक्ती पद्मनी, भोग से विरक्त थायो हो || अ० ३ ||
उस पद वन्दना प्रदक्षिणा करी, ऋषि पै नृप बैठायो हो ।
लघु वय किम दीक्षा लई सो प्रतिउत्तर चायो हो || अ० ४ ||
नाथ मो जग में कोई नहीं ऐसे दुःख स बचावे हो ।

पट् गोठीला भोग भोगवे, बन्धुमति न करी आली ॥ अ० ४ ॥
मुझ नारी सु नजरा देखत, भोगें भोग उदाली ।
अर्जुनमाली मन मे चिंते, देव पूजियो म्हाली ॥ अ० ५ ॥
कोरोई पत्थर दीसे यह तो, मो सकट नेक न टाली ।
इम चिन्तवता ताम ततक्षण, जक्ष काय घस्यो ततकाली
॥ अ० ६ ॥

बन्ध ताड पट जन, एक स्त्री, मुद्गर मार उछाली ।
पट मामा लग मात हि मानुस, नित मारे घेरो घाली
॥ अ० ७ ॥

सुदर्शन कहे तात मात ने, वीर आया दानदयाली ।
तेना दरसण करवा जास्यू, मज्जन करग रया पाली ॥ अ० ८ ॥
राज हुकुम घर की नहीं आज्ञा, दिया सेठजी चाली ।
लोग कागरे हुआ इकट्ठा, कहे देखो सेठ मछराली ॥ अ० ९ ॥
अर्जुन आवत देख सेठजी, अनसन सागारी झाली ।
मुद्गर उछालता आयो उमायो,, जोर न चले रह्या भाली
॥ अ० १० ॥

यक्ष गयो अर्जुन पड्यो धरणी, फेर फिर गया लोग फधाली
सेठ तणो धर्म धीरो कहे जन, समोशरण सहु, भरया उताली
॥ अ० ११ ॥

अरण सरण पार साथ ले माली, भेट्या जाय करुणाली ।
वाणी सुण अर्जुन ले सजम, दियो सहज[1] ने टाली ॥ अ० १४ ॥

१—क्रम को ।

गजसुकुमालजी की कथा

(दोहा) वसु देव सुत गुण निपुण परम सूर सरदार ।
संयम ले सिर अगन को परिसह सह्या अपार ॥
चाल बधाउ मेरे पति का भाग बधाय ।
वन्दू नित मुनिवर गजसुकुमाल वन्दू ॥ टेर ॥
सुन्दर बाल बालक देवकी, देखी सोच विहाल ।
कृष्ण कहे कहा सोच पड्या मां हस्त दियो जिम गाल
॥ वन्दू १ ॥
पट बालक भद्दिलपुर वसिया, अहीर घरे तु बाल ।
लाड कोड खेला नहीं किंचित मैं न रमाया बाल ॥ वन्दू २ ॥
तुम्ह बंधव होसी जिम करस्यूं आठ भारत टाल ।
कृष्ण भक्त कर अमर समरियो, सो प्रगटयो तत्काल ॥ वन्दू ३ ॥
बालक हाथी सुर कहे वैराग लेसी बड संजम भाल ।
माधव सब जननी ने दाख्या सुखिया सरस सवाल ॥ वन्दू ४ ॥
सुहत राम बेता, सुत जनम्यो सुन्दर रूप रसाल ।
याचक महायाचक जिम दान दे जिमि मेह वृष्टि परमाल
॥ व० ५ ॥
जिमाव दसोठण देकर विदया पुष्प माल गल घाल ।
गजसुकमाल नाम स्थापन कर, दुलरावती बधावे बाल ॥ वन्दू ६ ॥
दुखिया बालू हथी पर बसता बड़ी कर देता फाल ।
सकल कला तत्पर हुआ तब भाख्या नेम दयाल ॥ व० ७ ॥

मैं अनाथ हूँ, महीपति, लीनो चरण उमायो हो ॥ अ० ५ ॥
गनो नाथ किम ना हुओ राना मन गुमकायो हो ।
नाथ थास्यू शिर तुम तणे, भोगो सुख जिलगायो हो ॥ अ० ६ ॥
पोते हो आप अनाथ तू जरा मन समझायो हो ।
रखे मृषा लगे मुनिवरु, हूँ श्रेणिक रायो हो ॥ अ० ७ ॥
नाथ अनाथ का स्वरूप ने, नहीं समझ्यो तू डाहयो हो ।
कृपा करी भाषण करो, ऋषि नाम कहायो हो ॥ अ० ८ ॥
कौशाम्बी वनसंचये, तात वसे धन धायो हो ।
नेह नो सुत हु छू मही, चक्षु नी पीड सतायो हो ॥ अ० ९ ॥
वैद्य चिकित्सा कारणे, आया अति ही उछायो हो ।
पडो[1] गणोरर घर भारके, निज निज गेह पयायो हो
॥ अ० १० ॥

मात तात भगिनी भ्रातरू, त्रिया बहु दु:ख अघायो हो ।
सहु धन देवण वाछियो, पिण मो दु:ख न बटायो हो ॥ अ० ११ ॥
मजम ल्यू वेदन मिट्या, इम मन ने दृढायो हो ।
शांति थई निद्रा आगइ दुख दूर पुलायो हो ॥ अ० १२ ॥
प्रात समय सब कुटुम्ब ने ये, हार्द[2] सुणायो हो ।
अनुमति ले दीक्षा लई, पायो सुख सवायो हो ॥ अ० १३ ॥
श्रेणिक समझ खमाय ने, जावत ऋषि शिर नायोहो ।
शिवपुर पहुँता महामुनि, गुण "सुजाण" वदायो हो ॥ अ० १४ ॥

१–परिचर्या उपचार २–अभिप्राय

वन पालक ने दई वधाई, प्रभु पद वदन चाल।
गजसुखमाल हरि सग मग विच, सोमल पुत्रि का भाल
॥ व० ८॥

भ्रात अर्थ जाची गृह भेजी, लख अतिशय करुणाल।
अभिगम साच वन्दना कर वैठ्या, देसना सुण गया मुराल
॥ व० ९॥

आय मात नम अनुमति मागे, मा पड़ी खाय उछाल।
गिरधर कहे लहु राज करो थे, वहे आसू जिम ख्याल
॥ वसु० १०॥

राजलही ने हुकुम दियो धुर, शीविका रचो कृदाल।
घणे डिम्भ आय दीक्षा लीनी, छोड्या मोह जजाल॥ वसु० ११॥
जिन आज्ञा श्मशान ध्यान धर ऊभा क्षमा कर ढाल।
सोमल खीरा शिर ठविया मुढ वाध माटी की पाल॥ वसु० १२॥
माधव प्रात भ्रात नहीं पेखे, प्रभु ते पूछे हाल।
साभ्क जोग गया मुक्ति जिनन्द कहे, लाग्यो वचन कुठाल
॥ वसु० १३॥

कृष्ण आत लख सोमल मरियो, हस्ते घिसायो चण्डाल।
कहत "सुजाण" मुनि जस फैल्यो, स्वर्ग मृत्यु-पाताल
॥ वसु १४॥

सागरकवर की कथा

(दोहा) वारबड पल ध्यान गुरु सिरसा नमा मामन्द ।
सागर आगर गुण निमल माखयो मेस विवान्द ॥ १ ॥

चाल—"कहलाओ" ।

कुमर सागर तणों चरित्र भवि सांभलो
कुमति हर सुमति कू सिगर (चित्त) ल्यायो ।
आरमता रम रम्यो ज्ञान सत परम्यो
वरयाम्यो तास गुण मन सुमायो ॥ कुमर टेर ॥

धनसेस भूपने पुत्री एक अपनी रूप अनूप रंभा दिखायो ।
कमलमेला कही आवन वय चाही कम सेया सुत नमसेण ने
दिवायो ॥ कु० १ ॥

नमसेस कुवर पै नारद आविया आदर ना करत ऋषिजी रिसायो ।
कमलमेला वसी रूप आलख पट, लेयकर सागर पास आयो ॥ कु० २ ॥
सागर कहियो ऋषिजी संतुष्टियो आसचर्य वात कुमर पुछायो ।
चित्र पट आपियो रूप गुण आखियो
कुमर ने मोह के फंद फसायो ॥ कु० ३ ॥

धन सेठ नृप विया नमसेयो विस वाम्स हसी मीपा लगायो ।
पौढ धारी कठे नार परणी कठे
मोह इम सरप कुमरि पे बायो ॥ कु० ४ ॥

नारद आयके कुमरी आदर दियो सागर वर कन्या तू पुत्री पायो
नभ मा सारखो किवो मैं पारखो सुण अपर स्वगाकर दिल रचायो
॥ कु० ५ ॥

मीस इम सोच के कुमर पे आ कहै, तुम भरांपि भोव न आयो ।
कमलमेला वसी सव आयो हसी, सागर कहै कमल तू सुखीयायो
॥ कु० ६ ॥

कमलमेला नहीं कमल मेलक सही कीजिये आपको सुख ल्यायो ।

छता छोड अछता यछो, छोडो पिया हठ री ॥ तुम० ६ ॥
वार अनन्ती भोग भोगव्या, गरज न एक सरी ।
तन धन जीतव जोवन चचल, रूप रंग सचरी ॥ तुम० ७ ॥
इसड़ा विरक्त भाव भया छा तो, क्यो पर जाथी छरी ।
कपट क्रिया कर धर्म करण की, सीख दई किणरी ॥ तुम० ८ ॥
पहलो कारज खोल स्वर जद, कपट कह्यो किसरी ।
थे पिण मत डरमो जग सागर, भव दु ख भ्रमण डरी ॥ तुम० ६ ॥
हाव भाव विभ्रम कर हावे, नैन बाण तकरी ।
ज्ञान खड्ग सु अधविच छेदे, धन्न दशा उनरी ॥ तुम० १० ॥
आठु ही वाला झाक झमाला, राग रग उचरी ।
छिम छिम पायल नाचे, रिम झिम झण णर पग उठे री
॥ तुम० ११ ॥

कनका चल सम जम्बू मन थिर, उपमा सागर री ।
उत्तर प्रत्युतर विविध भाति सु, समझाई सगरी ॥ तुम० १२ ॥
मात तात नारी सासु ससुर सहु प्रभावादि पचसैरी ।
सुधर्मा स्वामी पे सजम लीनो, जय जयकार करी ॥ तुम० १३ ॥
जम्बुजी सरिसा परम वैरागी, विरला होवे री ।
चरम केवली सूत्र चलाया, "सुजाण" नमे पदरी ॥ तुम० १४ ॥
उगणी सै चोपन बड़लू में फागण कृष्ण पत्त री ।
पूज्य विनयचन्दजी परसादे, आशा सफल फरी ॥ तुम० १५ ॥

सुरग पुरवन दई कुमरि केली लई, नारद वण जोसियो व्याह करायो
॥ कु० ७ ॥

धन सेण नृप सुनी भाग आयो कुणी, धाई लेजाय तब सो छुडायो
फोज दल साजियो सब से लाजियो भाज कर राय हरि शीश नायो
॥ कु० ८ ॥

स्वामि सुणो मो पिया जाय कोउ लिया, कीजिये वार दिल होय चायो
कृष्ण कहे आवियो सोच सब जावियो, राय सग आय रण जुद्ध
ठायो ॥ कु० ६ ॥

मड़ा भड़ माचता सूर कई भाजता, हरि बाण ले कहे जाऊ जितायो।
तात सब जाण के, आय पाये पड्यो, कान्ह तोफान दारक जणायो
॥ कु० १० ॥

कान्ह पाछो चल्यो नभसेण कुमर जल्यो, सबल ते निबल तो
होत कायो।

कमलमेला श्रीसागर भोगवे, चन्द चकोर ज्यू प्रीति अघायो
॥ कु० ११ ॥

दान जाचक दिया, सुजस जग में लिया, नेम प्रभु आविया
वदण आयो।

सागर उपदेश सुण व्रत द्वादश लिया, आनन्द सम जाण अघदल
घटायो ॥ कु० १२ ॥

ध्यान समसान धर पोसह प्रतिमा लई, देख कर रोष नभ मूढ
धमायो।

सोमल सम मस्तके खैर खीरा ठया, श्रावक समभाव चव
अच्युत सिधायो ॥ कु० १३ ॥

स्वर्गथित पूर्ण कर महा विदेह होसी नर, दृढ पइन्ना सम शिव
सुख वदायो।

पूज्य विनयचन्दजी, प्रसाद "सुजाण" कहे,
शील उपदेश मे कथन कहायो ॥ कु० १४ ॥